परिचय-निचय

[मैथिलीक पाँच कविक आलोचनात्मक अध्ययन]

लेखक

श्री शैलेन्द्र मोहन झा एम०ए०; पी-एच०डी०

भारती पुस्तक केन्द्र

दरभंगा

परिचय-निचय

परमस्नेहास्पद श्री रामदेव को सस्नेह ।

श्री शैलेन्द्र [illegible]

५।१।'६६.

● संस्करण : नवीन संस्करण १९६६ ई० ।

● प्रकाशक : भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा ।

● मूल्य : २-२५ पैसा ।

● मुद्रक : नव भारत प्रेस, लहेरियासराय ।

पुरोवचन

मैथिलीक सुदीर्घकालीन काव्य-साहित्य, ओकर व्यापकताक परिपुष्ट प्रमाण थीक। प्रस्तुत ग्रन्थ मे, ओहि विपुल साहित्य सँ पाँच गोट बिशिष्ट कविलोकनिक व्यक्तित्व एवं कृतित्वक विश्लेषण कैल गेल अछि। ओ सभ छथि—विद्यापति, गोविन्ददास, मनबोध, चन्दा झा एवं लालदास। विद्यापतिक काव्य सँ मैथिली मे साहित्यिक परम्परा सुदृढ़ होइत अछि जे चन्दाझा-लालदास धरि नवभाव-प्रभाव कें ग्रहण कय, आधुनिकताक प्रशस्त पथ दिश उन्मुख होइत अछि। वस्तुतः एकर अन्तराल मे मैथिली कविताक स्वर्णकाल, ओकर ह्रासक इतिहास तथा नव जागरणक उद्‌घोष, ई तीनू रूप समाहित अछि। अतः एहि परिचय-क्रम कें उपस्थित करैत एहि विषयक सतत् ध्यान राखल गेल अछि जे जिज्ञासु पाठक कें एहि सँ अपन प्राचीन साहित्यिक गति-विधिक सामान्य रूप-रेखा उपलब्ध भऽ जाइन्ह।

प्रस्तुत ग्रन्थ मे लेखकक इयह प्रयास रहल अछि जे विषय सँ सम्बद्ध अधिकाधिक सामग्रीक सचयन कय ओकर विश्लेषण ओ मूल्यांकन कैल जाय। मुदा जें लऽ कऽ युक्तिक आलोक मे नव तथ्यक अनुशीलन-परीक्षण प्रत्येक विवेकशील व्यक्तिक स्वभाव थीक, तें एहू ग्रन्थ मे ठाम-ठाम, विषयक थोड़-बहुत पूर्वाग्रह मुक्त एवं प्रमाण युक्त नव प्रतिपादन परिलक्षित हैत। एहि दृष्टियें गोविन्ददासक प्रसंग मे जे विचार व्यक्त कैल गेल अछि से वस्तुतः नवतथ्यानुशीलनक विनम्र प्रयास थीक।

'परिचय-निचय'क नाम सँ जे ग्रन्थक प्रथम प्रकाशन भेल छल से पन्द्रह वर्ष पूर्वहिक घटना थीक। एहि नव संस्करण मे ओकर स्वरूप सर्व्था बदलि गेल अछि, पृष्ठ संख्या बढ़ि गेल अछि तथा पाठ्य सामग्रियो पूर्वापेक्षा विशेष समृद्ध भेल अछि। पूर्वक संस्करणक तुलना मे एहि पूर्णतया परिवर्त्तित पोथीक लेल कोनो नवे नाम राखल जा सकैत छल मुदा सामग्रीक विस्तार रहितहुँ उद्देश्य ओ पद्धति मे जे समानता अछि ताहि कारणें नाम मे परिवर्त्तनक उपादेयता नहि प्रतीत भेल। संगहि एहि नामक प्रति जे एकटा स्वाभाविक ममता छल ताहि कारणे एकर नाम 'परिचय-निचय' सैह रहय देब नीक लागल।

एहि पुस्तकक परिवर्द्धन म विभिन्न विद्वानक अनेकानेक सामग्रीक उपयोग कैल गेल अछि। एहि मे पं० श्री रमानाथझा एवं डा० श्री जयकान्त मिश्र जीक नाम विशेष रूप सँ उल्लेखनीय अछि। हिनका लोकनिक प्रति आभार प्रदर्शन, प्रस्तुत लेखक अपन अपन परम कर्त्तव्य बुझैत अछि।

पुस्तकक प्रणयन मे प्रो० श्री रामदेव झाजी बहुत राश सामग्री जुटा कय, परामर्श दय तथा औरो अनेक तरहें साहाय्य प्रदान कय प्रस्तुत लेखक कें उपकृत कैलन्हि अछि। तहिना पं० श्री रमानाथ मिश्र 'मिहिर' सँ एकर प्रकाशन मे सक्रिय सहयोग प्राप्त भेल अछि। लेखक एहि दुनू गोटाक प्रति अपना हार्दिक शुभाशंसा व्यक्त करैत अछि। भारतीपुस्तक केन्द्रक संचालक एवं नवभारत प्रेसक व्यवस्थापक, एहि पुस्तक के यथाशीघ्र प्रकाश मे अनबाक लेल लेखकक धन्यवादक अधिकारी छथि।

— लेखक

परिचय-क्रम

पूर्ण सतक रहनहु पुस्तकक छपाइ मे अशुद्धिक निवारण नहि कैल जा सकल अछि। कतेक ठाम त ओकर भीषणता, संकोचक विषय भऽ गेल अछि। पृ० ४० पर १३ म पंक्ति मे देखब जे '१५२६ ई०' स्थान में '१६२६ ई०' छपि गेल अछि। पुनः पृष्ठ ७५रक 'फुटनोट' मे 'पृ० २७-२८'क बदला 'पृ० १७' छपि गेलैक अछि। अक्षरी अशुद्धि एवं मात्राक स्खलन त अनेक स्थल पर शब्दक रूप कें विरूप बना देलक अछि। विज्ञ पाठक लोकनि एहि सभ कें सुधारि कऽ पढ़थि तक अनुरोध।

विधाता जन्मदानेन विष्णुरूपोऽपि पालने ।
शिवश्चाहितबाधेन त्रिमूर्ति जयतात्पिता ॥
दिवंगतस्य दिव्यस्य पितुश्चरण रेणुषु ।
लघुकृत्य मिदं श्रद्धा पुष्पं साश्रु समर्पये ॥

—श्री शैलेन्द्र मोहनः

मैथिल कोकिल विद्यापति

विद्यापति कें मैथिल-कोकिल कहल जाइत छन्हि। ओ वास्तवमे कोकिल छलाह। हुनकर सुमधुर गान खाली मिथिला धरि सीमित नहि रहल। हुनकर कूक सुनि समस्त बंगाल विमुग्ध भऽ गेल। हिन्दी-साहित्य मे वसन्तक शुभागमन भऽ आयल। साहित्यक इतिहासमे एहि तरहक उदाहरण नहि भेटत जतय कोनो एकटा कवि कें तीन विभिन्न भाषा-भाषी अपना भाषाक कवि कहि सम्मानित कैने होथि। एकरहि लक्ष्य कय कोनो पाश्चात्य विद्वानक मत छन्हि जे होमरक जन्मभूमिक महत्व प्राप्त करबा लेल भनहि सातटा नगरक मध्य विवाद भेल हो, परन्तु विद्यापतिक अतिरिक्त आन कोनो दोसर कविक उदाहरण नहि भेटत, जनिका दूगोट विभिन्न भाषा-भाषी अपन भाषाक कवि कहने होथि।"[1] एहि उद्धरण मे केवल दूगोट भाषाक चर्चा कैल गेल अछि। एहि दुनू भाषा सँ तात्पर्य अछि मैथिली ओ बंगला सँ। प्रारम्भ मे ई एक गोट विवादक विषय छल जे ओ मैथिल छलाह अथवा बंगाली। विद्यापतिक

---

1. "Seven cities might have contended for the honour of the birth place of Homar, but with the exception of the poet Vidyapati I can recall no other name of a poet claimed as their own by two peoples speaking two different languages."

—पं० हरिनन्दन ठाकुर द्वारा हुनक ग्रन्थ महाकवि विद्यापति मे पृ० ५५ पर उद्धृत।

कविता सँ विमुग्ध बंगाली समाज हुनका बंगीय कवि बुझत छल। ऐतिहासिक अनुसन्धानक फलस्वरूप एहि प्रकारक विवादक आब स्थान नहि रहल अछि। एहि भ्रान्तिक निराकरणक श्रेय सर्वप्रथम राजकृष्ण मुखोपाध्याय कें छन्हि जे विद्यापति कें मैथिल सिद्ध कैलन्हि।[१] पश्चात् डा० ग्रीयर्सन एकर समर्थन कैलन्हि[२] एवं मैथिल ब्राह्मणक पंजी प्रबन्धक अनुशीलन कय अपन 'मैथिली क्रिष्टोमेथी' नामक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ मे विद्यापतिक प्राक्तन सात पुरुषक तथा अधस्तन बारह पुरुषक नाम प्रकाशित कलन्हि। एहि क्रमे विद्यापतिक वास्तबिक परिचय प्रकाश मे आयल।

ताहि दिन बंगाली छात्रलोकनि अध्ययनक लेल मिथिला आयल करैत छलाह जखन ओ अध्ययन समाप्त कय अपन देशक घुरैत छलाह त हुनका मस्तिष्क मे खाली शास्त्रीय ज्ञान नहि रहैत छलन्हि वरन् हुनका ठोर पर विद्यापतिक तथा हुनक पूर्ववर्त्ती ओ परवर्त्ती कविलोकनिक गीतो रहैत छलन्हि। डा० सुनीति कुमार चटर्जी सदृश विद्वान एहि तथ्यक समर्थन कने छथि।[3] चैतन्यदेव

---

१. ए हिस्ट्री आफ मैथिल लिटरेचर, जिल्द—१, ले० डा० जयकान्त मिश्र, पृ० १८२।

२. उपरिवत्।

3. "Bengali Scholars would come back home after finishing their studies in Mithila not with Sanskrit learning in their heads but also with Maithili songs on their lips songs by Vidyapati and also probably by his predecessors and successors." देखू, वर्ण रत्नाकर, Introduction, Page—XXI

सदश भक्त जखन विद्यापतिक पद कें गबैत छलाह त आनन्द सं मूर्च्छित भ जाइत छलाह। चैतन्यक पश्चात् हुनक शिष्य लोकनि ओहि गीत कें अपनौलन्हि तथा ओकर सम्मान एवं प्रचार कैलन्हि। एहि तरहें बंगाल मे विद्यापतिक गीत कें गेबाक प्रथा बढ़ितहि गेल। विद्यापतिक मन्त्रमुग्धकारी कविता बंगाली लोकनिक हृदयमे तते क ममत्व उत्पन्नक देलकन्हि जे ओ लोकन्हि एहि विषय कें बिसरि गेला जे विद्यापतिक मैथिल छलाह, बंगाली नहि।

एतबहि नहि, बंगाल मे विद्यापतिक पदक अनुकरण पर एकटा काव्य-परम्परे चलि पड़ल। एहि तरहें मैथिली ओ बंगलाक सम्मिश्रण सँ एकटा नूतनक काव्य भाषाक उद्भव भेल तथा एकटा नवीन वैष्णव साहित्यक अभ्युदय भेल जकर नाम ब्रजबुलि (ब्रजबोली) पड़ल। एहि ब्रजबोली मे बड़ विशाल साहित्यक सर्जन भेल। डेढ़ सै सँ अधिक कवि एहि मे पाँच हजार सँ अधिक पदक रचना कलन्हि। विद्यापतिक अनुकरणक प्रभाव एतेक दूर धरि बढ़ल जे सभ परवर्त्ती बंगीय कवि हुनका सं अनुप्राणित भेलाह। श्री त्रैलोक्यनाथ भट्टाचार्यक कथन छन्हि — "विद्यापति एवं चण्डीदासक अतुलनीय प्रतिभा सं समस्त बंग-साहित्य उज्जवल ओ सजीव भेल अछि। वैष्णव गोविन्ददास एवं ज्ञानदास सं हिन्दू बंकिमचन्द्र तथा ब्राह्म रवीन्द्रनाथ धरि सभ केओ हुनका लोकनिक आभा सँ आलोकित छथि।"[१] कवीन्द्र रवीन्द्र त विद्यापति सँ अतिशय प्रभावित छलाह। एहि प्रसंग ओ

१. श्री रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा संकलित 'विद्यापति की पदावली' मे पृष्ठ—३ पर उद्धृत।

स्वयं एक स्थल पर लिखने छथि जे "विद्यापतिक पद ओ गीत हमर आरम्भिक कल्पना शक्ति कें मुग्ध क देलक ओ हमर ई सौभाग्य छल जे ओहि पद-समूह मे सँ एकटा के संगीतक लय मे ठोक कैल।"[1] और कवीन्द्र भानुसिंहक नाम सँ जाहि 'भानुसिंहेर पदावली' क रचना कलन्हि ताहि पर विद्यापतिक अमिट प्रभाव अछि।

परन्तु विद्यापतिक सुमधुर गान मिथिला ओ बंगाले टा मे गूंजिक नहि रहि गेल वरन् ओ हिन्दी प्रदेश सँ सेहो प्रतिध्वनित भऽ उठल। हुनकर गीत ततेक लोकप्रिय भेल जे विद्यापतिक गणना हिन्दीक कवि-लोकनिक मध्य होमय लागल। एहि तरहें विद्यापति, आइ एक संग मैथिली, बंगला तथा हिन्दीक प्रतिनिधि कवि मानल जाइत छथि। अतः उपर्युक्त उक्ति मे परिष्कारक प्रयोजन अछि। विद्यापति आइ दू भाषा-भाषी द्वारा नहि वरन् तीन भाषा-भाषी द्वारा अपन कविक रूप मे सम्मानित एकमात्र कवि छथि; ओना त कवि सार्वभौम होइछ, ओकर वाणी सभक लेल होइछ।

विद्यापति खाली मैथिलीक आदि कवि नहि वरन् उत्तर भारत वर्षंक समस्त आधुनिक भाषाक प्रथम कवि छथि। बंगला साहित्य हिनकहि सं अनुप्राणित भेल। हिन्दी मे त हिनका सँ पूर्व एकमात्र चन्दबरदाइक नाम अछि जनिक रचना हिन्दीक पूर्व रूप भनहि

---

1. "His poems and songs were one of the earliest delights that stirred my youthful imagination and I even had the privilege of setting one of them to music."

—देखू, 'विद्यापति काव्यालोक' मे लेखकक नाम कविक पत्र।

हो, हिन्दी नहि थीक। एहि प्रकारें विद्यापति द्वारा मैथिली टा नहि, समस्त उत्तर भारतवर्षक साहित्य समुज्जवल भेल।

विद्यापतिक जन्म दरभंगा जिलाक अन्तर्गत बिशपी गाम मे भेल छल। ई गाम पूर्व मे गढ़ विसपोक नामे ख्यात छल। विद्यापति अति उच्च कुल मे जन्म लेलन्हि। ई वंश सर्वदा सँ विद्या ओ वैभवक अधिकारी रहल। एहि महान् वंश मे एक सँ एक विशिष्ट विद्वान, सुलेखक, राजनीतिज्ञ एवं राज्याधिकारी जन्म लेलन्हि। अपन विद्वता एवं नीति कुशलताक बलें, कर्णाटवंशीय शासक लोकनिक समय सँ ओइनवार नरेश लोकनि पर्यन्त एहि वंशक सम्पर्क राज-दरबार सँ रहल। मिथिलाक पंजीक आधार पर ज्ञात होइत अछि जे गढ़विशपी मे कर्मादित्य त्रिपाठी नामक ब्राह्मण रहैत छलाह। ओ विद्यापतिक वंशक आदि पुरुष विष्णु ठाकुरक पौत्र छलथिन्ह। कर्मादित्यक पश्चात् एहि वंश मे जतेक व्यक्ति जन्म लेलन्हि, सभ केओ मिथिलाक तत्कालीन शासन-व्यवस्था मे उच्च राजकीय पद पर आसीन रहलाह। केओ राजमन्त्री छलाह त केओ राजपण्डित; केओ महामहत्तकक उपाधि सँ अलंकृत छलाह त केओ सान्धिविग्रहिक उपाधि सँ विभूषित॰। एहि क्रम मे देवादित्य, वीरेश्वर, धीरेश्वर, चण्डेश्वर आदि महापुरुषक नामोल्लेख बांछनीय अछि। उच्चपदस्थ रहलाक संगहि ई लोकनि अपन परम्परागत विद्यादानक एवं ग्रन्थ रचनाक लेल यशस्वी छलाह। विद्यापतिक पिता गणपति ठाकुर राजमंत्री छलाह तथा अपन प्रसिद्ध पुस्तक 'गंगा-भक्ति तरंगिणी' अपन मृत संरक्षक महाराज गणेश्वर

सिहक स्मृति मे अर्पित कैने छलाह। हिनक पितामह जयदत्त संस्कृतक बड विशिष्ट विद्वान एवं उच्चकोटिक सन्त छलाह तथा 'योगेश्वर' नामें ख्यात छलाह। स्वयं विद्यापति जन्महि सँ मिथिलाक ओइनवार वंशीय राजा लोकनिक आश्रित रहला तथा महाराज शिवसिंहक प्रधान पार्षद एवं विश्वस्त आमात्य छलाह। अपन राज्याभिषेकक अवसर पर महाराज शिवसिंह कवि कें हुनक जन्मभूमि 'बिशपी' दान मे देलथिन्ह तथा 'अभिनव जयदेव'क उपाधि दय अलंकृत कैलथिन्ह। महाराज शिवसिंहक उपरान्त ओ क्रमशः महारानी विश्वास देवी, महाराज नरसिंह, महाराज धीरसिंह आदिक दरबार मे प्रधान राजपण्डित रहलाह।

विद्यापतिक जन्म तिथिक विषय मे कोनो निश्चित ज्ञानक अभाव अछि। तत्कालीन इतिहास पर प्रकाश दत जतेक सामग्री उपलब्ध अछि ताहि मे लक्ष्मण संवत्‌क उपयोग भेल अछि। परन्तु एहि लक्ष्मण संवत्‌क आरम्भ कहिया सँ भेल, ताहि विषय मे विद्वान लोकनि एकमत नहि छथि। किछु विद्वान एकर प्रारम्भ ११०९ ई० सँ त किछु गोटे १११९ ई० सँ मानत छथि। परन्तु स्वयं महाकवि अपन एकटा पद मे एहि समस्याक निराकरणक गेल छथि। देवसिंहक मृत्यु तथा शिवसिंहक राज्यारोहणक सम्बन्ध मे विद्यापतिक जे वर्णन अछि[1] ताहि सँ ज्ञात होइछ जे ल० सं० २९३ मे शाके १३२४ छल। ई स्पष्ट अछि जे शाके एवं ई० सन् मे ७८ वर्षक

१. "अनल (३) रन्ध्र (९) कर (२) लखरवण नरवए, सक समुद्द (४) कर (२) अगिनि (३) ससी (१)" [२९३ ल० स० = १३२४ शक सम्वत्]

अन्तर अछि। एहि प्रकारें १४०२ ई० मे देवसिंहक मृत्यु भेलन्हि तथा शिवसिंह राज्यभार ग्रहण कैलन्हि। मिथिला मे ई प्रचलित जनश्रुति अछि जे राज्य सिंहासन पर बैसबाक समय महाराज शिवसिंहक आयु पचास वर्षक छलन्हि तथा विद्यापति हुनका सँ दू वर्षक जेठ छलाह। ऐतिहासिक प्रमाणक अभाव मे जनश्रुतिक विशेष महत्व होइछ तथा ओ ऐतिहासिक तथ्यक अनुशीलन मे सहायक होइछ। अतः एहि आधार पर कविक जन्म १३५० ई० मे निर्धारित होइछ।

हुनक मृत्योक प्रसंग ईयह समस्या अछि। एहू विषय मे कोनो सुनश्चित सूचना नहि अछि। विद्यापतिक एक गोट पदक पांक्ति अछि—

सपन देखल हम शिवसिंह भूप।
बतिश बरस पर सामर रूप।

जनश्रुति अछि जे महाराज शिवसिंह मात्र साढ़े तीन वर्षक लेल राज्य कय जौनपुरक सेनापति गयास बेगक संग युद्ध करैत अन्तर्हित भेलाह। एहि तरहें विद्यापतिक ई स्वप्न वृत्तान्त ल० सं० ३२८ अर्थात् १४५० ई०क घटना थीक। एकटा दोसर स्रोतें १४६० ई० धरि विद्यापतिक जीवित रहबाक सूचना भेटैत अछि। नेपालक दरबार पुस्तकालय मे 'ब्राह्मण सर्वस्व[1]' नामक एकटा ग्रन्थक प्राचीन प्रतिलिपि अछि। एकर प्रतिलिपि कर्त्ता विद्यापतिक अध्यापनाधीन छात्र रुद्रधर छलाह जे ल० सं० ३४१

१. देखू, विद्यापति गोष्ठी [हिन्दी संस्करण], पृ० १७

अर्थात् १४६० ई० मे एकरा उतारलन्हि। एहि मे विद्यापतिक नामक संग 'श्री' शब्दक प्रयोग अछि जे ताहि समय धरि विद्यापतिक जीवित रहबाक सूचक थीक। अतः एहि सँ एतेक त अवश्य सूचित होइत अछि जे विद्यापति दीर्घजीवी छलाह। हुनक मृत्युक विषय मे मिथिला मे ई पद प्रचलित अछि—

विद्यापतिक आयु अवसान।
कार्तिक धवल त्रयोदसि जान।

विद्यापतिक प्रतिभा बहुमुखी छल। सहृदय कवि रहलाक संगहि ओ अधिकारी शास्त्रकार छलाह। हुनक अध्ययनक क्षेत्र विशाल छल। विविध विषय पर रचना कय ओ एकर परिचय देलन्हि। संस्कृत, अवहट्ट ओ मैथिली, एहि तीनू भाषा पर हुनक समान अधिकार छलन्हि। संस्कृत मे हुनक बहुत राश ग्रन्थ छन्हि। विषयक दृष्टियें राजनीति, धर्मशास्त्र, दायभाग, यात्रा वृत्तान्त आदि कोनो वस्तु हुनका सँ नहि छूटल। एहि ग्रन्थ सभक अध्ययन-मनन सँ हुनक गम्भीर पाण्डित्य पर प्रकाश पड़ त अछि। हुनक संस्कृत ग्रन्थ समूह मे १. भू परिक्रमा २. पुरुष-परीक्षा ३. लिखनावली ४. शैवसर्वस्वसार ५. गंगा वाक्यावली ६. विभागसार ७. दान वाक्यावली ८. गया पत्तलक ९. दुर्गाभक्ति तरंगिणी १०. वर्ष कृन्यक नाम लेल जाइछ। अपन गोरक्ष विजय नाटिकाक रचना ओ संस्कृत-प्राकृत मे कैलन्हि जाहि मे मैथिली मे रचित गीतक प्रयोग अछि।

संस्कृतक अतिरिक्त विद्यापतिक दू गोट कृति अवहट्ट मे अछि—कीर्त्तिलता एवं कीर्त्तिपताका। कीर्त्तिलता मे हिनक भाषा विषयक गर्वोक्तिक दर्शन होइछ—

बालचन्द विज्जावइ भाषा
दुहु नहि लग्गई दुज्जन हासा।
ओ परमेसर हर सिर सोहइ
ई णिच्चइ नाअर मन मोहइ॥

एहि अवहट्ट रचनाक भाषाकेँ 'देसिल बयना' कहि कवि जन-भाषाक महत्त्व ओ माधुर्य्य दिश संकेत कैने छथि—

सक्कय वाणी बुहअन भावइ
पाउँअ रस को मम्म न पावइ।
देसिल बअना सब जन मिट्ठा
तंं तइसन जम्पओ अवहट्टा।

परन्तु ई अवहट्ट विद्यापतिक जीवनकाल मे नामहि लेल देसिल बयना छल और जनभाषाक वास्तविक स्वरूप सर्वथा बदलि गेल छल। अतः एहि अवहट्ट रचना केँ लोकप्रिय नहि होइत देखि कवि वास्तविक 'देसिल बयना' मे काव्य रचना कैलन्हि। हिनक पदावली साहित्य तकरहि परिणाम थीक। एहि पदावली साहित्यक भाषा लोकवाणी थीक। विद्यापति एहि लोकवाणी सँ काव्य पुरुष केँ अभिमन्त्रित कय ओहि मे जीवन एवं रसक संचार कैलन्हि। एहि द्वारा 'देसिल बयना' निस्सन्देह 'सब जन मिट्ठा'

प्रमाणित भेल। वस्तुतः विद्यापतिक ख्यातिक स्रोत इयह पदावली साहित्य अछि। एकरहि माध्यमे ओ हमरा लेल अजर-अमर छथि। एहि मे विद्यापतिक प्रारम्भिक जीवन सँ अन्तकाल धरिक, विभिन्न अवसर पर रचित पद सभ अछि। ई पद सभ अति ललित, सरस एवं हृदय पर तत्काल अधिकार क लैत अछि।

विद्यापतिक पदावलीक प्रधान रूप गीतात्मक अछि। गान मे एकर वास्तविक स्वरूप प्रकट होइत अछि। जाहिकाल मे विद्यापतिक गीत गाओल जाइत अछि, सरसताक स्रोत प्रवाहित होमय लगैत अछि। 'शब्द लालित्यक दृष्टि सँ संस्कृत साहित्य मे कालिदास, भवभूति, माघ एवं श्रीहर्ष केँ रहैत जयदेवक जे स्थान अछि, सूर एवं तुलसी केँ रहितहुँ भाषा साहित्य मे विद्यापतिक ओहने स्थान अछि' विद्यापतिक पद-साहित्य केँ सामान्यतः तीन वर्ग मे बाँटि सकैत छी—

१ शृङ्गार विषयक—जाहि मे महाकवि जयदेवक आदर्श पर तालल याश्रित रसपक्षक गीत अछि जकरा बंगाली एवं विदेशी विद्वान भजन कहैत छथि।

२ भक्ति पक्षक—जाहि मे शिव, शक्ति एवं आन देवी-देवता सभक स्तुति गान कयल गेल अछि।

३ व्यवहार विषयक—जाहि मे उपनयन, विवाह आदि मांगलिक अवसर गाओल जेबा योग्य गीत सभ अछि।

विद्यापतिक पद सभ मे राधा-कृष्णक लीला विषयक रस पक्षक गीतक संख्या विशेष अछि। विद्यापतिक कवित्व शक्तिक पराकाष्ठा

निस्सन्देह हुनक एही पद सभ मे भेल अछि। "अपन एहि आदिरसक कविता रचना मे, एकर परिसीमित क्षेत्र मे, हुनक भावुकता, कल्पनाक प्रौढ़ता एवं भाषा सौन्दर्य, विश्व साहित्यक कोनो महाकवि सँ न्यून नहि अछि।" विद्यापतिक काव्य भावक वैभव अछि। एकर जन्म आयास सँ नहि भेल अछि। ई त कविक नैसर्गिक भावोद्रेकक परिचायक थीक। एही सँ डा० श्री सुनीति कुमार चटर्जीक कथन छन्हि जे "विद्यापतिक राधा-कृष्णक प्रेमगीत, भारतीय गीति काव्यक सुन्दरतम पुष्प मे अछि।"[1]

विद्यापति सौन्दर्योपासक छलाह। हिनक अधिकांश कविताक मूलाधार सौन्दर्य औ प्रेम रहलन्हि। सौन्दर्य ओ प्रेम हिनका हेतु शाश्वत आनन्दक उपादान छलन्हि। हिनक काव्य मे नारी सौन्दर्यक प्रधानता अछि। राधा हिनक समस्त मानस सौन्दर्यक घन विग्रह छलथिन्ह। रूप यौवनक एहि साकार प्रतिरूपक चित्रांकन मे कवि एक सँ एक हृदयग्राही चित्रक निर्माण कैलन्हि।

सौन्दर्य यौवन सापेक्ष होइछ। यौवन अपन उद्गमकालहि सँ आकर्षणक, केन्द्र बनि जाइत अछि। वयः सन्धिक देहरि पर ठाढ़ि राधाक कुतूहल चकित दृष्टि कवि कें अनायास आकृष्ट कऽ

1. "Vidyapati's Songs on the love of Radha and Krishna are among the fairest flowers in the Indian lyric poetry."

लैत अछि। ओ ओहि अपरुव बालिका कें देखैत छथि जे यौवनक आकस्मिक आगमन पर स्वयं विस्मित-विमुग्ध अछि—

सैसव यौवन दुहु मिलि गेल।
स्रवनक पथ दुहु लोचन लेल।
निरजन उरज हेरइ कत बेरि।
हसइ से अपन पयोधर हेरि।

कालक्रमे शैशवक अवसान भऽ जाइछ एवं युवावस्थाक समागम सँ शरीर अद्भुत कान्ति धारण कय झलकि उठैत अछि। मुकुलित यौवनाक ई असीम सौन्दर्य कवि कल्पनाक आलोक मे औरहु उद्भासित भ उठैत अछि—

चाँद सार लय मुख घटना करु
लोचन चकित चकोरे।
अमिय धोए आँचरे धनि पोछल
दह दिश भेल उजोरे॥

राधाक सुन्दरता के कवि 'अपरुब' कहलन्हि अछि। ई अपरुप सौन्दर्य तीनू लोक कें विजित क लेने अछि—

सुधामुखि के बिहि निरमल बाला,
'अपरुप' रूप मनोभव मंगल
त्रिभुवन विजयी माला।

वस्तुतः एहि 'अपरुप' रूपक सभ सँ पैघ आकर्षण ओकर सहजता अछि। अकृत्रिम सौन्दर्य मे जे आकर्षण होइछ से

अतुलनीय अछि। सहज प्रसन मुख' क दर्शन सँ जे हृदय कें सुख प्राप्त होइछ ओ अनुभूतिक विषय थीक। राधाक एही सौन्दर्य पर कृष्णक दृष्टि पड़लौन्हि आ' ओ विजड़ित चित्त सँ देखैत रहि गेलाह—

सहजहि आनन सुन्दर रे
भौंह सुरेखलि आंखि
पंकज मधुकर मधु पिवि रे
उड़य पसारल पाँखि
ततहि धाओल दुहु लोचन रे
जतहि गेलि वर नारि
आशा लुबुधल न तेजय रे
कृपणक पाछु भिखारि।

विद्यापतिक इयह सौन्दर्य-भावना हुनक शृंगार-साधनाक प्रेरणा स्रोत रहल। राधा-कृष्णक मिलन-विरहक सरस चित्रण हुनक काव्यक महान विशेषता अछि। एहि प्रसंग कवि एक सँ एक मनोहारी पदक रचना कैलन्हि। क्षण भरिक लेल राधाक रूप-दर्शन, कृष्णक हृदय मे चिर-मिलनक आतुरता जगा देलक। वस्तुतः मेघमालाक सान्द्र नीलिमा मे तड़ितलता निमिष भरिक लेल छिटकि क अन्धकारक सघनता कें औरहु बढ़ा दैत अछि—

सजनी भल कय पेखल न भेल
मेघमाल सँ तड़ितलता जनि
हिरदय सेल दइ गेलि।

कृष्णक एहि आतुरता मे सम्भवतः विद्यापतिक तीव्र सौन्दर्यानुभूति मुखरित अछि। तत्काल राधाक वस्त्र बसातक स्पर्श सँ ससरि जाइछ और हुनक असीम सौन्दर्यक दर्शनक अवसर कृष्ण कें सहजहि भेटि जाइत छन्हि। श्याम वस्त्रक मध्य शरीरक कान्ति लागल जेना नव श्याम मेघपुंजक बीच संचरित विद्युत रेखा हो। बाट धेने चल जाइत राधाक ई रूप लगैत छल जेना सोनक लता निरवलम्ब भावें पृथ्वी पर विचरण क रहल हो—

ससन परस खसु अम्बर रे, देखल धनि देह।
नव जलधर तर संचर रे, जनि बिजुरी रेह॥
आज देखल धनि जाइत रे, मोहि उपजल रंग।
कनकलता जनि संचर रे, महि निर अवलम्ब॥

से राधा मे रूपक पराकाष्ठा अछि। एहि अतुलित रूप राशिक दर्शन सँ श्रीकृष्णक चित्त स्वतः प्रेम रंग मे निमज्जित भऽ जाइछ। तहिना राधा, कृष्णक अनुपम रूप-छवि कें देखि कम प्रभावित नहि होइत छथि। जखन ओ अपन सखी सँ कृष्णक सुन्दरताक बखान करय लगलीह त हुनका स्वयं विश्वास नहि छलन्हि जे एहनो रूप सम्भव छैक। सभ किछु जेना स्वप्नवत् बुझि पड़ि रहल छलन्हि—

ए सखि देखल एक अपरुप।
सुनइत मानब सपन सरूप॥
कमल युगल पर चाँदक माला।
तापर उपजल तरुन तमाला॥

तापर बेढ़ल बिजुरि लता ।
कालिन्दी तट धीरे चलि जाता ॥

और फेर को छल। कदम्ब तरु सँ आच्छादित यमुना तट पर, रूप-राशिक दर्शनक लेल राधाक चित्त विकल भऽ उठल। सौन्दर्यासक्त तरुण हृदय, एक दोसराक प्रेमवारि सँ स्नात भ गेल।

राधा-कृष्णक सम्भोग शृंगारक प्रसंग विद्यापतिक एक सँ एक उत्कृष्ट पद अछि। मिलन आयोजनक क्रम मे हुनक शारीरिक सौन्दर्यक चित्रणक कवि कें अनेक अवसर प्राप्त भेलन्हि। एहन-एहन अवसर पर कविक दृष्टि बाह्य सौन्दर्य धरि सीमित रहलन्हि। विविध उपादानक संग्रह कय, अंग-प्रत्यंगक सौन्दर्यक बखान करैत ओ अघेलाह नहि। ई सर्वथा संगत अछि। शृंगारक संयोग पक्षक वर्णन मे कवि कें बाह्य सौन्दर्यक वर्णनक अवसर विशेष प्राप्त होइछ, कारण ई जे संयोग मे सान्निध्य होइछ तथा निकटता मे रूपक कायिक वर्णन कें प्रमुखता प्राप्त होइछ। विद्यापतिक सम्भोग वर्णन मे अनेक स्थल अछि जतय नायिकाक रूपक अवयवी वर्णन प्रमुख अछि। परन्तु संस्कृत रसशास्त्रक आधार पर वर्णित विद्यापतिक वयःसन्धिक चंचला किशोरी राधा, पूर्वराग, अनुराग, अभिसार, मिलन एवं मानक वर्णच्छटा कें पार करत विरह एवं भाव सम्मिलन मे आबि अतिशय गम्भीर भऽ जाइत छथि। लगैत अछि जेना प्रेमाश्रु जल मे दैहिक कामनाक समस्त कलुष धोखरि गेल हो। तें राधाक विरह चित्र मे हुनक अन्तर्दीप्ति

अछि। एतय सौन्दय चित्रण मे स्थूल रेखाकृतिक क्रमशः अवसान पबैत छी तथा सूक्ष्म अभिव्यक्ति मे हुनक शील अनुभूतिमय भऽ उठल अछि।

राधाक प्रियतम कृष्ण परदेश चल गेलथिन्हि। समस्त गोकुल जाहि चन्द्रमा दिश चकोर सदृश एकटक तकैत छल, ओहि चन्द्रमाक चोरी भऽ गेल। और राधा त स्वप्न मे देखलन्हि जे हुनक हाथक स्पर्शमणि छूटि गेल; दू प्रेमीक जोड़ी खण्डित भऽ गेल; तथा राधाक निरीह प्राण द्वन्द्व मे पड़ि गेल—

सुतल छलहु अपने गृह रे, निन्दइ गेलहु सपनाई।
कर सँ छूटल परसमनि रे, कोन गेल अपनाई॥
गोकुल चान चकोरल रे, चोरी गेल चन्दा।
बिछुड़ि चलल दुहू जोड़ी रे, जीव दइ गेल धन्दा॥

विरहक एहि असह्य दुःख कें भोगितो राधा कें प्रियक प्रति कोनो दुर्भावना नहि छन्हि। वियोग-वेदना कें अपन दुर्भाग्य मानि ओ धैर्य धारण करैत छथि—

माधव हमर रटल दुर देश।
केओ नहि कह सखि कुशल सनेस॥
युग-युग जीबथु बसथु लख कोस।
हमर अभाग हुनक नहि दोष॥

और पति वियोग सँ आगत विपत्ति कें ओ मालतीक माला सदृश ग्रीवा मे धारण करैत छथि। प्रियजन्य विपत्तियो हुनक हृदयहार बनि जाइत छन्हि—

हरि गेल मधुपुर हम कुल बाला ।
बिपते पड़ल जस मातलीक माला ॥
नयनक निन्द गेल बयनक हास ।
सुख गेल पिय संग दुख मोर पास ॥

परन्तु विपत्ति त प्रेमक तप्त स्वर्ण थीक। वेदनाक आगि मे जरिक प्रेमक समस्त मलिनता नष्ट भऽ जाइछ और ओकर शुद्ध निर्मल रूप शेष रहि जाइत अछि। फलतः विरहिणी राधा जतेक व्यथा, जतेक यातना सहैत छथि, प्रेमक स्वर्ण तपि कय ओतेक दमकि उठैत छन्हि। प्रेमक मात्रा दिनानुदिन इन्दुकला सदृश बढ़ैत जाइत अछि। ताही सँ प्रेमक परिभाषा दत कविक उक्ति अछि—

सेहो पिरीत अनुराग बखानिअ
तिल - तिल नूतन होय ॥
जनम अवधि हम रूप निहारल
नयन न तिरपित भेल ।
लाख - लाख युग हिय मे राखल
तइयो हिय जुड़ल न गेल ॥

तथापि ई नहि कहब जे राधाक मन मे खाली आंगिक सुखक स्पृहा छन्हि जे हुनका गहन विषाद सागर मे निमग्न कने अछि। एतेक अवश्य जे राधाक दृष्टि मे 'पहु संग कामिनि परम सुहागिनि चन्द्र निकट जइसे तारा' लगैत अछि। तैं जखन-तखन वियोगिनी नारीक भग्न हृदय हाहाकार करय लगैत अछि। दुखाभिभूत राधाक ई करुण क्रन्दन अत्यन्त मर्मविदारक ओ करुणोत्पादक अछि—

सखि हे, हमर दुखक नहि ओर ।
ई भर बादर, माह भादर शून्य मन्दिर मोर ॥

परन्तु भादबोक मास बीति जाइत अछि। ऋतुक क्रम चलैत रहैत अछि। प्रकृति मे क्रमशः परिवर्त्तन होइत रहैत अछि। प्रपर्ण तरुराशि, किसलय सँ सज्जित भ उठैत अछि, परन्तु विरणीक आँखि मे जे एक बेर 'बरसात' आयल से कथी लै जायत—

विपत अपत तरु पाओल रे
पुनु नव नव पात।
विरहित नयन दिहल विहिरे
अबिरल बरसात ॥

अविरल अश्रु प्रवाह नायिकाक नेत्र कें अश्रु सरिता मे रूपान्तरित क दैत अछि। फलतः स्नानो करबाक लेल नायिका कें अन्यत्र जेबाक अपेक्षा नहि रहैत छन्हि—

लोचन नीर तटनि निरमाने ।
करय कमलमुखि ततय सनाने ॥

तथापि विरह दग्ध हृदय मे प्रिय मिलनक कामना ओहिना तीव्र बनल रहैत अछि। नायिकाक आँखि प्रिय मिलनक प्रतीक्षा मे पूर्ववत् आतुर रहैत छन्हि। एकर हृदयग्राही चित्र प्रस्तुत पद मे अंकित अछि—

लोचन धाय फेधायल हरि नहि आयल रे।
सिव सिव जिबओ न जाय आस अरुझायल रे।

मन करे तँह उड़ि जाइअ जहाँ हरि पायब रे।

प्रेम परसमनि जानि आनि उर लाइब रे।

एतय कामातुर राधा द्वारा कामारि शिवक गोहारि अत्यन्त भावपूर्ण अछि। राधा विरहक विशाल अवधि कें काटि लैत छथि। 'दुहु दिसि दारुन दहन जैसे दगधइ आकुल कीट परान' सदृश राधा प्रेमक वेदी पर अपना कें अर्पित क दैत छथि—

दारुण प्रेम तबहु नहि टूटत बाढ़त विरहक बाधा।

और जखन कृष्णक आगमन होइछ त मिलनक उल्लास मे विरहक समस्त वेदना क्षणहि मे बिला जाइत अछि। जेना किछु नहि भेल हो, कृष्ण सदा-सर्वदा सँ राधाक निकट होथि—

कि कहब हे सखि आनन्द ओर,

चिर दिन माधव मन्दिर मोर।

राधाक ई असीम आनन्द वर्णनातीत अछि।

विद्यापतिक कविता मे नारीक विविध मनोभावक विलक्षण अभिव्यक्ति भेटत। कविक कथन अछि—'नारि मनोरथ अभिमत शत-शत रहस निरूप' ओ ई निश्चित जे राधा कविक लेल खाली सौन्दर्य-मणि नहि छलथिन्ह अपितु हुनका मे चरित्र एवं शीलक एहन आकर्षण छलन्हि जे कवि कें भाव विभोर कैने छल। वस्तुतः राधाक प्रतिमा निर्माण मे कवि अपन समस्त आत्मीयता, तन्मयता एवं हृदयक सौन्दर्य बोध अर्पित कऽ देलन्हि।

अपन सौन्दर्य सृष्टि कें विद्यापति जहिना भावक विपुल ऐश्वर्य सं मंडित कैलन्हि तहिना कुशल मणिकार सदृश ओकरा साहित्यक

विविध उपादान सं सज्जित कलन्हि। साहित्य शास्त्रक गम्भीर अध्ययन हुनक एहि रस विग्घताक अलंकरण मे सहायक भेल। सौन्दर्याक सूक्ष्म पक्षक अभिव्यक्ति मे जे दृश्य विधान एवं अप्रस्तुत योजना अछि तकर प्रस्तुतीकरण मे एक गोट चमत्कार निहित अछि। रूढ़ सं रूढ़ उपमान हिनक प्रयोग मे नव द्युति सँ युक्त भऽ गेल अछि। एकहि वस्तुक वर्णन विद्यापति अनेक रीति सं कैने छथि, जाहि मे एहि विशेषताक दर्शन होइत अछि। नायिकाक आँखिक वर्णन कवि भिन्न-भिन्न प्रकारें करैत छथि—

१. नीर निरंजन लोचन राता।

सिन्दुर मंडित जनि पंकज पाता॥

२. लोचन युगल भृंग अकारे।

मधुक मातल उड़य न पारे॥

३. भौंह सुरेखल आँखि

पंकज मधु पिबि मधुकर रे, उड़य पसारल पाँखि।

४. सुन्दर मदन चारु अरु लोचन, काजर रंजित भेला।

५. मांगुक भंगिम थोरि-जनु

काजरे साजल मदन-धनु।

६. चचल लोचन बंक निहारिनि, अंजन शोभन ताय।

जनि इन्दीवर पवने ठेलल, अलि भरे उलटाय॥

प्रत्येक चित्र मे अभिव्यक्तिक जाहि निपुणताक परिचय भेटत अछि तथा एहि मे कल्पनाक जे कमनीयता अछि ओ विद्यापतिक काव्य-कुशलताक दिग्दर्शक थीक। कवि आँखिक शोभा वर्णन मे

उपमानक विशाल संग्रह कने छथि। नायिकाक दृष्टि-भंगिमा मे, प्रेमीक लेल जे संकेत-स्वर अछि ओ ने त लिखि कऽ अथवा बाजिकऽ व्यक्त कैल जा सकैछ। एहन स्थिति मे दू आत्माक स्नेह सम्प्रेषणक माध्यम नयनक इयह अमुखर भाषा होइछ। प्रेमक एहि वाणी कें कवि जेना 'चंचल लोचन बंक निहारिनि' मे बान्हि देलन्हि अछि।

विद्यापतिक काव्य-चमत्कार हुनक एहि अभिव्यक्ति कौशल मे अछि। हुनक उपमान मे नवीनता नहि भेटत परन्तु ओकर प्रयोग मे जाहि कुशलताक दर्शन हैत ओ अन्यत्र कम भेटत। हुनक अधिकांश उपमान साहित्य-शास्त्रक प्राचीन प्रयोग थीक। तथापि विद्यापतिक चतुरता देखब जेना, ओ एहि उपमान सभक प्रयोग अनासक्त भावें कने छथि। ओ विरोधाभास एवं प्रतीपक आश्रय लय काव्यरूढ़िक तिरस्कार करैत छथि; जेना अनिवर्चनीय रूप राशि कें रूढ़िक बन्धन मे नहि बान्हल जा सकत अछि। परन्तु प्रकारान्तर सँ ओ तेहेन सौन्दर्य चित्र ठाढ़ कऽ दैत छथि जे सभ तरहें अभिनब प्रतीत होइत अछि। निम्न पद कें उदाहरण रूनें देखि सकैत छी—

तोहर वदन सम चाँद होअथि नहि
जइओ जतन विहि देल।
कय बेरि काटि बनाओल नव कय
तइओ तुलित नहि भेल।
लोचन तूल कमल नहि भय सक
से जग के नहि जाने।
से फेरि जाय नुकायल जल भय
पंकज निज अपमाने।

अलंकारक ई निपुण सन्निबेश विद्यापतिक काव्य प्रतिभाक प्रमुख विशेषता थीक; एहि मे कतहु कृत्रिमताक भान नहि होइछ। विद्यापतिक एहि गुण कें लक्ष्य कय प्रसिद्ध विद्वान डा० दिनेशचन्द्र सेनक उक्ति अछि—"उपमाक यश मे, भारतवर्ष मे एकमात्र कालिदास क आधिपत्य छन्हि। एहि लेल यदि कोनो दोसर व्यक्तिक नामोल्लेख कयल जाय त विद्यापतिक नाम लेब असंगत नहि हैत।" उपमा सँ एतय विद्वान लेखकक तात्पर्य सामान्य अलंकारक प्रयोग सँ छन्हि। उपमा त अलंकारक मूलाधारे थीक। वास्तव मे एहि क्षेत्र मे विद्यापति, कालिदासक सफल उत्तराधिकारी छथि। एतेक धरि जे राधा-कृष्णक अनन्य अनुरागो कें कवि 'उपमा'क माध्यमे व्यक्त कलन्हि अछि—

सुजनक प्रेम हेम समतूल
दहइत कनक द्विगुन होय मूल
टुटइत नहि टुट प्रेम अदभूत
जइसन बढ़य मृनालक सूत

और अलंकारक विविधता पर विचार करब त कोन अलंकार विद्यापति मे नहि भेटत। उत्प्रेक्षा त हुनका जेना सर्वाधिक प्रिय छलन्हि।

विद्यापतिक ई प्रेम गीत सभ हुनक रसविदग्धताक प्रमाण थीक। ई सभ गीत गेयमुक्तकक कोटि मे आओत। रस निष्पत्तिक लेल जेना काव्य-नाटकादि मे समस्त उपादानक सामाञ्जस्य सम्भव होइछ,

तेना मुक्तकक सीमित परिधि मे तकर निर्वाह नहि भऽ पबछ। तथापि विद्यापतिक समस्त पदावलीक जे सम्मिलित प्रभाव पड़ैत अछि ओ प्रत्येक पाठक कें रस-समुद्र मे निमग्न कऽ दैत अछि। वस्तुतः 'एहि मुक्तक सबहुँ सँ शृंगारक मन्दाकिनी ओहिना स्यन्दित होइछ जेना प्रबन्ध काव्य सँ।'

विद्यापतिक भक्ति पक्षक गीतक संख्या कम अछि। ई पद सभ शिव, दुर्गा, कृष्ण ओ गंगाक प्रसंग लिखल गेल अछि। सामान्यतः ई अनुमान कैल जा सकैछ जे लीला-विलासक गीतक अतिरिक्त ई पद सभ हुनक परिणत वयशक रचना थीक। एहि पद सभ मे काव्यकलाक सूक्ष्मता भनहि नहि भेटौ परन्तु निरभ्र हृदयकाश सँ निसृत श्रद्धाक अजस्र प्रवाह, भाव विभोर क दैत अछि। एहि पद सभ मे रौद्र, भयानक, हास्य ओ शान्ति रसक मनोरम सन्नि-वेश अछि।

विद्यापतिक पद मे राधा-कृष्ण सम्बन्धी पदक प्रधानता देखि, कविकेँ वैष्णव कहल जाइत छन्हि। वस्तुतः एहि तरहक पदक बंगलाक वैष्णव समाज मे अत्यधिक आदर भेल। एही कारणें डा० ग्रीयर्सन सदृश विद्वान विद्यापतिक एहि गीत सभ कें वैष्णव भजन कहि परिचय देलन्हि। परन्तु मिथिलाक रसिक समाज मे ई पद सभ शृंगारेक गीत बुझल जाइत अछि। मिथिलाक पर-म्परा मे विद्यापति केँ शैव बुझल जाइत छन्हि अत इहो तर्क देल जाइछ जे ओ शैव भऽ कऽ वैष्णव मतानुसार पदक रचना किऐक करताह ? हिन्दी साहित्यक कतिपय आलोचक त कविक

रसविदग्धता कें घोर कामुकता कहि परिचय देलन्हि अछि । अतः विद्वद् समाजक सम्मुख ई एकटा विचारणीय प्रश्न रहल अछि जे विद्यापति शृंगारिक कवि छलाह अथवा वैष्णव भक्त। एकर उत्तर कवीन्द्र रवीन्द्रक एक गोट कविता मे प्राप्त होइत अछि। अपन वैष्णव कविता मे महाकवि जिज्ञासा कैने छथि जे वैष्णव कविलोकनिक गीत की वैकुण्ठक लेल अछि? वस्तुतः एहि प्रकारक मधुर गीत सभकें पढ़ला उत्तर ई विश्वास नहि होइछ जे एहि प्रेम संगीतक कोनो भौतिक आधार नहि छल। खाली देवताक कल्पना सँ एहि प्रकारक प्रेम-निर्झर नहि स्फुरित भऽ सकत अछि। अतः ओ कवि सँ पुछैत छथि जे ई विरह तापित गान अहाँ कतय सँ सिखलहुँ तथा किनकर आँखि कें देखि राधाक नोरायल आँखिक कल्पना कैल? एकर उत्तर जेहा तथापि एहि वैष्णव गीत मे प्रेमतत्व ताकि साधारण नर-नारी कोनो अन्याय नहि करैत छथि । शृंगारिक रचनाक स्थान साहित्व मध्य चिरकाल सँ अछि । श्रीकृष्ण शृंगारक आराध्यदेव मानल जाइत छथि । शृंगाररसक सर्वांगीन वर्णन मे श्रीकृष्णक ब्रजलीला बड़ उपयुक्त विषय रहल अछि। महाकवि जयदेव अपन 'गीत-गोविन्द' मे राधाकृष्णक रहस-लीलाक गान कय शृंगारक रसधार वहा देने छथि । एक गोट उत्तराधिकारीक रूप मे 'अभिनव जयदेव' ओकरा संस्कृतक घाटी सँ उतारि लोकभाषाक समतल भूमि पर बहौलन्हि। जखन 'जयदेव-भारती' सदृश 'हरि स्मरणे सरसं मनः' एवं 'विलास कलासु कुतूहलम'क सम्मिलित उद्देश्य राखि जँ विद्यापतियो पदक रचना कैने होथि त

आश्चर्य्य कियैक ? विद्यापतिक 'अभिनव जयदेव' उपाधिक सार्थकतो त एहो सँ सिद्ध होइत अछि। जयदेव त जतय धर्मक स्वर लऽ कऽ लिखलन्हि ओतहु अनायास युवती केलि विलासक प्रसंग उपस्थित भऽ आयल अछि—

हरिचरण शरण जयदेव कवि भारती।
वसतु हृदि युवतिरिव कोमल कलावती॥

"हरि चरणहि जनिक शरण छन्हि, एहन जयदेव कविक ई भारती कोमल कलावती युवती सदृश सभक हृदय मे निवास करौ।"

हरि चरण मे निवास कैनिहार जयदेव कें हरि स्मरणक जे आनन्द उपलब्ध भेल होन्हि परन्तु पाठक समाज कें त हुनक कृति, निस्सन्देह युवतीक कोमल कला सदृश आकृष्ट कलक।

सम्भवतः विद्यापति एही लोकरुचि के' ध्यान मे राखि जयदेवक परम्पराक पालन कलन्हि। एहि तरहें धार्मिक साहित्य मे लौकिक शृंगार चित्र कोनो वर्जित विषय नहि छल। फेर ई कहब जे 'विद्यापतिक एहि बाह्य संसार मे भगवत भजन कहाँ, वयःसन्धि मे ईश्वर सँ सन्धि कहाँ, सद्यः स्नाता मे ईश्वर सँ नाता कहाँ तथा अभिसार मे भक्तिक सार कहाँ' अविवेक पूर्ण आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। राधा-कृष्णक लीला-विलासक ई गायक अन्ततः भगवान श्रीकृष्ण के' आत्म-समर्पण करैत लिखैत छथि—

माधव, बहुत मिनति कर ताय।
दय तुलसी तिल देह समर्पिनु
दय जनि छाड़बि मोय।

गनइत दोसर गुन लेस न पाओबि
जब तुहुँ करबि विचार ।
तुहु जगत जगनाथ कहाओसि
जग बाहिर न इ छार ॥

× × ×

भनइ विद्यापति अतिशय कातर
तरइत इत भव-सिन्धु ।
तुअ पद-पल्लव करि अवलम्बन
तिल एक देह दिनबन्धु ॥

तथापि विद्यापति कें भक्त कहबाक पाछाँ जँ ई धारणा हो जे ओ संसार सँ विरक्त भय संयास लऽ लेलन्हि अथवा घर छोड़ि वनक बाट धैलन्हि त इतिहासक प्रति अनास्थाक सूचक थीक। विद्यापतिक जे जीवन परिचय प्राप्त अछि तथा हुनक रचनाक जे स्वरूप उपलब्ध अछि ताहि आधार पर असंदिग्ध रूपें कहल जा सकैछ जे महाकवि, गार्हस्थ्य जीवन बितौनिहार आस्तिक पुरुष छलाह जे अपन सामाजिक दायित्व सँ कहियो विमुख नहि भेलाह। संस्कृत मे रचित हुनक नोति एवं धर्माचरण सम्बन्धो अनेक ग्रंथ हुनक एही सामाजिक जीवनक परिचय दैत अछि। फेर गार्हस्थ्य जीवन ओ भगवानक स्मरण मे त कतहु विरोध नहि अछि। कोनो पारिवारिक व्यक्ति सदृश हुनका शृंगार सँ अभिरुचि छलन्हि तथा प्रत्येक आस्तिक व्यक्ति सदृश हुनका ईश्वरक प्रति श्रद्धा ओ आस्था छलन्हि। एहि तरहें हुनक समस्त काव्य जीवनक स्वाभाविक धाराक परिणामे

थीक। तैं हुनका वैष्णव, शैव, शाक्त अथवा आन कोनो सम्प्रदायक परिधि मे राखि कऽ देखब, हुनक व्यापक दृष्टिकोन कें संकुचित करबाक प्रयास हैत। विद्यापतिक दृष्टि मे सभ देवी-देवता एकहि छथि। शिव एवं विष्णु मे एकत्वक प्रतिपादन करैत ओ हुनक स्तुति करैत छथि—

भल हर भल हरि भल तुअ कला
खन पीत बसन खनहिं बघछला

तहिना मातृरूप मे ब्रह्मक वर्णन करैत हुनक पद अछि—

कज्जल रूप तुअ काली कहिए
उज्जवल रूप तुअ वानी।
रवि मंडल परचंडा कहिए
गंगा कहिए पानी।
ब्रह्मा घर ब्रह्माणी कहिए
हर घर कहिए गौरी।
नारायण घर कमला कहिए
के जान उत्पति तोरी।

ई साम्प्रदायिक सहिष्णुता मैथिल समाजक विशेषता थीक। मैथिल लोकनि अनादिकाल सँ शाक्त, वैष्णव ओ शैव तीनू रहलाह अछि। विद्यापतियो एही संस्कार सँ पोषित छलाह। ओ विभिन्न देवी-देवताक स्तुति मे समान श्रद्धा-भाव अर्पित कैने छथि। शक्ति विषयक हुनक प्रसिद्ध पद अछि—

जय-जय भरवि असुर भयाउनि
पशुपति-भामिनि माया ।
सहज सुमति वर दिअओ गोसाउनि
अनुगति गति तुअ पाया ।

कृष्णक प्रार्थनाक पद त पहिनहि उद्धृत कैल गेल अछि, एतेक धरि जे कवि राधाक बंदना करब नहि बिसरैत छथि । कृष्णक लीला विलासक सहचरी एतय जगत्धात्रीक पीठिका पर आसीन छथि—

देख-देख राधा रूप अपार ।
अपरूप के हि विधि आन मिलाओल
खिति तल लावनि-सार ॥

× × ×

कत-कत लछमी चरन तल नेओछय
रंगिनि हेरि विभोर ।
करु अभिलाख मनहि पद-पंकज
अहो निसि कोर अगोरि ॥

और शिव सम्बन्धी पदक संख्या त निस्सन्देह बड़ बेशी अछि । एहि पद सभ मे अपूर्व भक्ति प्रवणता एवं तन्मयताक दर्शन हैत । सम्भवतः एही सँ मिथिला मे ई जनश्रुति पसरल अछि जे महाकवि शैव छलाह । ईहो कहल जाइछ जे विद्यापतिक पिता गणपति ठाकुर शैव छलाह तथा कपिलेश्वर नामक शिवक आराधना कय विद्यापति सदृश पुत्र-रत्न कें प्राप्त कने छलाह ।

शिव सम्बन्धी हिनक नचारी सभ अछि जाहि कें मिथिलाक भक्त समुदाय आनन्द विह्वल भय गबैत अछि । विद्यापति रचित महेशवाणीक पद अति प्रसिद्ध अछि । एतबहि नहि, इहो जनश्रुति अछि जे विद्यापतिक भक्ति-भाव सँ वशीभूत भय स्वयं महादेव 'उगना'क नाम धराय विद्यापतिक खबासी करैत छलाह । उगनाक अन्तर्धान भेला पर ओ भाव विह्वल कंठ सँ गाबय लगलाह—

उगना रे मोर कतय गेला ।
कतय गेला शिव किदहु भेला ॥
भाङ नहि बटुआ रुसि बैसलाह ।
जोहि हेरि आनि देल हँसि उठलाह ॥

अन्ततः अपन जीवन संध्या मे कवि परिताप भरल स्वर मे भगवान सँ याचना करैत छथि—

माधव हम परिणाम निराशा ।
तुहु जगतारण दीन दयामय एतय तोहर बिश्वास ।
× × ×
ए हरि बन्दौं तुअ पद पाय ।
तुअ पद परिहरि पाप पयोनिधि पारक कओन उपाय ।

वृद्धावस्था मे प्रत्येक सांसारिक व्यक्तिक ई स्वाभाविक प्रतिक्रिया होइछ । गंगाक स्तुति करैत ओ अन्तकाल मे नहि बिसरबाक लेल निवेदन करैत छथि—

बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे ।
छाड़इत निकट नयन बह नीरे ॥

कर जोरि विनमओं विमल तरंगे।
पुन दरसन होय पुनमति गंगे॥

× × ×

भनहि विद्यापति समदओं तोही।
अन्तकाल जनु बिसरह मोहि॥

तथा गंगा अपन भक्तक प्रार्थना कें अस्वीकार नहि कऽ सकलीह। अन्तकाल मे ओ विद्यापति कें अपन शरण मे लऽ लेलथिन्ह। महु-बाजितपुर (आब विद्यापतिनगर) नामक स्थान मे, जतय विद्यापतिक मृत्यु भेलन्हि, गंगा कें अपन स्वाभाविक धारा कें छोड़ि आबय पड़लन्हि।

विद्यापतिक व्यवहार विषयक पद सभ मे उपनयन, विवाह एवं अन्य मांगलिक अवसर पर गैबा योग्य गीतक गणना हैत जे समस्त मिथिला मे प्रचलित अछि। शिव-पार्वतीक विवाह एवं जीवन सँ सम्बद्ध बहुत राश पद वस्तुतः व्यवहारेक गीत थीक। एहि सभ गीत सँ मिथिलाक सामाजिक जीवन ओ रीति-पद्धतिक महत्त्वपूर्ण परिचय भेटैत अछि। एहि प्रकारक गीत सभक, एखन धरि ने प्रामाणिक संग्रहे कैल अछि, ने सम्यक् अध्ययन-अनुशीलने।

ओना त विद्यापतिक भाषा-गीतिक प्रधानतः उपर्युक्त तीनू कोटि अछि तथापि किछु एहनो पद अछि जाहि लेल एकटा चारिमो कोटिक सृष्टि कैल जा सकैछ। एहि मे दृष्टिकूटक पद सभ आओत जकर साहित्यिक महत्त्व गौण अछि तथा खाली विनोदक लेल रचल गेल अछि। शिवसिंहक राज्याभिषेक वर्णन, युद्ध वर्णन आदि विषयक पद एही कोटि मे आओत।

विद्यापति अपन भाषाक तुलना द्वितियाक चन्द्रमाक संग कने छथि। बालचन्द्र जेना शिव मस्तक पर विराजमान रहैत अछि, तहिना विद्यापतिक भाषा नागर-मन-मोहन अछि। विद्यापतिक भाषाक सामर्थ्य निस्सन्देह हुनक गर्वोक्तिक अनुरूप अछि। एकरा माधुर्य मंडित करवा मे शब्दक तद्भव रूप बड़ सहायक भेल अछि; ओना त शब्द-चयन मे जाहि सुकुमारताक दर्शन होइछ से मन मे अभिलषित भावक संग यथाशीघ्र तादात्म्य स्थापितक लैत अछि। हिनक पद-लालित्य हृदयग्राही आछि। हृदय कें तत्काल प्रभावित करबाक लेल जाहि प्रसाद गुणक अपेक्षा अछि ताहि सँ हिनक भाषा ओतप्रोत अछि। संगीत त जेना एकर प्राण अछि।

विद्यापति रससिद्ध कवि रहलाक संगहि सामाजिक चेतनाक अग्रदूत छलाह। जन-जीवनक प्रति आदर भाव हिनक भाषा-प्रयोग मे यत्र-तत्र दृष्टिगत होइछ। हिनक लौकिक ज्ञान कतेक विस्तृत छल तकर आभास हिनक साहित्य मे ब्यवहृत लोकोक्ति एवं सूक्तिक प्रयोग सँ भेटत। एतय एकाध उदाहरण द्रष्टव्य अछि—

(क) आनक दुख आन नहि जान।

(ख) निरधन आदर के कर कहाँ।

(ग) आडम्बरे आदर हो सब ताहू।

(घ) अभिनव रस रभस पओले कमन रह विवेक।

(ङ) मानिक पड़ल कुबानिक हाथ।

(च) वैभव गेले रहत विवेक,
तैसन पुरुष लाख मह एक।

Scanned by CamScanner

(छ) आशा लुबुधल न तेजय रे
कृपणक पाछु भिखारि।
(ज) सेहे पुरुष-वर जे हे धैरज धर
सम्पद विपदक ठाम लो।

विशेष कय स्तुतिपरक पद सभ मे ग्रामीण जीवनक जाहि सरलताक दर्शन होइत अछि ताहि सँ ओ सर्व-साधारणक कंठ मे स्थान बना लेलक अछि।

कवि रूपें विद्यापति कतेक यशस्वी छलाह तकर प्रमाण त इयह अछि जे प्रशंसक लोकनि हुनका अनेक उपाधि सँ विभूषित कैलथिन्ह। हुनक संस्कृत ग्रन्थ सभ मे कोनो उपाधिक उल्लेख नहि अछि। ग्रन्थ सभक अन्त मे 'महामहोपाध्याय' मात्र लिखल अछि। 'अभिनव जयदेव' त सर्व प्रसिद्ध अछि। जाहि तरहें संस्कृत साहित्य मे जयदेव अपन कोमल कान्त पदावली एवं रसस्नात्क विषय वर्णनक लेल यशस्वी छथि तहिना भाषा काव्य मे माधुर्य्य सृष्टिक लेल विद्यापति अमर छथि। महाराज शिवसिंह, कवि कें विशपी ग्रामक दानक संग एहि उपाधि सँ सम्मानित कैने छलथिन्ह। एकर अतिरिक्त कवि कण्ठहार, सरस कवि, काव्शेखर आदि आनो अनेक उपाधिक सूचना कविक पदक भणिता सँ प्राप्त होइत अछि।

विद्यापति भाषा-साहित्यक प्रथम कवि छलाह। सर्व-प्रथम ओयह हमरा सभ कें 'देसिल वयना'क रसास्वादन करौलन्हि। मैथिलीक मधुरिमा पर जेना ओ संस्कृतक गरिमा कें निछावर कऽ देलन्हि।

डा० जयकान्त मिश्रक कथनानुसारें "ओ पूर्वीय भारतक प्रथम गायक छलाह जे जनभाषा कें साहित्यिक भाषाक स्तर धरि उआ देलन्हि।" १

विद्यापतिक कविताक प्रभाव क्षेत्र अपरिमित अछि। समाजक प्रत्येक वर्ग मे हिनक कविता समान रूपें आदृत भेल। कविक लोकप्रियताक एहि सँ उत्कृष्ट दोसर उदाहरण की हैत? महादेवक मन्दिर सं लऽ कऽ कोबर घर धरि हिनक पदक गायन होइछ। देवालय ओ विलाशभवन, एहि उभय अवलम्बी उपकूल सँ बहैत जीवन सरिता सदृश काव्यक ई भाव स्रोत परवर्त्तीकालक काव्य रसिक कें अपरिमेय माधुर्य्य सँ रसप्लावित करैत रहल अछि। विद्यापतिक एहि कवि-व्यक्तित्व मे व्यापक मानवीय अनुभूति एवं देशकाल विवर्जित कलाकारिताक अद्भुत समन्वय दृष्टिगोचर होइछ। अपन काव्य द्वारा ओ वैष्णव भक्त कें लीला-विलासक दिव्य संगीत सँ आनन्दित कैलन्हि; रूप-पिपासु रसिक समुदायक सम्मुख नारी-सौन्दर्यक मांसल-मादक चित्रण कय, फेर ललित प्रणय-केलिक वर्णन कैलन्हि; सौन्दर्य-प्रेमी कें ओकर अपरुप, सहज एवं लोकोत्तर सौन्दर्यक दर्शन करौलन्हि; प्रेमी-प्रेमिका कें 'पिरिति'क नितनूतनता, प्रगाढ़ता, निश्छलता, ओ एकनिष्ठ शाश्वत आकांक्षाक सन्देश देलन्हि; प्रणयभीता मुग्धाक हृदय मे मिलनोत्सुकता जगौलन्हि; 'बिनु सिनेह बरइ जनि दिवे' सदृश विरह-

1. He was the earliest singer of eastern India, who had raised a vernacular to the level of a literary language.

विधुरा कामिनीक प्रति अपन समस्त सहानुभूति अर्पित कय ओकर मनोरथ पूर्तिक लेल शुभकामना व्यक्त कैलन्हि तथा अन्ततः वार्द्धक्य सीदित समाज कें आत्मपरिताप द्वारा परिशुद्ध चित सं देवाराधनाक प्रेरणा देलन्हि । हुनक काव्यक प्रभाव-वैविध्य हुनक विलक्षण व्यक्तित्व कें चरितार्थ करैत अछि।

भावनाक अखण्ड प्रवाह, कोमल प्रतिभा-विलास, वाणीक मधुरता, लेखनीक लालित्य ओ पदक सौकुमार्य्य आदि विशिष्ट काव्यगुण सँ समन्वित मैथिल कोकिलक स्वर काकली काव्य रसिक कें रस विभोर कऽ रहल अछि। कविक ई रससिक्त पदावली, हुनक असंख्य पाठक समुदायक लेल रसतीर्थ थीक। एहि सं परितृप्ति कतय ?—'सेहो मधुबोल स्रवनहि सूनल स्रुति पथ परस न भेल'—ओ मधुर बोल निरन्तर सुनैत रहलहुँ तथापि कान कें स्पर्श पर्यन्त नहि कैलक, श्रवण तृप्त नहि भेल, मन भरल नहि, बेर-बेर सुनबाक स्पृहा प्रशमित नहि भेल, हृदय नहि जुड़ायल। ई अखण्ड-अतृप्ति पूजागृह मे प्रज्वलित होमानल सदृश चिरन्तन अछि, एहि अतृप्ति सं कविक अनुभूति नित्य नवीन रहैत अछि, क्षण-क्षण मे नूतन होइत अछि,—'क्षणे-क्षणे यन्नवतामुपैति ।' वस्तुतः विद्यापतिक काव्यक रमणीयताक इयह रहस्य थीक, हुनक कविताक शाश्वत आकर्षणक इयह मूलबिन्दु थीक।



गोविन्द दास

मैथिली-साहित्य-कानन मे विद्यापतिक अनन्तर जे दोसर कोकिल अपन कूजन सँ वसन्तक विस्तार कैलन्हि ओ गोविन्ददास छलाह। अपन कोकिल कंठ सँ मिथिलाक आम्रवन कें ध्वनित-प्रतिध्वनित कय विद्यापति जखन अन्तर्धान भऽ गेलाह त हुनक अन्तेवासोक रूप मे गोविन्ददास काव्य मंच पर अवतरित भेलाह। मिथिलाक रसालकुंज एहि नव कोकिलक स्वरसाधना सँ एक बेर पुनः मुखरित भऽ उठल। विद्यापति सदृश हिनकहु गीत, मिथिलाक सोमा कें टपि बंगाल धरि व्यापक भऽ उठल। एहि प्रसंग मे एकटा विलक्षणता देखब जे कालक्रमे गोविन्ददास मिथिलेक लेल अपरिचित भऽ गेलाह तथा बंगाल मे हिनक गीतक प्रचार ताहि रूपें भेल जे ओ बंगालिये कवि बुझल जाय लगलाह। बंगाल मे गोविन्ददास नामक अनेक कवि भऽ गेल छथि जाहि मे गोविन्ददास कविराज प्रमुख छथि। अतः ई स्वाभाविक छल मे भ्रमवशात बंगाली समाज हिनक समस्त रचना कें, कविराजक रचना मानि ओकरा वैष्णव साहित्यक वैभव बुझलक तथा हिनक मैथिली पद कें 'व्रजबुलि' कहलक। एहि तरहें गोविन्ददास बंगालक वैष्णव महाजन मध्य अग्रगण्य रहलाह तथा विगत तीन सौ वर्ष सँ बंगालक कोनो संग्रह ग्रन्थ नहि भेटत जाहि मध्य गोविन्ददासक महत्वपूर्ण स्थान नहि हो तथा हिनक अधिकाधिक पदक संकलन नहि भेल हो। परन्तु गोविन्ददासक भाषाक जे विशुद्ध रूप छल सेह जेना उद्घोषित कऽ

रहल छल जे ई मैथिलीक कृति थीक ओकर अनुकरण नहि। तथापि हुनक मैथिलत्व पश्चात सिद्ध भेल। तकरहु श्रेय एक गोट बंगालिये भद्रलोक कें छन्हि। हमरा लोकनि बाबू नागेन्द्रनाथ गुप्तक ऋणी रहबन्हि जे सर्वप्रथम एहि तथ्य कें प्रकाशित कैलन्हि जे गोविन्द-दास जनिक कविताक प्रकाशन बंगाल में भेल अछि तथा जनिक पदक गान बंगालक वैष्णव लोकनि करैत छथि से मैथिल छलाह[1], बंगाली नहि तथा समस्त मैथिलीभाषी समाजक ध्यान अपन एहि अज्ञात कवि दिश आकृष्ट कैलन्हि। यद्यपि चन्दा झा बहुत पहिनहि गोविन्ददासक पदक संग्रह कऽ चुकल छलाह तथापि प्रकाशनक अभाव मे गोविन्ददासक परिचय अप्रकाशिते रहल तथा हुनकर अपनहि लोक नहि चिन्हि सकलन्हि। ओना त बंगाल सँ अनेको पदसंग्रह प्रकाशित भेल जाहि मे गोविन्ददासक पद छन्हि परन्तु मिथिला मे एहि प्रसंग जे किछु काज भेल जे नगेन्द्रनाथ गुप्तक रहस्योद्घाटनक पश्चाते चलि कऽ। १९३२ ई० मे पुस्तक भण्डार लहेरियासराय सँ 'गोविन्दगीतावली'क नामे हिनक पदक एकटा संकलन प्रकाशित भेल जकर भूमिका मे, ग्रन्थक सम्पादक मथुरा प्रसाद दीक्षित गोविन्ददासक संरक्षणक लेल बंगाली समाजक प्रति उत्कट अकृतज्ञता व्यक्त करैत, अपन 'कुतर्क' द्वारा मैथिली कें

---

१. गुप्त जी अपन अनेक निबन्ध मे एहि तथ्य पर प्रकाश देने छथि। एहि निबन्ध सभक सूची एवं विवरणक लेल गोविन्द गीतावलीक भूमिका द्रष्टव्य।

हिन्दीक उपभाषा प्रमाणित करबाक निष्फल प्रयास कय गोविन्ददास कें हिन्दीक कवि कहलन्हि। परन्तु पदक विकृत पाठ एवं टीका सम्बन्धी भ्रान्तिक कारणें ई संग्रह चिन्तनीय रहल। पश्चात चन्दा झाक संग्रहक आधार पर डा० अमरनाथ झा, 'शृङ्गार भजनावली' क नाम सँ हुनक पदक एक गोट बृहद संग्रह प्रकाशित करौलन्हि। अद्यावधि एकरहि विशुद्ध ओ प्रामाणिक मानल जाइत अछि।

मैथिल कवि गोविन्ददासक जे परिचय उपलब्ध अछि तकर मूलाधार चन्दा झा छथि। पं० रमानाथ झा, कवीश्वरक कोनो हस्तलिपि कें प्रमाण मानि लिखने छथि जे "ओहि पुरना पोथी मे संग्रहक संग-संग कवीश्वर चन्दा झा ओहि गोविन्ददासक परिचय सेहो लिखैत छथि जनिक ई रचना थीक—शुचिकर झा ए पुत्रः शिवदास झा ए पुत्रः कृष्णदास झा ए पुत्राः कवि गंगादास, गोविन्द-दास, हरिदास, रामदासः।"[1] एहि परिचयक समर्थन मिथिलाक पंजीयो सँ होइत अछि। एहि अनुसारें ई गोविन्ददास कात्यायन गोत्र ओ कुजौलिवार वंशक श्रोत्रिय छलाह। कवीश्वर, गंगादासक दू गोट काव्य गंगाभक्ति ओ गंगाविलासक उल्लेख कैने छथि यद्यपि दुनू ग्रन्थ अद्यावधि प्राप्त नहि भेल अछि। लोचन कविक रागतरंगिणी मे हरिदासक भनिता सँ जे एक गोट पद अछि से सम्भवतः एही हरिदासक होन्हि। रामदासक लिखल आनन्द विजय नाटिका उपलब्ध अछि। एहि नाटिकाक निर्माण ओ अपन उपनाम सरपराम दय महाराज सुन्दर ठाकुर (१६४३ ई० १६७० ई०) क

1. देखू, शृङ्गार-भजनावलीक भूमिका।

प्रीत्यर्थं कैने छलाह। ई सरसराम उक्त नान्दिकाक एक गोट श्लोक मे गोविन्ददास कें अपन गुरु कहि हुनक विद्वताक सराहना कैने छथि। हुनक कहब छन्हि जे गोविन्दासक गर्जन सँ सभ वादी चुप भऽ जाथि। एहि सँ ई विदित होइछ जे ओ बड़का शास्त्रार्थी नैयायिक छलाह। मथुरा प्रसाद दीक्षित अपन गोविन्द गीतावलीक भूमिकामे लिखने छथि[1] जे गोविन्ददास अपन पद सभ मे ठाम-ठाम "भूप-नरोत्तम" क उल्लेख कैने छथि और सम्भवतः एहि सँ हुनक संकेत महाराज सुन्दर ठाकुरक जेठ भाई पुरुषोत्तम ठाकुर सँ छन्हि जनिक समय १६१७ ई० सँ १६४१ ई० धरि छलन्हि। प्रायः एही कारणें पं० रमानाथ झा जी 'हिनक समय अनुमानतः १५७० ई० सँ १६४० ई० धरि' मानैत छथि[2]। एहि आधार पर हुनक काल कें निर्णीत मानल जाइत अछि।

परन्तु गोविन्ददासक कालक समर्थन हुनक पद भनिता मे देल गेल राजालोनिक नाम सँ नहि होइत अछि। नेपालक दरबार पुस्तकालय में जे 'कंसनारायण पदावली[3]' क पाण्डुलिपि अछि ताहि मे गोविन्दक भनिता सँ बहुत राश पद अछि जाहि मे ओइनवार

---

१. गोविन्द गीतावली, पृ० ११। २. प्रबन्ध संग्रह, पृ० १४६।

३. (क) गोविन्द भन बुझ कंसनारायण सोरमदेवी अनुरागी।

(ख) गोविन्द भनमती कंसनारायण सोरमदेवी समाज।

(ग) गोविन्द सोरम रमन कंसनारायण मीलत नन्दकुमारे।

(घ) सोरम रमन एहो रस जान कंसनारायण गोविन्द भान।

—उपर्युक्त उद्धरण एवं कंसनारायण पदावलीक विशेष विवरणक लेल द्रष्टव्य—'हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर', जिल्द-१ पृ० २२१।

नरेश कंसनारायणक नामोल्लेख भेटैत अछि। पुनः रागतरंगिणी में[1] दू गोट पद यथाक्रमें गोविन्द ओ गोविन्ददासक नाम सँ उद्धृत भेल अछि। दुनू पद मे भाषागत समानताक संगहि एकहि आश्रयदाता 'कंसनारायण-सोरमदेवी'क उल्लेख भेल अछि। एहि सँ ई धारणा पुष्ट होइछ जे दुनू एकहि कविक रचना थीक अर्थात् गोविन्ददास एवं गोविन्द, दूनू एकहि कवि छथि। अतः गोविन्दक भनिता सँ रचित पद कें गोविन्ददास सं अतिरिक्त कोनो कविक मानब, विशेष प्रमाणक अभाव मे संगत नहि हैत। गोविन्ददासक भनिता सँ उपलब्ध आनो पद सभ मे ओइनवार वंशीय राजालोकनिक नाम भेटैत अछि।

एहि तरहें गोविन्ददासक पदावली म जाहि राजालोकनिक नाम भेटैत अछि ओ सभ छथि—राजा नरसिंह (दर्पनारायण[2]), भरव सिंह (हरिनारायण[3]), रामभद्र (रूपनारायण[4]) एवं लक्ष्मीनाथ (कंसनारायण)। एहि मे कंसनारायणक नामें अधिक पद भेटैत अछि। एहि कंसनारायणक आश्रित गोविन्द नामक

---

१. (क) सोरम रमन कंसनारायण मिलत नन्द कुमारे। पृ० १००–१०१।

(ख) दास गोबिन्द भन कंसनारायण सोरमदेवी समाज। पृ० १०२।

२. राजा नरसिंह रूपनारायण गोबिन्ददास अनुमान।

३. गोविन्ददास हृदय अवधारल हरिनारायण देवा।

४ गोविन्ददास मन रसिक रसायन।

रसयतु भूपति रूपनारायण ॥

एकटा प्रसिद्ध कवि छलाह से प्रमाण पुष्ट अछि[1] । डा० जयकान्त मिश्रक कथन छन्हि जे राजा कंसनारायणक संग हुनकर ओहने घनिष्ठ सम्बन्ध छलन्हि जेना महाराज शिवसिंहक संग महाकवि विद्यापतिक छलन्हि[2] । ई उक्ति निश्चय हुनक लोकप्रियता एवं रसविदग्धता दिश संकेत करत अछि परन्तु एकर सत्यता आलोच्य कवि गोविन्ददासक प्रसंग सिद्ध होइत अछि। अतः इयह गोविन्द कवि हमर आलोच्य कवि गोविन्ददास होथि त आश्चर्य कोन ? एहि तरहें गोविन्ददासक काल १७म शताब्दी नहि मानि १५म शताब्दी मानवाक प्रबल हेतु अछि । डा० जयकान्त मिश्रक अनुसारें[3] गोविन्द कवि सम्भवतः म० म० गोविन्द ठाकुर छथि जे काव्य प्रकाश पर काव्य प्रदीप नामक टीका लिखलन्हि तथा जे भगवान कृष्णक अनन्य भक्त छलाह। एही गोविन्दक पुत्र देवनाथ ठाकुर 'मन्त्र कौमुदी' नामक तंत्रग्रन्थक रचना १९२९ ई० मे कैने छलथिन्ह। म० म० गोविन्द ठाकुरक पिताक नाम केशव ठाकुर तथा माइक नाम सोनो देवी छलन्हि। ई भरौड़ा ग्रामक रहनिहार छलाह। एहि तरहें इयह गोविन्द कवि अथवा गोविन्द ठाकुर हमर आलोच्य कवि गोविन्ददास छथि।

वस्तुतः म० म० रामदास झा अपन अग्रजक शास्त्रार्थी हैबाक

---

१. द्रष्टव्य, 'ए हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर' जिल्द—१ पृ० २२१।

२. उपरिवत्।

३. उपरिवत्, पृ० २२२।

सूचना त देलथिन्ह परन्तु हुनक कवित्वक विषय मे सामान्यो संकेत नहि देलथिन्ह। ई निश्चय एकटा आश्चर्यक विषय थीक। गोविन्द-दासक ख्याति कविक रूप मे छन्हि, पदकर्त्ताक रूप मे छन्हि, नैयायिकक रूप मे नहि; हुनक रचना पदावलीक रूप मे अछि, सैद्धान्तिक ग्रन्थक रूप मे नहि। परन्तु रामदास झाक उक्ति सँ तकर थोड़बो आभास नहि भेटत। एहि कथन सँ हमर तात्पर्य १७म शताब्दी मे रामदास झाक अग्रजक रूप मे गोविन्ददासक अस्तित्व अस्वीकार करक नहि अछि, एतेक अवश्य जे हुनका आलोच्य कवि मानबाक संगत प्रमाण नहि भेटैत अछि।

'दीक्षित' जी जे 'भूपनरोत्तम'क चर्चा कैने छथि ताहि सँ युक्त एकहुटा पद उपलब्ध संग्रह मे नहि प्राप्त अछि। तथापि एहन कोनो पद हुनका दृष्टि मे आयल हो ताहि विषय कें अस्वीकार नहि कल जा सकैछ। परन्तु जाहि 'भूपनरोत्तम'क आधार पर ओ गोविन्ददासक समय १७म शताब्दी स्थिर करैत छथि, सैह हुनक समय १५म शताब्दी मानबाक साधन बनि जाइत अछि। जँ भूपनरोत्तम सँ पुरुषोत्तमे अर्थ लेल जाय त रागतरंगिणी मे गजसिंहक एक गोट पद अछि[1] जकर भनिता मे असमतिदेवीक पति नृप पुरुषोत्तमक उल्लेख अछि। ई पुरुषोत्तम उपनाम गरुड़नारायण, महाराज भैरवसिंह ओ महारानी जयाक पुत्र छलाह तथा ओइनवार वंशक अन्तिम नरेश महाराज लक्ष्मीनाथ कंसनारायणक पित्ती छलथिन्ह।

---

१. गजसिंह भन एह पूरब पुन तह ऐसनि भजए रसमन्त रे।
बुझए सकल रस नृप पुरुषोत्तम असमति देइ कन्त रे॥
—रागतरंगिणी, पृ० ७२।

काव्यक क्षेत्र मे गोविन्ददासक गुरु छलथिन्ह, महाकवि विद्यापति। विद्यापतिक लोकव्यापी प्रभावक चर्चा करैत कविक उक्ति छन्हि।

कविपति विद्यापति मतिमान,
जाक गीत जग चित्त चोरायल,
गोविन्द गौरि सरस रस गान।

और ताही सँ हुनक 'पद युगल सरोरुह' सँ निसृत काव्य मकरन्द कें मातल मधुकर सदृश पान कय परितृप्त भेलाह। अनन्य श्रद्धा एवं चरम भक्तिक संग अपन काव्य गुरुक प्रति कविक हृदय विभोर भऽ उठैत अछि—

विद्यापति पद युगल सरोरुह निस्यन्दित मकरन्दे।
तसु मझु मानस मातल मधुकर पिनइते करु अनुबन्धे॥

वस्तुतः विद्यापतिक रचनाक प्रति प्रगाढ़ अनुराग एवं काव्य-गुरुक रूप मे हुनक समादर, हुनक समसामयिकता दिश संकेत करैत अछि। गोविन्ददास कें निश्चय महाकविक दर्शनक सौभाग्य प्राप्त भेल छलन्हि। फेर ओ हुनक कवि प्रतिभा सँ प्रेरित-प्रभावित भेलाह तथा हुनका अपन काव्य गुरु बनाय गौरवक बोध कैलन्हि। महाराज धीरसिंह एवं कुमर भैरव सिंहक आज्ञा सँ विद्यापति, दुर्गाभक्ति-तरंगिणीक रचना कैने छलाह अतः ताहि समय धरि हुनक जीवित रहब निश्चित अछि। गोविन्ददासोक एकटा पदक भनिता मे भैरव सिंहक उपनाम हरिनारायणक उल्लेख भेटैत अछि। तखन महाकविक

दर्शन, गोविन्ददास कें अवश्य भेल हैतन्हि कारण जे दुनू एकहि राजा ओ राजवंशक आश्रित छलाह। सम्भव जे विद्यापति तखन अतिवृद्ध रहल होथि तथा गोविन्ददास नवयुवक होथि। अतएव जाहि तरहें विद्यापति, कीर्त्तिसिंह सँ भैरवसिंह पर्यन्त अनेक राजाक आश्रित रहलाह तहिना गोविन्ददास नरसिंह सँ कंसनारायण धरि अनेक राजाक राजकवि छलाह। राजा नरसिंहक समय १४४० ई० १४५३ ई० धरि छन्हि तथा कंसनारायणक १४९३ ई० सँ १५२७ ई० पर्यन्त। अतः गोविन्ददास १४४० ई० सँ १५२७ ई० धरि निश्चित रूपें वर्त्तमान छलाह। कंसनारामणक पश्चात मिथिलाक ओइनवार राजवंशक अन्त भऽ गेल परन्तु गोविन्ददास तकर बादो बहुत दिन धरि जीवित रहि काव्य रचना करैत रहलाह। गोविन्द-दासक अधिकांश पद मे आश्रयदाता राजालोकनिक नामक अभावक इयह कारण अछि।

गोविन्ददास कें ओइनवार राजवंशक समकालीन मानबाक एकटा हेतु और अछि। विद्यापति ओ गोविन्ददासक पद सभ बंगाल मे बेश लोकप्रिय भेल। बंगाल मे ई पद सभ कोना गेल ताहि प्रसंग डा० सुकुमार सेनक कहब छन्हि जे "बंगालक छात्रलोनिक उच्च शिक्षा, विशेषतः न्याय ओ स्मृतिक शिक्षा प्राप्त करबा लेल मिथिला जाइत छलाह। जखन अध्ययन समाप्त कय अबैत छलाह त अपन संस्कृत विद्याक अतिरिक्त भाषाक लोकप्रिय गीतो आनल करैत छलाह जाहि मे अधिकांश मे शास्त्रीय प्रेमक निरूपण रहैत छल

जे मिथिला मे प्रचलित छल[१४]।" वस्तुतः एही क्रम मे विद्यापति ओ गोविन्ददासक गीतक प्रचार बंगाल मे भेल। परन्तु १७म शताब्दी धरि अबैत-अबैत छात्रलोकनिक आवागमनक ई क्रम छिन्न भऽ गेल छल। पक्षधर मिश्र (भैरव सिंहक समकालीन) क एकटा बंगाली शिष्य रघुनाथ शिरोमणि अतिशय प्रतिभावान छलाह जे नवद्वीप जाय नव्यन्यायक अपन स्कूलक स्थापना कैलन्हि। पक्षधर मिश्रक सुयोग्य शिष्यक अभाव मे मिथिला मे क्रमशः विद्याक ह्रास होमय लागल तथा दोसर दिश नव्यन्यायक केन्द्र नवद्वीपक ख्याति उत्तरोत्तर बढ़ैत भेल। फलतः बंगाल सँ विद्याध्ययनक लेल मिथिला अयबाक परम्परा शिथिल होइत गेल। अतः गोविन्ददासक पदावलीक प्रचार १७म शताब्दी मे बगाल मे कोना भेल से विचारणीय विषय अछि। एहि सभ कारणें पं० रमानाथ झा एकटा नवयुक्ति प्रकाश मे आनलन्हि अछि। हुनकर कथन छन्हि जे "हिनका समय मे नव्य-न्यायक शास्त्रीय उत्कर्ष मिथिला सँ नवद्वीप चल गेल। नवद्वीप चैतन्य महाप्रभुक लीला क्षेत्र छल ओ ओतहि ई अपन गीतावलीक

---

14 "...Sanskrit students from Bengal, desiring higher education, especially in Nyaya and smriti, had to resort to Mithila. When they returned home they braught with them along with their sanskrit learning, popular vernacular songs, mostly dealing with love in a conventional way, that were current in Mithila."

—History of Brajbuli Literature Page--1

'रचना कयल त हिनक रचना मे मधुर रसक परिपाक अछि जाहि मे श्रृङ्गाररस आवरण मात्र अछि ओकर अन्तर मे निहित अछि भक्ति[१] ।" पुनः अपन 'प्रबन्ध संग्रह'[२] मे ओ एहि विषय पर विस्तार सँ विचार कैलन्हि तथा एहि समस्याक समाधान करबाक लेल 'परस्पर-विरुद्ध-प्रमाणपुञ्ज'क सामञ्जस्य कय गोविन्ददासक नवद्वीप यात्रा के स्थिर कैलन्हि । परन्तु पूर्व मे जाहि युक्तिक आश्रय लय एहि विषय पर प्रकाश देल गेल अछि तकरा दृष्टि मे राखि एहि प्रकारक अनुमान के प्रमाण मानबाक संगत हेतु नहि भेटैत अछि ।

अतः गोविन्ददासक जे परिचय चन्दा झा देलन्हि तथा जकरा प्रमाण मानि कतिपय विद्वान हुनक समय १७म शताब्दी निर्धारित कैलन्हि, से भ्रान्तिपूर्ण अछि । वस्तुतः चन्दा झाक समय, मैथिलीक क्षेत्र मे अनुसन्धानक आदि चरण छल तथा विशेष साधनक अभाव मे एहि तरहक भ्रान्तिक पूर्ण सम्भावना छल[३] । चन्दा झा गोविन्द-दासक मैथिलत्व प्रमाणित कैलन्हि, हुनक पद समक अन्वेषण कैलन्हि, इयह हुनक बड़ पैघ कृतित्व छन्हि । वस्तुतः मैथिलीक क्षेत्र मे ओ जे अनुसन्धानक दीपवर्त्तिका बारि गेलाह तकर आलोक मे वस्तुक समुचित विवेचन करब ओहि महापुरुषक प्रति अनास्थाक सूचक नहि थीक अपितु वास्तविक सम्मान प्रकट करब थीक ।

---

१. कविता कुसुम, तृतीय संस्करण, पृ० ६ । २. प्रबन्ध संग्रह, पृ० १५५ ।

३. चन्दा झा द्वारा बहुतो परिचय मे एहि प्रकारक भ्रान्तिक शंका उठाओल जा रहल अछि । कवशीवर द्वारा नलचरित नाटककर्त्ता गोविन्दक जे परिचय देल गेल अछि ताहि के पं० रमानाथ झाजी अशुद्ध कहलन्हि अछि । द्रष्टव्य—गद्य-संग्रह (तृतीय भाग) मे संगृहीत चन्दा झाक 'सुकवि चरितामृत सँ' निबन्धक पाद टिप्पणी ।

कवीश्वर चन्दा झा, अपन मिथिला-भाषा-रामायणक परिशिष्ट मे जे मैथिलीक कविलोकनिक नामावली देने छथि ताहिमे गोविन्ददासक काव्यकृतिक नाम कृष्णलीला कहने छथि। परन्तु हुनक गीतावली सँ अतिरिक्त आन कोनो ग्रन्थ अखन धरि प्रकाश मे नहि आयल अछि। तथापि एहि गीतावलीक वर्ण्यवस्तु कें देखि, सम्भव थीक जे कवीश्वर एकरहि कृष्णलीलाक नाम देने छथि। वस्तुतः कृष्णक विविध लीला एवं राधाक प्रणय प्रसंगक जे क्रमानुगत वर्णन अछि, ओ कृष्णलीला नाम कें सार्थक करैत अछि।

गोविन्ददासक जे प्रामाणिक पदावली प्रकाशित भेल अछि तकर नाम शृंगार-भजनावली देल गेल अछि। शृंगार एवं भजन, दुनू शब्द एक संग रहने विरोधक आभास दैत अछि। परन्तु इयह विरोधाभास एहि पद सभक विशिष्टता थीक। गोविन्ददासक पद, राधा-कृष्णक प्रेमलीला सँ सम्बन्धित अछि। फलतः शृंगार रसक विशद विवेचन हिनक रचना मे सहजहि उपलब्ध अछि। शृंगारक संयोग एवं वियोग, उभय पक्षक वर्णन कवि विशद रूपें कैने छथि। परन्तु हिनकर गीत मे लौकिक शृंगारक अभाव अछि। सभटा सामग्री शृंगारपरक रहितहुँ समष्टि रूपें हिनक पदावली भक्तिक अभिव्यक्ति थीक; ओहि द्वारा गोविन्ददास अपन भक्त-हृदयक परिचय दैत छथि। एहि पद समूह सँ प्राप्त भजनानन्दक इयह रहस्य थीक। फलतः हिनक गीतावली कें शृंगार ओ भजन दुनू सँ समन्वित करब सर्वथा सार्थक अछि।

वस्तुतः गोविन्ददास अपना कें भगवच्चरणारविन्दक 'नखमणि

निछनि' कहि अपन काव्यक लक्ष्य चरितार्थ कऽ देने छथि। ओ स्वयं कें भगवानक अलौकिक प्रणय लीलाक साक्षी बना कऽ धन्य छथि तथा ओकर संकीर्त्तन कय संतुष्ट छथि। इयह कारण थीक जे अपन पद सभक भनिता मे ओ 'गोविन्ददास प्रमाण', 'गोविन्ददास एक साखि', लुबुधल गोविन्ददास', 'हेरइत आनन्द गोविन्ददास', 'गोविन्ददास हृदय अवधारल' आदि अनेक उक्तियें अपन हार्दिक उल्लास निवेदित करैत छथि। अतः भगवानक नाम, रूप, लीलाक इयह कीर्त्तन गोविन्ददासक काव्यक विषय छन्हि। एहि प्रकारे भक्त हृदयक आलोक मे कृष्णक रस-विलासक ई पद समूह मधुररसक अभिषिंचन करैत छढि। इयह मधुररस गोविन्ददासक काव्यक रसथीक, समस्त काव्यक रसास्वादन सँ एकरहि निष्पत्ति होइछ तथा प्रत्येक भक्त हृदय कें परितृप्त करबा मे ई सक्षम भेल अछि।

राधा-कृष्णक पदावली मे मधुररसक उद्गम, श्री चैतन्यक जीवन रसक निषेक पाबि बंगाल मे भेल। वस्तुतः भागवत पुराण मे वर्णित श्रीकृष्णक लीलामय रूप पर आसक्त महाप्रभु चैतन्य, (जन्म १४८६ ई०) राधाभाव सँ अभिभूत भय भावनाक अखण्ड साम्राज्यक सृष्टि कैलन्हि। फलतः जाहि माधुर्य्यपूर्ण भक्तिक अजस्र स्रोत चैतन्यक अन्तःकरण सँ प्रवहमान भेल, लीला संकीर्त्तनक जे स्वर हुनक कंठ सँ फूटि पड़ल, से विशाल जनमानस कें अगाध रस समाधि मे निमग्न हैबा लेल प्रेरित कैलक। अपन पूर्ववर्त्ती कवि जयदेवक गीतगोविन्द एवं चण्डीदास ओ विद्यापतिक पदावलीक मृदुमन्दवाहिनी भाव निर्झरी महाप्रभुक आत्माक संगीत

बनि, प्रबल बन्याक रूप धारण कय बंगाले टा नहि, देशक विशाल भू राशि कें आप्लावित कय देलक। वस्तुतः राधा-कृष्णक जाहि लीला-विलास कें महाप्रभु एतेक महत्त्व देलन्हि, से श्रृंगाररसक उपादान छल। परन्तु एहि श्रृंगाररसक माध्यमे भक्तिक परिकल्पना, बंगालक वैष्णव समाज मे एक गोट नव रसक आविर्भावक हेतु बनल जाहि मे स्थायीभाव कृष्ण रति हो एवं तकर माध्यम श्रृंगार हो, अर्थात् श्रृंगार केवल अंग हो तथा अंगी हो भक्ति। पश्चात् शास्त्रज्ञ वैष्णव गोस्वामीगण, शास्त्रीय रीति सँ एहि मधुररसक प्रतिपादन कैलन्हि। अपन परम्परागत स्वरूप सँ अनेक तरहें भिन्नता ग्रहण कय बंगालक ई वैष्णव आन्दोलन, नव वैष्णव धर्मक नामें प्रसिद्ध भेल। बंगालक समस्त वैष्णव साहित्य मे एही भावनाक पोषण भेल अछि। और हमरालोकनि देखब जे गोविन्ददासक पदावली मे एही मधुररसक परिपाक अछि; ओहि मे कीर्त्तनक वैह स्वरध्वनित अछि। निस्सन्देह गोविन्ददासक काव्यक ई भावधारा हुनका चैतन्य द्वारा प्रवर्त्तित नव वैष्णव धर्मक बड़ निकट लऽ जाइत अछि। मिथिलाक साहित्यिक चिन्ताधारा मे वैष्णव भावनाक अभाव माननिहारक लेल ई अवश्य जिज्ञासाक विषय हैतन्हि जे चैतन्यमतक ई प्रभाव कोनो मैथिल कवि पर कोना पड़ल? परन्तु अनुसन्धानक आधार पर ई प्रमाणित होइछ जे मिथिला मे, संस्कृति ओ साहित्यक क्षेत्र मे, पूर्व चैतन्य ओ उत्तर चैतन्य दुनू युग मे वैष्णव धर्मक पूर्ण प्रभाव रहल। विद्यापतिक पूर्वज गोविन्द एकगोट वैष्णव सन्तक रूपमे पूर्ण ख्यात छलाह। इशान

नागर द्वारा १५६० ई० मे लिखित प्रसिद्ध वैष्णव सन्त अद्वैतक जीवनी मे एहि विषयक स्पष्टतः उल्लेख अछि जे आचार्य अद्वैत अपन तीर्थयात्रा क्रम मे मिथिला आबि विद्यापति सँ (१४५८ ई० मे) भेंट कैलन्हि तथा हुनकर गीतक एकटा संकलन अपना संग लऽ गेलाह।[१] आचार्य अद्वैतक गुरु माधवेन्द्रपुरी स्वयं सम्पूर्ण देश मे भ्रमणकय नव-वैष्णव-धर्मक प्रचार कैलन्हि। जतय धरि मिथिलाक प्रश्न अछि, ई एकटा ऐतिहासिक तथ्य थीक जे १५म एवं १६म शताब्दीक आदि भाग मे तीन गोट महान विद्वान निश्चित रूपें वैष्णव धर्म कें स्वीकार कैने छलाह। ई तीनू छथि—परमानन्द-पुरी, विष्णुपुरी ओ रघुपति उपाध्याय।[२] महाप्रभु चैतन्यक संग जे हिनका लोकनिक निकट सम्पर्क छलन्हि तकर उल्लेख चैतन्य चरितामृतकार कृष्णदास कविराज अपन ग्रन्थ मे अनेक ठाम कैने छथि।[३] विष्णुपुरी एवं परमानन्दपुरी कें त वैष्णवतत्वक मूल कें सुस्थिर करबाक श्रेय छन्हि।[४] विष्णुपुरी प्रसिद्ध वैष्णवसन्त माधवेन्द्रपुरीक परम्परा मे पड़ैत छथि तथा दक्षिण भारत सँ भक्ति-धार कें इयह आनलन्हि।[५] परमानन्दपुरी त चैतन्य महाप्रभुक

१. देखू, डा० सी० सेन रचित, बंगाली लेंग्वेज एण्ड लिटरेचर, पृ १३८।

२. देखू, डा० हृषीकेश गोस्वामी लिखित 'मिथिला मे वैष्णव चिन्तन धारा' शीर्षक निबन्ध। पल्लव, अंक-८।

३. देखू, चैतन्य चरितामृत, आदि लीला, नवम परिच्छेद; मध्यलीला, उन्नैसम परिच्छेद।

४. उपरिवत्, आदि लीला, नवम परिच्छेद।

५. देखू, इन्डियन कल्चर, जिल्द—४, पृ० ४२९—४३४ पर डा० बी० एन० कृष्णमूर्त्तिक निबन्ध।

अत्यन्त प्रियपात्र छलथिन्ह[१] एवं रघुपति उपाध्याय क कृष्णलीलाक श्लोक कें सूनि महाप्रभु प्रेमावेश मे पड़ि गेल छलाह ।[२] विद्यापतिक समकालीन कृष्णार्चन चन्द्रिकाक रचयिता रत्नपाणि निश्चित रूपें वैष्णव सन्त छलाह[३] । भैरवसिंहक प्रमुख सभासद वर्द्धमान एवं वाचस्पति, वैष्णव छलाह जनिक संस्कृत मे रचित गोपाल वन्दनाक कतिपय श्लोक अखनहु उपलब्ध अछि[४] । एहि तरहें विद्यापतिक पश्चातो वैष्णव मतक प्रभाव पड़ैत रहल आ' चैतन्यक जीवनेकाल मे, सोलहम शताब्दीक प्रारम्भिक भाग (१५०४ ई०) मे मिथिलाक एकटा रानी द्वारा माधवक आराधनाक हेतु (माधवाराधनाय) भगीरथपुर मे मन्दिर बनबैत पबैत छी[५] । ई अवश्य जे मिथिला मे बंगाल सदृश कोनो धर्मान्दोलन नहि भेल तथापि व्यक्तिगत रूपें एहि भावनाक पूर्ण पोषण भेल । अतः गोविन्ददासक रचना मे स्फुट वैष्णव भावना कें तात्कालिक परिस्थितिक स्वाभाविक परिणाम कहि सकैत छी । पुनः महाप्रभु चैतन्यक व्यक्तित्वं ततेक मुग्धकारी छल तथा हुनक अदम्य भक्ति मे आकर्षित करबाक जे अनन्य शक्ति छल से हुनक प्रभाव क्षेत्र कें बंगभूमि धरि सीमित नहि राखि, देशव्यापी बना देने छल ।

---

१. देखू, डा० सुकुमार सेन, ए हिस्ट्री आफ ब्रजबुली लिटरेचर, पृ० ६१ ।

२. देखू, चैतन्य चरितामृत, मध्यलीला, उन्नैसम परिच्छेद ।

३ देखू, विद्यापति गोष्ठी (हिन्दी संस्करण) ले० डा० सुकुमार सेन, पृ० २२

४ उपरिवत्, पृ० २४

५ पल्लव, अंक—८ ।

अतः महाकवि गोविन्ददास जे महाप्रभुक समसायिक छलाह तथा जनिक हृदय मे वैष्णव भावनाक बीज वर्त्तमान छल, एहि नवीन धर्मान्दोलन सँ कतेक काल धरि फराक रहि सकैत छलाह। फल ई भेल जे महाकविक पंडितोचित अनुशीलन, विद्याक अहम्मन्यता एवं तार्किक प्रवृत्ति आदि सभ किछु राधाकृष्णक लीलादर्शन, लीला आस्वादन एवं लीलाक जयगान मे लिप्त भऽ गेल तथा जाहि काव्य माधुरीक सृष्टि कैलक ओहि मे वैष्णवोचित मधुररसक निष्पत्ति भेल। निस्सन्देह ई पद सभ मिथिला मे ततेक लोकप्रिय नहि भेल परन्तु बंगाल मे अनुकूल वातावरण पाबि वेश पसरि गेल, जनकंठ मे बसि गेल तथा वैष्णव साहित्यक स्थायी सम्पदा बनि गेल। फेर गोविन्ददास बंगाली कवि बुझल जाय लगलाह। परन्तु जेना पहिने निवेदन कैल अछि, गोविन्ददास मैथिल छलाह, हिनक पदक भाषा विशुद्ध मैथिली थीक, ब्रजबोली नहि; एतेक समय बितलो उत्तर भाषागत शुद्धता बनले अछि, ओहि मे कृत्रिमताक भान नहि होइछ। भाषाक ई परिशुद्ध रूप कोनो बंगाली कवि द्वारा अनुकरणक परिणाम नहि भऽ सकैछ अपितु ई सभटा मैथिल कवि द्वारा रचित मैथिलीक शुद्ध रूप थीक।

चैतन्य-प्रवर्त्तित बंगालक नव वैष्णव-धर्म मे राधा कें प्रधान स्थान देल गेल। विद्यापति त अपन काव्य मे राधाक रूप अंकन मे अपन चरम प्रतिभाक उपयोग कैने छथि। एहि दुनू सँ प्रभावित भय गोविन्ददासो अपन काव्य मे राधाक रूप राशिक मनोरम चित्रांकन केलन्हि अछि। राधा कें अवलम्बन कय कविक मानसलोक

मे सौन्दर्य कल्पना जागि उठैत अछि। निम्नलिखित पद मे देखब जे राधाक अंग प्रत्यंगक सादृश्य विभिन्न फूल सँ दय राधा कें वस्तुतः कुसुम वदना बना देलन्हि अछि—

कानन कुसुम तोड़ल किए गोरी।
कुसुमहि सब तन निरमित तोरी॥
आनन हेम सरोरुह भास।
सौरभ श्याम भ्रमर मिलु पास॥
नयन युगल निल उतपल जोर।
सहज सोहाओन श्रवणक ओर॥
अपरुप तिल फुल सुललित नास।
परिमल जितल अमर तरु वास॥
बन्धुक मिलित अधर जह हास।
दशनहि कुन्द कुसुम परकास॥
सभ तनु घटित चम्पक सम गोरा।
पानिक तल थल कमल इजोरा॥

राधाक एहि कमनीय कान्तिक वर्णन करैत कविक दोसर पद अछि—

शरद सुधाकर-मण्डलमण्डन—
खण्डन वदन विकास।
अधरे मिलायत श्याम मनोहर—
चीत चोरायति हास॥

आजु नव श्याम विनोदिनी राइ ।
तनु तनु अतनु-यूथशत सेवित—
लावणि बरणि न जाइ ॥
× × ×
पद पंकज पर मणिमय नूपुर
रणझण खञ्जन भाष ।
मदन मुकुर जनु नखमणि दरपण
नीछनि गोविन्द दास ॥

विद्यापतिक राधा मे जँ यौवनक आनन्दोल्लास एवं चाञ्चल्य अछि त गोविन्ददासक राधा मे प्रेमक तीव्रता तथा एहि लेल दुस्सह कष्ट सहबाक भावना । दुस्सह कष्टक मध्य गोविन्ददासक राधाक प्रम सार्थक ओ पूर्ण भऽ उठैत अछि । राधाक प्रेमक तीव्रता हुनक अभिसार यात्रा मे भेटैत अछि । अभिसारिका राधाक प्रेम महायोगिनीक तपस्या बुझि पड़ैत अछि । एहि अभिसार यात्राक वर्णन करैत गोविन्ददास एक सँ एक उत्कृष्ट पदक रचना कैने छथि । बंगला साहित्य मे त एही लेल हिनका अभिसारेक कवि कहल जाइत छन्हि । अभिसारिणी राधा द्वारा, अभिसार यात्राक पूर्वाभ्यास निस्सन्देह राधाक तीव्र प्रेमानुभूतिक द्योतक थीक—

कंटक गाड़ि कुसुम सम पदतल मंजिर चीरहि झाँपि ।
गागरि वारि ढारि करि पिच्छल चल तहँ अँगुलि चाँपि ॥
माधव तुअ अभिसारक लागि ।
दुरतर पन्थ गमन धनि साधय मन्दिर यामिनि जागि ॥

करयुग नयन मूँदि चलु भामिनि तिमिर पयानक आशे।
कर कङ्कण पन कलि सुख बन्धन सिखय भुजग गुरु पाशे।...

ओर एहि महान साधनाक अनन्तर राधा, कृष्ण सँ अभिसारक लेल प्रस्तुत होइत छथि। घनघोर वर्षा भऽ रहल अछि, रहि रहि कऽ बज्रपात होइत अछि, दामिनीक दमक दशो दिशा केँ दग्ध कऽ देमय चाहैत अछि, पथ पर आँखि स्थिर नहि रहैत अछि। किन्तु प्रियतम मिलनक प्रबल उत्कंठा राधा केँ हरि अभिसार पथ पर अग्रसर हैबा लेल प्रेरित कऽ दैत छन्हि—

घन घन झन झन बजर निपात।
शुनइते श्रवणे मरम जरि जात॥
दश दिश दामिनी दहन बिथार।
हेरइते उचकइ लोचन-तार॥

से एहि बिकाल मे अभिसार पथ पर अग्रसर राधा केँ सखी लोकनि वर्जना करैत छथिन्ह। परन्तु संसारक कठिन सँ कठिन बाधा एहि प्रेम सहचरी केँ बाट रोकबा मे असमर्थ रहैत अछि। छूटल वाण केँ के घुमा सकैत अछि?

राधा, कृष्णक प्रेम मे विभोर छथि। कृष्णक प्रति अपन अबिरल अनुरागक कारणें ओ श्याममय भऽ गेलीह। राधाक एहि श्याममय स्वरूपक चित्रांकन कविक निम्न पद मे भेल अछि—

लोचने श्यामर, वचनहि श्यामर
श्यामर चारू निचोल।

श्याम हार हृदयमणि श्यामर
श्यामर सखी करु कोर ॥

माधव, इथे यदि बोलवि आन।
अचपल कुलवती—मति उमतायलि
किए तुहुँ मोहिनी जान ॥...

पुनः राधाक ओहि मनमोहन श्यामसुन्दरक रूप-छवि केँ अंकित करैत कविक पद अछि—

नन्दनन्दन — चन्दचन्दन
गन्धनिन्दित अंग।
जलद सुन्दर कम्बुकन्धर
निन्दि सिन्धुर - भंग ॥
प्रेम आकुल गोप गोकुल—
कुलजकामिनि कन्त।
कुसुम रञ्जन — मञ्जु - वञ्जुल—
कुञ्ज मन्दिर सन्त ॥...

अन्ततः अभिसार पथक एहि महायोगिनीक यात्रा पूर्ण होइछ। श्यामसुन्दरक सामीप्य सुख सँ पूर्वक समस्त दुखक अवसान भऽ जाइछ। अपन अभिसार यात्राक वर्णन करैत कृष्णक प्रति राधाक उक्ति अछि—

माधव की कहब दैब विपाक।
पथ आगमन कथा कतो कहितहु
जौ होइत मुख लाख ॥

मन्दिर तेजि जब पद चारि अयलहुँ
निशि हेरि कम्पित अंग।
× × ×
तुअ दरशन आश किछु नाहि जानलु
चिर दुख अब दुर गेल॥
तोहर मुरलि जब श्रवण प्रवेशल
छोड़ल गृह - सुख आश।
पन्थक दुख तृण कय नहि गनलहु
कहतह गोविन्द दास॥

तथा एहि मिलन आमोदक वर्णन करैत कविक पद अछि—

राधा माधव दुहु तनु मिलल उपजल आनन्दकन्द।
कनकलता तमाल जनु बेढ़ल राहु धरल जनि चन्द॥
जनु कमले भ्रमर रहु माति।
जलधर कोरे तड़ित लतावलि रतिपति बिदरय छाती॥
नीलमणि रतन कांचन किये शोभन झामरु भेल मुख जोति।
श्रम भरे स्वेद विन्दु-बिन्दु चूअत जैसन जलद बिथारल मोति॥
नारि पुरुष दुहु लखय न पारय अपरुप दुहु जन रंग।
गोबिन्ददास कह निति ऐसन उपजल रस परसंग॥

पुनः माधवक स्नेहालिंगन मे मदालसा राधाक चित्रांकन करैत गोविन्ददासक उक्ति छन्हि—

श्यामक कोर यतन धनि सूतल मदन अलस दुहु भोर।
भुज-भुज बंधन निविड़ आलिंगन जैसन कांचन मनि जोर।...

राधा-कृष्णक मिलन शृंगारक पृष्ठभूमि मे वसन्तक प्राकृतिक सुषमा कवि दृष्टि सँ नहि छूटि पबैत अछि। और एहि ऋतु मे त वृन्दावनक शोभाक कोनो ओर-छोर नहि रहैत अछि। फेर युगल किशोरक रासलीला सँ त ओहि मे आनन्दक वर्षा होमय लगैत अछि—

शिशिरक अन्तर आयल वसन्त।
फूलय कुसुम सब कानन अन्त।
श्री वृन्दावन पुलिनक रंग।
भोरल मधुकर कुसुमक संग।
नव नव पल्लव शोभित डार।
सारिक शुक पिक गाव रसाल।
ताहि सब रंगिनि मिलि एक संगे।
भेटलि नागरि नागर रंगे।
विहरय कानन युगल किशोर।
नाचति गाबति रंगिनि जोर।
बाजत गावत कत कत तान।
गोविन्ददास अवधि नहि जान।

तथापि प्रेमक दिव्यताक अभिव्यक्तिक लेल जेना विरहक अग्नि-परीक्षा आवश्यक अछि। से गोविन्ददासक राधा एहि सँ उबरि नहि सकलीह। कृष्ण जखन मथुरा चल जाइत छथि तथा पुनः वृन्दावन अयबाक आशा क्षीण भऽ जाइत छन्हि त राधाक विरहजन्य पीड़ा तीव्रतम भऽ उठैत अछि—

कानु-कानु करि फुकरै सुन्दरि
दिन रजनी नहि जानि ।
अंगुलिक मुँदरि सोइ भेल कंकण
कंकण गीमक हार ॥
चाँदकला सम दिन-दिन क्षीण भेल
हास श्वास भेल सार ॥

विरह विधुरा कामिनी दिनानुदिन इन्दुकला सदृश क्षीणकाय भऽ जाइत छथि। संयोगक मोदाभिभूत राधिका वियोगो मे ओही दशाक अनुभूति चाहैत छथि। इयह अभिलाषा त हुनक जीवनपथक सम्बल छन्हि—

जहँ पहु अरुण चरण चल जात।
तहँ-तहँ धरणि होअओ मोर गात॥
जे दरपण पहु निज मुख चाह।
मोर अङ्ग जोति होअओ तसु माँह॥

राधाक एकान्त कामना छन्हि जे हुनकर शरीरक पाँचो तत्व जे जीवितदशा मे संयुक्त भय भगवानक सेवा लागल रहल अछि से मृत्योपरान्तो विमुक्त भय भगवानेक सेवा मे लिप्त रहय जाहि सँ हुनक जीवन सम्पूर्णरूपेण भगवान कें समर्पित भऽ जाइन्ह। ई प्रेमक पराकाष्ठा थीक जतय प्रेमीक लेल निजी अस्तित्व कें पूर्णत: विसर्जित क देल जाय। एहि दिव्य प्रेमक आविर्भाव सं सभ प्रकारक वासनाक अवसान भऽ जाइछ। तथापि एहि दारुण विरहक पश्चात जखन कृष्णक संग पुनर्मिलन होइत छन्हि त प्रेमऔचित्यक

अद्भुत परिस्थिति उपस्थित भऽ जाइत अछि। श्यामक कोर मे सूतलि सुनागरि कें जेना एहि विषयक कोनो ज्ञान नहि होन्हि—

रोदति राधा श्याम करि कोर।
हरि-हरि कहाँ गेल प्राणनाथ मोर।
जानलु रे सखि प्रेम अगेयान।
नागर कोरे नागरि नहि जान।

वस्तुतः गोविन्ददासक भक्तकवि निरन्तर राधा-कृष्णक लीला-गान मे लिप्त रहल। फलतः नायक-नायिकाक सम्भोग-विप्रलम्भ विषयक विविध चित्र सँ हिनक गीतावली सुसज्जित अछि। प्रेमक विभिन्न परिस्थितिक एवं मनोदशाक मार्मिक विश्लेषण सँ हिनकर रचना सुष्ठ एवं पुष्ट भेल अछि।

गोविन्ददासक काव्य प्रतिभा विद्यापति द्वारा अनुप्राणित छल। दुनू रसविदग्ध कवि एवं साहित्य शास्त्रक असमान्य पण्डित छलाह। तथापि देखब जे दुनूक प्रकाशभंगी मे भिन्नता अछि। खास कय गोविन्ददास मे भाषा विषयक एहन विशेषता परिलक्षित होइछ जे विद्यापति सँ तुलना करैत अन्तरबोध करबौत अछि। गोविन्ददास अपन शब्दविन्यासक लेल ख्याति प्राप्त छथि। एतेक धरि जे "पद कें ललित, श्रुतिमधुर, अर्थानुग्रही एवं समता संयुक्त बनेबा लेल यदि शब्द कें तोड़ह, पड़लन्हि अर्थ दुरियो भऽ गेलन्हि, ओकर स्वरूप विकृतो करय पड़लन्हि तथा अपन हृदयक भाव झाँपलो भऽ गेलन्हि तथापि गोविन्ददास अर्थक प्रसादक हेतु शब्दक विन्यास नहि

दुरि कैलन्हि ।'' निम्न पद मे देखब जे राधाक रूप छटा शब्दजाल मे कोन तरहें ओझरा गेल अछि—

कुंजर गामिनि मातिम दामिनि श्याम निहारिनि चमकनि रे ।
आभर भारिणि नव-अनुरागिणि रस-आवेशिनि तरङ्गिनि रे ।
अङ्ग-तरङ्गिनि अधर-सुरङ्गिनि सङ्गिनि नव-नव रङ्गिनि रे ।
कुञ्चित केशिनि निरुपम वेशिनि रस आवेशिनि भङ्गिनि रे ॥

वस्तुत: गोविन्ददासक पद मे शब्द विन्यासक जे प्रवृत्ति ओ प्राचुर्य्य अछि तकर इयह कारण जे ओ गीत मे गेयधर्मिता के प्रमुखता दय ओकरा श्रुतिमधुर बनौलन्हि । ई निश्चय बंगालक वैष्णव आन्दोलनक प्रभाव छल । चैतन्य प्रवर्त्तित वैष्णवधर्मक अभिन्न अंग छल कीर्त्तन । एहि लेल कविलोकनि कीर्त्तनक पदक रचना कैलन्हि । गोविन्ददासक पदरचना सँ एकर स्पष्ट आभास भेटत; जेना समस्त पदक रचना झालि ओ मृदंगक संग गाओल जैबाक लेल भेल हो । इयह कारण छल जे बंगालक कीर्त्तन मण्डली मे गोविन्ददासक पदक बड़ आदर भेल ।

परन्तु शब्दाडम्बर, ओकर विन्यास ओ चमत्कार देखि ई कहब जे गोविन्ददासक पद मे अर्थ नहि अछि से युक्तियुक्त नहि हैत । पूर्व मे हिनक उत्कृष्ट पद सँ उद्धरण देल जा चुकल अछि जाहि सँ हिनक काव्यक भावपक्ष पर प्रकाश पड़ैत अछि । हँ, अनेक पद एहनो अछि, जाहि मे अर्थक दुरूहता अछि, संगत अर्थ लगायब श्रमसाध्य अछि, शब्दक आडम्बर मे अर्थक विमलता मुनायल अछि, परन्तु जखन पदक अर्थ आगि जाइत अछि तखन ओकर रसबोध मन कें

परितृप्त कऽ दत अछि। यद्यपि विद्यापति सदृश हिनक रचना मे प्रसादगुण नहि भेटत तथापि पद लालित्य उच्चकोटिक अछि। वस्तुतः शब्दालङ्कारक प्रति आसक्ति हिनक स्वभाव भऽ गेल अछि। रूपक-योजना त हिनक कलापक्ष कें अतिशय समृद्ध बनौलक। हिनक पदक प्रसंग निम्नलिखित उक्ति सर्वथा सार्थक अछि—

रसना रोचन श्रवण विलास।
रचइ रुचिर पद गोविन्ददास॥

गोविन्ददास भक्त कवि छलाह तथा अपन भक्त विह्वलताक कारणें, विद्यापतिक परवर्त्ती कविलोकनि मध्य हुनक विशिष्ट स्थान छन्हि। भगवान गोविन्दक एहि अनन्यभक्तक सुमधुर रचनाक प्रसंग हुनकहि शब्द मे कहल जा सकैछ—

कोटिहि कोटि श्रवण फल पाइय
सुनइत आनन्द लागल धन्धे।



मनबोध एवं 'कृष्णजन्म'

अठारहम शताब्दीक मैथिली साहित्येतिहास मे मनबोध, महत्त्वपूर्ण स्थानक अधिकारी छथि। हिनक लिखल एकहिटा ग्रन्थ 'कृष्णजन्म' उपलब्ध अछि तथा इयह एकटा ग्रन्थ हिनक अक्षय कीर्त्तिक प्रतिमान थीक। वस्तुतः एहि ग्रन्थ द्वारा मैथिली मे नव काव्य परम्पराक सूत्रपात होइत अछि। विद्यापति द्वारा प्रवर्त्तित संगीत प्रोत मैथिली काव्यधारा, कखनहुत स्फुट पदक रूप मे त कखनहु नाटक मे गुम्फित भऽ कऽ प्रवाहित होइत रहल। एतेक अवश्य जे मैथिलीक ई गीतिकाव्य वेश लोकप्रिय भेल परन्तु एकर लोकप्रियता सँ काव्यक रूपगत विकासक बड अहित भेल। संगहि कविलोकनि विद्यापतिक 'नाअर मन' मोहन भाषाक मर्यादा कें नहि निबाहि सकलाह एवं काव्यधारा एकटा रूढ़िबद्ध परम्परा बनि कऽ रहि गेल, जाहि मे रूप-विलास, मान-अभिसार, मिलन-विरह विषयक पदक प्रधानता रहल। एकहि विषय पर बेर-बेर रचना भेने एकगोट विचित्र पुनरावृत्तिक बोध हैत। फलतः भाव, भाषा ओ शली, सभ दृष्टियें साहित्यक रूप वर्गीय भऽ गेल छल एवं लगैत छल जेना काव्यधारा रुद्ध भऽ गेल हो तथा साहित्यक सभटा जल एकटा सरोवर मे संचित भऽ गेल हो। साहित्यक एही विषम परिस्थिति मे मनबोधक आविर्भाव भेल। ओ अपन कृति 'कृष्णजन्म'क रूप मे

गीति काव्य सँ पृथक आख्यान काव्यक रचना कलन्हि तथा एहि लेल सर्वधारणक बोधगम्य लोकभाषाक प्रयोग कैलन्हि। रूढ़ काव्यात्मक शृंगार सँ विरत भए ओ अपन काव्य कें भक्ति ओ बात्सल्यक चित्रावली सँ सजौलन्हि एवं शृंगारक स्वाभाविक ओ संयमित रूप उपस्थित कय यशस्वी भेलाह।

मिथिला मे 'कृष्णजन्म'क बड़ आदर अछि तथा एहि ग्रन्थ कें भक्त समाज द्वारा पढ़ल जाइत अछि। एहि रचनाक अनेक पाण्डुलिपि उपलब्ध रहलाक संगहि ई कतिपय विद्वान द्वारा सम्पादित भय प्रकाशित भेल अछि। सर्वप्रथम ग्रीयर्सन साहेब एकर दस सर्गक सम्पादन कय ओकर अनुवाद अंग्रेजी मे कैलन्हि जे बंगालक एसियाटिक सोसाइटीक जर्नल मे १८८२ ई० मे प्रकाशित भेल। तत्पश्चात् 'कृष्ण जन्म'क एकगोट संस्करण यूनियन प्रेस दरभंगा सँ बहरायल जकर सम्पादन पं० धरेश्वर झा कैने छलाह। सन् १९३४ मे महामहोपाध्याय डा० उमेश मिश्र एहि सम्पूर्ण ग्रन्थक सम्पादन कैलन्हि जे कवि परिचय तथा पाठभेदादि अन्य कतिपय विषय सँ पूर्ण भूमिकाक संग प्रकाशित भेल[1]। पुन १९४८ ई० मे एक गोट नव संस्करण पं० रमानाथ झा द्वारा सम्पादित भय मिथिला प्रेस दरभंगा सँ प्रकाशित भेल।

कवि मनबोधक यथार्थ परिचय अद्यावधि अनिर्णीत अछि। हिनक वंश परिचयक प्रसंग महामहोपाध्याय उमेश मिश्र दूगोट विवरण

१. एकर दोसर संस्करण, तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित भेल अछि।

देने छथि। एहि मे एकटा मत अछि जे ओ मंगरौनी ग्रामक निवासी छलाह। एहि आधार पर हिनक जन्म पलिवारक जमदौली मूलक योग्य वंश मे भेल छलन्हि। हिनक पिता सोनमणि झा, सुप्रसिद्ध ज्योतिषी छलथिन्ह। मनबोध सँ छोट दू गोट भाय रहथिन्ह जनिक नाम क्रमशः ज्योतिषी भैअन झा एवं कविलाल प्रसिद्ध झटुला झा छलन्हि। जँ इयह लालकवि, गौरी स्वयंवरक रचयिता होथि त हिनका महाराज नरेन्द्र सिंहक समकालीन मानल जैत। प्रवाद अछि जे मनबोध, भाषाकविक अतिरिक्त ज्योतिषीयो छलाह जैँ लऽ कऽ पलिबाड़य मनबोध झा ज्योतिर्विद कहल गेल अछि।

पुनः दोसर मतक आधार पर मनबोधक अपर नाम भोलन झा छलन्हि। ई पगुलबाड़ बढ़िआममूलक जमसमवासी चानझाक बालक छलाह। पाँजिक पोथी मे हिनका 'भाषाकवि भोलन' कहल गेल अछि। ई श्रोत्रिय वंशक छलाह तथा बीजी पुरुष सँ हिनक चौदहम स्थान पड़ैत छन्हि। हिनक विवाह भिखारी झाक कन्या सँ भेल छलन्हि जाहि सँ एकमात्र पुत्र दयानाथ झा भेल छलथिन्ह। दयानाथ झा निस्सन्तान छलाह।

परन्तु उपर्युक्त दुनू परिचय सँ कृष्णजन्म कर्त्ताक परिचय कोन थीक तकर निर्णय महामहोपाध्यायजी नहि कैलन्हि अछि। पं० श्री रमानाथ झा एकगोट अन्य मनबोधक उल्लेख कैने छथि जे नरोएने मलिछाम मूलक जटेश झाक बालक छलाह। तथापि एतबहि सँ रमानाथ बाबू स्वयं ई निर्णय करबाक पक्ष मे नहि छथि जे 'कृष्णजन्म'क रचयिता इयह मनबोध थिकाह।

एतेक अवश्य जे ग्रीयर्सन साहेब अपन ग्रन्थ मे एकरा भोलनापर पर्यायक मनबोध झा रचित कहने छथि जे वढ़िआमवासी पबौलीमूलक चान झाक बालक छलाह। यूनियन प्रेसक संस्करण मे एहि काव्य कें 'भोलन झा' रचित कहल गेल अछि। महामहोपाध्याय जी सेहो एहि परिचयक खण्डन नहि कैने छथि। अतः यावत् पर्यन्त एहि विरुद्ध कोनो संगत प्रमाण नहि उपलब्ध होइत अछि तावत् एहि विषय कें स्वोकार करब समुचित हैत जे कृष्णजन्म कर्त्ता मनबोध ओएह थिकाह जनिका पाँजिक पोथी मे 'भाषाकवि' भोलन कहल गेल अछि। हिनक एहि परिचय सँ एतबा स्पष्ट अछि जे "पितृपक्ष मे त नहि, किन्तु हिनक मातृपक्ष मे मिथिला भाषाक सेवाभाव ओ कवित्व प्रतिभा पूर्णरूपें विद्यमान छलैन्हि। ई छलाह दौहित्र 'संकराढ़ी परहट' मूलक महामहोपाध्याय रैआ झाक जे 'कवीन्द्र' रघुनाथ झाक बालक ओ 'रुक्मिणी स्वयंवर' नामक प्रसिद्ध मैथिली नाटकक रचयिता महामहोपाध्याय रमापति उपाध्यायक दौहित्र छलाह। म० म० रैआ झाक वैमात्रेय भाए म० म० देवानन्द झा रचित एक गोट नाटक 'उषाहरण' अछि सेहो प्रसिद्ध अछि[1]।" एहि तरहें मनबोध मे कवित्व प्रतिभा वंश संस्कार रूपें निहित छल। डा० ग्रीयर्सन लिखने छथि जे मनबोधक देहान्त १७८८ ई० मे भेलन्हि[2]। एहि रूपें मनबोधक समय अठारहम शताब्दी निश्चित होइत अछि।

१. कृष्ण-जन्म—पं० रमानाथ झा द्वारा सम्पादित, पृ० ३.।

२. जर्नल एसियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, १८८२–८४।

मनबोध रचित कृष्णजन्म, अपन नाम ओ विस्तार दुनू दृष्टियेँ विवादग्रस्त अछि। वस्तुतः ग्रन्थक आदियेमे कविक उक्ति छन्हि—

हमहु कयल अछि मन बड़ गोट ।
कृष्णजन्म परिनय नहि छोट ॥

अतः कविक अभिलाषा अपन काव्य केँ कृष्णक जन्मकथा धरि सीमित नहि रखबाक छलन्हि अपितु ओ हुनक परिणय कथा सेहो लिखय चाहैत छलाह। फलतः ग्रन्थक अठारहो अध्याय मे से पूर्ण नहि भेल अछि। एकर वर्ण्यविषयो पर विचार कैला उत्तर देखब जे एहि मे भगवान कृष्णक विविध लीलाक वर्णन अछि। एहि मे जन्मकथाक अतिरिक्त बहुत राश अवान्तर विषयक सन्निवेश अछि। प्रवाद अछि जे मनबोध समस्त हरिवंशक भाषानुवाद कैने छलाह। ग्रीयर्सन साहेब, एही लेल प्रस्तुत ग्रन्थक नाम हरिवंश देने छथि। कतिपय पाण्डुलिपियो मे हरिवंशे नाम भेटैत अछि। मुदा अन्य प्रकाशित संस्करण मे एकर नाम कृष्णजन्मे देल गेल अछि।

परन्तु एहि लेल ई कहब उचित नहि हैत जे ग्रन्थक नामकरण अनुपयुक्त अछि। एहि मे दसम अध्याय धरिक कथाक आधार श्रीमद्भागवतक दशम अध्याय धरि अछि तथा एगारहम अध्याय सँ अन्तधरिक कथा हरिवंश विष्णुपर्व केँ अनुसरण कय लिखल गेल अछि। परन्तु मात्र पौराणिक कथाक अवतारणा कवि केँ अभिप्रेत नहि छलन्हि। ग्रन्थरचनाक पाछाँ निश्चित रूपेँ एकगोट प्रबल धार्मिक प्रेरणा छलन्हि। फलतः कवि प्रस्तुत कथा केँ आधार बनाय एहि तथ्यक उद्घाटन कैलन्हि जे कृष्णावतार किऐक भेल ?

वास्तव मे "यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानम धर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम्" एवं "परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे" मे निहित निदर्शन कविक उद्देश्य रहलन्हि। फेर कृष्णावतार भेल एवं अपन विविध लीलाक क्रम मे ओ पापी सभक संहार कय पृथ्वीपरक भार हल्लुक कैलन्हि। ई कृष्णावतारक माहात्म्य छल जे—

भूमिक भार उतरल आइ।
हरि जत हनल तत गनलो ने जाइ॥

से भगवानक अवतार महिमा एहि सँ उत्तम रीतियेँ अन्यथा नहि देखौल जा सकैत छल। ग्रन्थक नाम 'कृष्णजन्म' रखबाक सार्थकता एही सँ सिद्ध होइत अछि।

जतय धरि ग्रन्थक विस्तारक प्रश्न अछि, ग्रीयर्सन साहेबक संस्करण एवं यूनियन प्रेसक प्रति मे मात्र दश गोट अध्याय संकलित भेल अछि; परन्तु महामहोपाध्याय जीक संस्करण मे अठारह गोट अध्याय अछि। ओना त समस्त कृष्णावतारहुक वर्णन अठारहो अध्याय धरि समाप्त नहि भेल अछि, प्रत्युत दस अध्याय धरि जे कथाक्रम अछि से अवशिष्ट अंश मे नहि अछि। एगारहम अध्याय सँ भाषोक स्वरूप स्थिर नहि भेटत तथा देखब जे ओ ब्रजभाषा भाराक्रान्त अछि। साधारणतया दसमहि अध्याय धरि हस्तलिखित प्रति सभ भेटल अछि। ततबे धरि प्रत्येक अध्यायक अन्त मे "इति श्री भागवत पुराणे" सेहो लिखल भेटैत अछि। कवि केँ जाहि कृष्णावतारक वर्णन करक छलन्हि, तनिक चरितक मुख्य अंश एतय

धरि चित्रित भऽ जाइत अछि। अतः दसम अध्यायक पश्चातक अंशक प्रामाणिकता संदिग्ध अछि तथा जँ ई कविक रचना थीको त एकर विशुद्ध पाठ नहिं भेटैत अछि। एकरहु संभावना अछि जे मनबोध रचित ई अंश लुप्त भऽ गेल हो अथवा नष्ट भऽ गेल हो तथा केओ आन कवि मनबोधक नाम दय, एहि अवशिष्ट अंशक पूर्ति कने हाथि।

ओना तऽ मैथिली काव्य-धाराक सुदीर्घकालीन परम्परा रहलैक अछि तथा जेना पूर्वा मे निवेदन कैल अछि, मनबोध कें एहि मे नवीनता आनबाक श्रेय छन्हि। "मनबोध प्रथम कवि छलाह जे अपन कृष्णजन्म मे विशुद्ध लोकभाषा मे शृंगार रस सँ शून्य भक्ति रसमय एक छन्द मे जे रागताल प्रभृति गीतक विषय सँ रहित अछि अपन एक गोट नूतन शैली मे काव्यक रचना कलन्हि।" मैथिली मे मनबोधक ई रचना प्रबन्ध काव्यक उदाहरण उपस्थित करैत अछि। एहि रूपक ई प्रथमहिं ग्रन्थ थीक तथा महाकाव्यक समस्त लक्षणक अभावहु मे विद्वान लोकनिक दृष्टि मे मैथिलीक पहिल महाकाव्य कहि कऽ मान्य अछि। सत्य त ई जे मैथिलीक गीतिधारा कें मनबोध छन्द-बन्ध मे बान्हि निबन्धात्मक रूप देलन्हि। फलतः काव्यक संगीतप्रोत एकरसता सँ उचटल मन कें एहि नव रूप मे वेश स्वारस्य भेटल। समस्त 'कृष्ण-जन्म'क रचना एकहि छन्द मे भेल अछि तथा ई छन्द चौपाइ थीक। संगीततत्वक प्रधानता जतय साहित्य कें आच्छादित कऽ लेने छल ओतय मनबोध द्वारा प्रयुक्त एहि पाठ्य छन्द सँ साहित्यिक रसतत्व कें नवरूप मे प्रकाश

मे अयबाक अवसर भेटलैक। अपन एहिविशेषता सभ सँ कृष्ण-जन्म बेश प्रचार पौलक। डा० बुकनन जे १८१० ई० अपन पूर्णियाक विवरण प्रस्तुत कैलन्हि, एहि काव्यक उल्लेख मिथिलाक सर्वाधिक लोकप्रिय काव्य कहि कैने छथि। बुकनन साहेब मनबोध रचित एक गोट और काव्य दानलीलाक उल्लेख कैने छथि जे शृंगार-रसक काव्य छल मुदा आब उपलब्ध नहि अछि।

'कृष्णजन्म' सँ जाहि तरहेँ मैथिली मे नव काव्यशैलीक प्रवर्त्तन होइछ ताही तरहेँ "काव्य गुणहु मे ई ग्रन्थ तेहेन मधुर, ललित, प्रसाद गुण सँ परिपूर्ण, सरल ओ रोचक भाषा मे निर्मित भेल अछि जे उचिते एकर ओतेक प्रचार ओ सम्मान होइत आयल अछि।"

कृष्ण-जन्म एक गोट वर्णन प्रधान काव्य ग्रन्थ अछि। काव्यक रोचकता केँ बढ़ेबा मे कथोपकथन बड़ पैघ साधन होइछ। परन्तु से कथोपकथन एहि ग्रन्थ मे नहि भेटत। एहि मे कवि वर्णनात्मक शैली मे कथाक उल्लेख करैत गेलाह अछि। तथापि एहि वर्णन मे कविक सहृदयता ताहि रूपेँ मिश्रित भऽ गेल अछि जे वर्णित वस्तु अत्यधिक मर्मस्पर्शी ओ प्रभावोत्पादक भऽ उठल अछि। कृष्णक बालचेष्टाक जे वर्णन प्रस्तुत ग्रन्थ मे उपलब्ध अछि तकर दृष्टान्त अन्यत्र नहि भेटत। कविक निम्नपंक्ति मे बालकृष्णक रूप सजीव भऽ उठल अछि—

कतो एक दिवस जखन बिति गेल।
हरि पुनु हथगर गोड़गर भेल॥

से कोन ठाम जतय नहि जाथि ।
कय बेरि अंगनहुँ सँ बहराथि ॥
द्वार उपर सौँ धरि-धरि आनी ।
हरखथि हंसथि जसोमति रानी ॥
कय बेरि आगि हाथ सँ छीनु ।
कय बेरि पकला तकला बीनु ॥
कय बेरि साप धरय पुनि जाथि ।
कय बेरि चून दही वदि खाथि ॥

छोट बालकक स्वभाविक विकासक निदर्शन मे ई पद वड़ उत्तम अछि। वर्णनक इयह कौशल अन्यत्रो उपलब्ध अछि। कृष्णक रूप सौन्दर्यक चित्रण मे कवि प्रकृति सँ उपादानक संचय कैलन्हि अछि, जे हुनक कल्पना-शक्तिक परिचायक थीक—

ताहि बीच देखल आनन्दकन्द ।
जनि उडुगन बिच पूरनचन्द ॥
कनक मुकुट तेहि जगमग जोती ।
पीअर बसन दसन गजमोती ॥
नव जलधर अपराजित फूल ।
अतिसी कुसुम गात सम तूल ॥
मुकुटक निकट मयूरक पाँखि ।
सरदक नलिन मलिन करु आँखि ॥
मकराकृत कुन्डल दुहु कान ।
से छवि कवि कह गुनक निधान ॥

हार हृदय बैजन्तिक नीक ।
ओहन दोसर ककरहु नहि थीक ॥
सहस वदन हो त ओ रूप कहिअ ।
देखइत मन होअ देखितहि रहिअ ॥

और जतय-जतय प्रकृति चित्रणक अवसर भेटलन्हि अछि, कविक कल्पना अपन परम्परागत स्वरूपक परिचय दैत अछि। एक स्थल पर अन्धकारक वर्णन करैत कविक इयह रूप देखबाक लेल भेटत। कृष्णक जन्मक रातिक निविड़ अन्धकारक वर्णन करैत कविक उक्ति छन्हि—

सुइ लय बेधिअ गाँथिअ ताग ।
हाथ छुबिअ तओं हाथहि लाग ॥
गरजि सघन घन बरिसय वारी ।
तैं फनिपति फना देलन्हि पसारी ॥
लागल झड़ी भुलल सभ दीग ।
पशु पच्छी सब परल अदीग ॥
सूर्य सुधाकर खोजलौं ने पाबिअ ।
कयल कुमुद निसि बासर जनिअ ॥

कविक वस्तु विन्यासो मे एही कल्पना शक्तिक विकास देखब। पृथ्वी पर सँ पापक भार हल्लुक करबा लेल कृष्णावतार भेल छल। परन्तु एहि घटनाक उल्लेख कवि रूपकक माध्यमे कैने छथि। असुरक अत्याचार सँ लबलि धरणी, अत्यन्त व्याकुल भय, गाइक रूप धय सुरपुर गेलीह तथा विष्णुक निकट अपन कष्टक निवेदन

कैलन्हि। पृथ्वीक एहन दयनीय रूप देखि हरि पृथ्वी पर अवतरित भय भूमि भार हरबाक बचन देलथिन्ह—

धरती भार बेआकुलि भेली।
सुरभिरूप धय सुरपुर गेली॥...
भार दुबरि तन थर-थर काँप।
बजैत नोर नयन दुहू झाँप॥..
सर्वंसहा नाम सँ आज।
सपथ करिअ हम अयलहुँ वाज॥...
करुनामय कें करुना भेल।
धैरज बहुत धरनि काँ देल॥

वस्तुतः गोमाताक रूप मे सर्वसहा पृथ्वीक कल्पना हमरा भारतोय संस्कृति एवं 'धर्मक 'मूल मे लऽ जाइत अछि। गोमाता त जेना हमर धर्मक प्रतीक हो तथा एही 'धर्मसंस्थापनार्थाय' कृष्ण अवतार ग्रहण कैलन्हि। कविक ई चित्रात्मक वर्णन निस्सन्देह घटना विन्यास मे चमत्कारक समावेश कऽ देलक अछि। ग्रन्थक आदिये मे गोमाताक स्मरण जेना भगवान कृष्णक गो प्रेमक पूर्वाभास हो।

कृष्णक अलौकिक रूपक प्रति मनबोध एक गोट भक्तक विह्वलता लय प्रकट होइत जथि। अतः कृष्णक बाललीला वर्णन मे "कौशल चलथि मारिकहु चालि" कहि एकर संकेत देब नहि विसरैत छथि तथा स्थान-स्थान पर कृष्ण चरितक महिमा दिश लोकक ध्यान आकृष्ट करैत छथि, जेना गोबर्द्धन-धारणक प्रसंग हुनकर कहब छन्हि—

जे गोवर्द्धन पढ़ मन लाय।
भव सागर तरि हरिपुर जाये॥

एहन-ऐहन ठाम मनबोधक रूप काव्य-प्रणेताक नहि अछि अपितु एक गोट भक्तक अछि। और इयह कारण थीक जे कथाक इतिवृत्त मे कवि रासलीलाक महत्त्वपूर्ण उपाख्यानक वर्णनक अवसर बाहर कऽ लैत छथि—

सारद ससधर जगमग राति।
देखि हरि गेलाह मनोरथ माति॥
राधा पदुमिनि महरो ओइलि।
संग एक जूथ सुमन लय आइलि॥
वृन्दावन बिच भय गेल रास।
ओहि दिन राति ओतहि मेल बास॥
दुइ गोपी बिच एक मुरारी।
दुइ कृष्णक बिच एकहक नारि॥
एँ परि रासक मण्डल भेल।
केओ कहए निसि जुग बिति गेल॥

कृष्ण जन्मक प्रसंग में ई स्मरण राखक थीक जे एकर आधार भागवत तथा हरिवंश रहितहुँ एहि मे श्रृङ्गारयुक्त वर्णनक अभाव अछि। मैथिली-पदावली साहित्य सँ तुलना मे एहि प्रकारक विलक्षणता एकमात्र एही काव्य मे भेटत। यदि कोनो ठाम ब्रजबाला लोकनिक कृष्णक प्रति हृदयानुराग कें चित्रितो कैल गेल अछि त ओहि मे काम भावनाक अल्पता एवं कारुण्यक प्रधानता अछि। यथा कृष्ण वियोग सँ व्यथित व्रजवनिता लोकनिक निम्नचित्र कतेक अनुभूतिमय अछि,

गाविन्द गमन सुनल ब्रजनारी।
जे छलि जतहि कौसलि हिअ हारी॥
फूगल केस माथ नहि झाँप।
लागलि सभ मिलि करय विलाप॥

फेर हुनक मनोवेदना निम्नपंक्ति मे अत्यन्त कारुणिक भऽ उठैत अछि,

तखन सभहु मन ई प्रतिभसल।
कर सों ससरि परसमनि खसल॥
मधुपुर रमनि जखन हरि देखती।
जीवन जन्म सफल कय लेखती॥
ई कहि झाँखथि सुमरथि गून।
हरि बिनु नगर सगर भेल सून॥

कृष्ण सदृश स्पर्शमणिक सम्पर्क मे जेना हिनका लोकनिक तुच्छ नारी जीवन गौरवयुक्त छल। श्रीकृष्ण की गेलाह जे हिनका लोकनिक सर्वस्वधनेक हरण भऽ गेल। श्रीकृष्णक अभाव मे जेना समस्त नगर श्रीहीन भऽ गेल हो।

तथा नारीक जननी रूप त एहि काव्यक उल्लेखनीय विषय थीक। मैथिली काव्यक प्रेमिका नारी सर्वप्रथम मनबोधेक काव्य मे मातृरूप मे चित्रित होइत छथि। कृष्णक बालछवि उतारैत काल कवि यशोदा माता केँ नहि बिसरत छथिन्ह। शिशुक प्रति नेह-छोह, दुलार-मलार, उत्सुकता-दुश्चिन्ता आदि मातृ सहज समस्त मनोभाव कविक शब्द रूप पाबि काव्यक अनेक पृष्ठ केँ उद्भासित

कने अछि। पूतनावधक प्रसंग मे 'जसोमतिक'क विकलता सर्वथा मातृभावनाक बोधक अछि—

एक दिन जसोमति निन्द अलसाय।
सुति रहली हरि हृदय लगाय॥
नन्द महरि कां सुतला जानि।
पुतना तखन तुलाएलि आनि॥
सर सर कए घर पैसलि धाय।
बसलि विख दुध देलक पिआय॥
हरि भरि पेट पिउल दुध हरषी।
सोनित सहित प्राण लेल करषी॥
आरतनाद बहुत बड़राए।
कटला तरु जकाँ खसु अड़राए॥
सबहु देखलअनि जे छल जागल।
तारक तरु जनि लबनी लागल॥
तखन जसोमति निज सुत लेल।
आगे माइ आगे माइ अजगुत भेल॥

कृष्णक बाललीला सँ प्रभावित एक दिश 'हरखथि हँसति जसोमति रानी' त दोसर दिश हुनकर कौशलयुक्त मारिकहु चालि 'जशोमति कें भेल जीवक जंजाल' छन्हि। पश्चात प्रतारनाक उद्देश्यें ओ कृष्ण कें ऊखरि लगा कऽ बान्हि दैत छथिन्ह जे ओ आंगन सँ अन्यत्र नहि जाथि तथा स्वयं निश्शंक भावें काज मे लागि जाइत छथि। एहि बीच मे कृष्ण ऊखरि कें ओंघरौने-ओंघरौने बाहर

जाय यमलार्ज्जुनक उद्धार करैत छथि। एम्हर यशोदाक ध्यान जाइत छन्हि त आंगन मे कृष्ण कें नहि देखि विकल भऽ उठैत छथि,

आंगन सुत देखि नयन नोरायल।
जसोमति कां हिअ हाथ हेरायल॥
की फल भेल मोहि एतेक अगोरि।
ने हरि उखरि नहि आ‧डोरि॥
कनइत जसोमति पहुँचलि जाय।
नेरु हेरएने जेहने धेनु गाय॥

पश्चात् जखन कृष्ण भेटैत छथिन्ह त 'यसोमति फोय हरि हृदय लगाओल।' वस्तुतः ई मातृहृदयक स्वाभाविक अभिव्यक्ति थीक। पुनः कालीयदमनक अवसर पर प्रारम्भ मे सर्पराजक दर्प सँ कृष्णक कष्ट कें देखि जे मातृहृदय हहरि उठैत अछि ताहि कें कबि 'कानथि यसोमति धरणि लोटाय' कहि व्यक्त कैने छथि।

प्रबन्ध-काव्यक एक गोट विशेषता ई होइछ जे ओहि मे सामाजिक जीवनक चित्रांकनक प्रचुर अवसर प्राप्त होइछ। वस्तुतः जीवनक स्पर्श वास्तविक कविताक आत्मा थीक तथा प्रबन्ध काव्य मे त एहि जीवनक परिधि मे समस्त समाजक समावेश भऽ जाइछ। से 'कृष्णजन्म' मे कविक प्रवृत्ति लोकजीवनक प्रति पूर्ण तन्मयताक अनुभव करैत अछि। लोकपक्षक एतेक विशद चित्रणक एहि सँ पूर्वक कविता मे सर्वथा अभाव अछि। कृष्णजन्मोत्सव पर नगर भरि मे

हकार[१], तेल सिन्दूर बिलहब[२], डोमकछ नाच[३], सोहरगान[४] आदिक वर्णक कवि बड़ मनोयोग सँ कैने छथि। धिया-पुता के' अलौकिक वा अस्वाभाविक कष्टादि सँ मुक्ति दियेबाक लेल 'चुमाओन'क उल्लेख करब कवि नहि बिसरैत छथि[५]। चरबाह सभक द्वारा गाछ पर झटहा अथवा चेप फेकबाक[६] एवं ओकरा सभ मे प्रचलित टेलबा-टेलइ खेलक[७] तथा नेना के' मुँह बौआ[८] सँ डेरेबाक वृत्तान्त कविक सूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्तिक परिचायक थीक। मृतक के' छूला पर गंगाजल सिक्त कय शुचि होयव सदृश सामाजिक रीति कविक ध्यान सँ नहि उतरैत छन्हि[९]। ठाम-ठाम घटनाक उल्लेख ताहि रूपें भेल अछि जे एक दिश जँ ओ मनोरंजनक सृष्टि करैत अछि त दोसर दिश सामाजिक विधि-व्यवहारक परिचय दैत अछि। जखन कृष्ण मथुरा जैबाक विचार स्थिर करत छथि त गोपीलोकनि बिछोहक कल्पना-मात्र सँ बिकल भऽ उठैत छथि। एहन स्थिति मे वेओ गोपी, ज्योतिषी सँ जा कऽ निवेदन कैलन्हि जे कृष्णक पुछला पर ओ कहि देथिन्ह जे अखन भदबा छैक,

---

१. होइत प्रात भेल नगर हकार।   २, तेल सिन्दूर सभ देलन्हि ओआरी।

३. केओ घर आंगन केओ दोआरी। कय ठाम डोमकछ नाचय गोआरी॥

४. सोहर गाव आव बेकताव।

५. कीदहु पढ़ि हरि नन्द चुमाओल। आसिख दय हरि हृदय लगाओल॥

६ ककरहु झटहा ककरहु चेप।

७ एक दिन ब्रज मे भेज़ खेढ़ि। नाम तकर थिक टेलबा टेलइ॥

८ एक दिन गोकुलपुर हौआ। हय रूप धय पहुँचल मुहबौआ॥

९ मुइल असुर गोद छुइला गेल। तखन कृष्ण गंगाजल लेल॥

केअओ भेलि जोइसिक आँगन ठाढ़ी।
कहिअ तँ सभ अभरन दिअ काढ़ी॥
हम भरि जन्म सुदिनि भय रहव।
पुछय आबथि त भदबा कहब॥

भदबा मे कोनो शुभकार्य वा यात्रादि वर्जित छैक। अतः गोपी लोकनि के आशा छलन्हि जे भदबाक नाम सुनि कृष्ण अपन मथुरा-गमन कें स्थगित क देताह। वस्तुतः एहि सँ सामाजिक जीवन मे भदबाक महत्त्व पर प्रकाश पड़ैत अछि।

पुनः दोसर चित्र, कृष्णक मथुराक लेल प्रस्थान करबाक काल, गोपीलोकनिक मनः स्थिति सँ सम्बद्ध अछि। यावत धरि दृष्टिगत छथिन्ह तावत धरि त भरिपोख देखि लेल जाइन्ह—एहि लेल जेना प्रत्येक गोपी मे प्रतिस्पर्धाक भावना होन्हि। परन्तु जखन कृष्ण दूर चल जाइत छथिन्ह तखन ई लोकनि की करथु? दूरक वस्तु कें देखबाक हेतु ठाढ़ि हैबा लेल उच्च स्थान चाही। बस सभ केओ गोरहा पर चढ़ि जाइत छथि,

जावत छथि देखिअ भरि दीठो।
थिक पछुआड़ आँखि का पीठी॥
ई कहि गोरहा चढ़ि भेलि ठाढ़ी।
ता कृष्ण गेलाह कोसहुँ सों बाढ़ी॥

गोरहके वर्णन निस्सन्देह गोपग्रामक मर्माकर्षक चित्र उपस्थित करत अछि। तहिना सरौक नानाविध तैयारी—कोठीक माँटिक ढेरि करब[1], अरिगह करिगह खनब[2], गुदगर काठक मुदगर बनायब[3] मिथिलाक ग्रामीण बातावरण कें उपस्थित करैत अछि। सत्य त ई जे "प्रतीक रूपें पुराण सँ कथा लय मिथिलाक सांस्कृतिक साँचा मे ढारि ओकरा विस्तार कय रोचक ओ स्वाभाविक बनयबा मे कवि सिद्ध हस्त छलाह।" मिथिलाक संस्कृतिक उद्बोधक एवं जनजीवनक परिचायक छोटो सँ छोटो विषय कविक ध्यान सँ नहि छूटल अछि। एतबे नहि, कविक दृष्टि मे मिथिलाक भौगोलिको स्वरूप स्पष्ट छन्हि और ताहि रूपे बेतिया कें तिरहुत (मिथिला) सँ पृथक उल्लेख करब महत्त्वपूर्ण विषय थीक[4]।

भाषाक दृष्टि सँ मनबोधक स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। कृष्णजन्मक भाक विषय मे डा० ग्रीयर्सनक कहब छन्हि जे "कृष्ण-जन्म गत शताब्दीक मैथिलीक उदाहरण थीक। एहि ग्रन्थ कें विद्यापतिक प्राचीन मैथिली तथा हर्षनाथ एव वर्त्तमान युगक अन्य लेखक लोकनिक आधुनिक मैथिलीक मध्यम कड़ी कहि सकैत छी।

---

१ निक कोठीक माँटिक ढेरी कएल।

२ कए ठाम अरिगह करिगह खनल।

३ गुदगर काठक मुदगर बनल।

४ सोरठ म रठ ओ गढ़गाल। अंग बंग तेलंग नेपाल॥
बेतिआ तिरहुति अओर जत देस। नृपति हकारल सकल नरेश॥

एहिमे कतेक रूप त एहि तरहक अछि जे विद्यापतियो सँ पहिनहि सँ चल-आबि रहल अछि अतः ओकर खास महत्त्व छैक[१]."

कृष्णजन्मक भाषा कें जनभाषाक रूप कहि सकैत छी। एहि मे भाषाक ओहि रूप अछि जे नित्य प्रतिक प्रयोग मे अबैछ। फलतः काव्यक रसास्वादन मे एकगोट आत्मीयताक भान होइत अछि। हिनक भाषाक सरलताक उदाहरण-स्वरूप निम्नलिखित पंक्ति द्रष्टव्य,

हमहु कयल अछि मन वड़ गोट।
कृष्ण जन्म परिनय नहि छोट॥
कोन परि होयत तकर निरबाह।
एखन लगै अछि अगम अथाह॥
होइत कदाचित पुनु हो नीक।
नहि हो तकरो शंका थीक॥
तेँ डर पुनु मङ्गल करिअ।
हरिपद कमल हृदय हम धरिअ॥

वस्तुतः तत्समक दुरुह गिरिपथ सँ भाषा-सरिता कें तद्भवक समतल भूखण्ड पर उतारबाक श्रेय मनबोधे कें छन्हि।

1, The poem is deserving of special attention as an example of the Maithili of the last century affording a connecting link between the old Maithili of Vidyapati and the modern Maithili of Harkhanath and the other writers of the present day. It contains some forms which has survived from times prior even to Vidyapati and which hence have special interest.

Krishnajanma—Edited by Grierson—J. A. S. B. 1884.

पण्डितोचित भाषाक प्रतिक्रिया मे मनबोध जनसामान्य मे प्रचलित शब्दसमूहक प्रयोग कैलन्हि। परन्तु एहि दिशा मे ओ एतेक दूरधरि बढ़ि गेलाह जे वृक्ष कें ब्रिच्छ, वृत्तान्त कें विरतान्त, चर्चित कें चरचित, प्राप्ति कें परापति, कृष्ण कें क्रिस्न, तृण कें त्रिन लिखय लगलाह जाहि सँ अनेक ठाम कृत्रिमताक भान होमय लगैत अछि।

हिनक काव्यक अवगाहन करैत ठाम-ठाम सूक्ति एवं लोकोक्तिक जे मौक्तिक भेटैत अछि ताहि सँ भाषा विशेष स्वाभाविक लगैत अछि जेना,

कँटगर तरु केओ अंगना राख।
कर्मक लिखल मेटय के पार।
नेरु हेरएने जेहने धेनु गाय।
आज होइत मोर वारह बाट।
तार न खसय खसय मुँह सेप।
थिक पछुआर आँखि काँ पीठी।
लठिधर ग्वार महारथि मार।
घोड़ कुदए ने बाखर कूद।

तहिना जनसामान्य मे प्रचलित ठेठ शब्द ओ उपलक्षण, भाषाक निरावरण स्वरूपक परिचय दैत अछि। उदाहरणक लेल वक्क दए, फुफरी पड़ल, चओर ढराओल, अमठ, नगेरा, बाँहि बजाएब, कोठ-बाट, छान्ह-बान्ह, मारिकहुँ चालि, अरबधि, भड़कछ मारि, अवधारि, गोहारि लगाय, ढेहर आदि कें देखल जाकैछ। इयह

विशेषता प्रयुक्त उपमानक प्रसंग में बोध हैत। साधारणतः अप्रयुक्त उपमानक साहित्य प्रयोग द्वारा कवि अपन काव्य कें जन जीवन सँ मिझरा दैत छथि। पूतनाक विशाल शरीर पर दुग्धपान करैत शिशु श्रीकृष्णक तुलना कवि 'तारक तरु जनि लवनी लागल' कहि देने छथि। एहन स्थल एकटा नहि अनेक भेटत।

मनबोध प्रथम कवि भेलाह जे विद्यापतिक सीमा-रेखाक उल्लंघन कय मैथिली काव्यक्षेत्र मे नवरूपक काव्य परम्पराक सूत्रपात कैलन्हि। अपन कंठस्वर कें राग-ताल सँ मुक्त राखि ओ निश्चय काव्य क नव स्वरूप प्रदान कैलन्हि। पश्चात हिनक पथानुसरण कैनिहार अनेक कवि भेलाह जाहि मे चन्दा झा अग्रगण्य छथि। मिथिला-भाषा-रामायण मे, लगैत अछि जेना भाव, भाषा ओ शिल्प प्रत्येक दिशा मे मनबोधे हुनक आदर्श छलथिन्ह और सम्भवतः इयह कारण थीक जे ई ग्रन्थ कृष्णजन्मे जकाँ समस्त मिथिला मे रोचक ओ प्रचलित काव्य प्रमाणित भेल।



कवीश्वर चन्दा झा

कवीश्वर चन्दा झा मैथिलीक महान कविक रूप मे समादृत छथि। हुनका आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक मानल जाइत अछि। विद्यापतिक अनन्तर हुनके सदृश बहुमुंखी प्रतिभा सम्पन्न लोकप्रिय कवि, चन्दा झाक अतिरिक्त आन केओ नहि भेल। वस्तुतः विद्यापतिक पश्चात् इयह एकटा कवि भेलाह जे मातृभाषाक वास्तविक महत्त्व बुझि ओकर विकासक दिशा मे प्रयत्नशील भेलाह। साहित्यक म्रियमान धार हिनक साधना स्रोत सँ सलिलयुक्त भय पूर्ण शक्तिवेग सँ प्रवहमान भेल। उन्नैसम शताब्दी मे पुनः कवीश्वरे जनभाषाकें काव्यभाषाक रूपमे मण्डित कैलन्हि तथा अपन सशक्त लेखनी सं अनवरत साहित्य सृष्टि मे योगदान दैत, मातृवाणीक अर्चना मे सुवर्णवर्णावलीक उपहार चढ़बैत रहलाह। हिनक बहुमुखी प्रतिभा, प्रगाढ़पाण्डित्य, साहित्यिक रुचि, पुरातत्व-प्रेम एवं दीर्घ जीवन विविध प्रकारें मैथिली साहित्यक समवर्द्धन मे सहायक भेल। कवीश्वरक इ मातृभाषानुराग अद्यापि प्रेरणाक वस्तु थोक एवं साहित्यसेवाक जे आदर्श ओ उपस्थित कऽ गेलाह से चिरकाल धरि अनुकरणीय रहत।

कवीश्वरक नाम छलन्हि चन्द्रनाथझा तथापि ओ केवल चन्दा झा सँ विख्यात छलाह। हिनका कविचन्द्र अथवा कविचन्द सेहो कहल

जाइछ। 'कवीश्वर' शब्द त जेना हिनका लेल रूढ़ भऽ गेल अछि। अतः मात्र कवीश्वर कहि देला सँ चन्दा झाक बोध भऽ जाइत अछि। ठाम-ठाम ओ अपन पदक भनिता मे 'चान' शब्दक प्रयोग कैने छथि। वस्तुतः अपन नामक ई ठेठ रूप कविक मातृभाषा प्र मक परिचायक थीक।

कवीश्वर स्वरचित वाताह्वानक अन्त मे अपन जन्मतिथिक जे उल्लेख कैने छथि ताहि सँ स्पष्ट होइछ जे शाके १७५३ माघ सुदि सप्तमी बृहस्पति तदनुसार २० जनवरी १८३१ ई० क हुनक जन्म भेल छलन्हि[1]। हुनक जन्मस्थानक गौरव, दरभङ्गाजिलान्तर्गत पिण्डारूछ नामक गाँव कैँ प्राप्त छैक। हिनक पिता प० भोला झा एक गोट सद्ब्राह्मण एवं सात्विक प्रवृत्तिक व्यक्ति छलाह। कवीश्वरक प्रारम्भिक शिक्षा हुनक मातृक बड़गांव जिला महरसा मे भेलन्हि। पश्चात् विशेष अध्ययन ओ भारतीय ज्ञान गरिमा एवं संस्कृतिक अपूर्व संगम काशी नगरी जाय कैलन्हि। ओतय ओ शीघ्रहि अनेक शास्त्रक ज्ञाता भय यशस्वी भेलाह। कवित्व शक्ति त हिनका सहजात छलन्हि जे पाण्डित्यक विकासक संगहि स्फुट होइत गेल। काशी सँ विद्याध्ययन कय जखन ओ प्रत्यागत भेलाह त पाण्डित्यक अतिरिक्त हुनक कवित्वो बहुचर्चित विषय छल। क्रमशः हुनक यशोबल्लरी चतुर्दिक पसरय लागल। विद्यापति ओ उमापति-रमापतिक पद्धति सँ भिन्न एकजन नवीन कवि पदरचना

---

१. शकाब्दे रामेशाननमुनिनिशानायकमिते।
तपोऽब्दे सप्तम्यामधिगुरुदिनं चन्द्रकवितुः जनुः इत्यादि।

करत छथि—एकठाम ठेठ भाषा मे-से तत्कालीन सुधी समाजक उत्सुकता कें जगा देलक आ' तें अनेको व्यक्ति हिनका दिश स्वत: आकृष्ट भेल।

कवीश्वर आरम्भ मे गन्धवारिक बाबू साहेब वासुदेव सिंहक ओतय छलाह। पश्चात् ओतय सँ नरहन स्टेट चल गेलाह। ताहि समय मे नरहन राज्य बड़ विद्यानुरागी छल, से ओतुका गुणग्राही स्वामी कविवर कें बजाय अपना ओतय आदरपूर्वक रखलथिन्ह। पन्द्रह वर्ष धरि ओहि ठाम रहि कविवर साहित्य साधना मे लीन रहलाह। एहि मध्य कविक सुयशक वेश क्षेत्र-विस्तार भेल तथा हिनक स्वर-काकली असंख्य नर-नारीक ठोर पर गूंजय लागल। दरभंगाक महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह एहन कवि प्रतिभा सँ अपन दरबार कें विभूषित करबाक लोभक संवरण नहि कऽ सकलाह। राज जखन 'कोर्ट आफ वार्डर्स'क संरक्षण सं मुक्त भेल तथा उक्त महाराज ओकर संचालन स्वयं करय लगलाह त चन्दा झा कें सत्कार-पुरस्सर दरभंगा बजाओल गेल। ताहि दिन सँ जीवन पर्यन्त कवीश्वर दरभंगा राजक आश्रित रहलाह। राज-दरबार मे त इर्ष्यालु व्यक्तिक अभाव रहितहि ने अछि, से एहि ठाम आरम्भ मे हुनक रचनाक बड़ उपहास कैल गेल। रूढ़िवादी पण्डित वर्गक लेल एहि जनकविक लोकप्रियता असह्य छलन्हि तथा ओ लोकनि हिनका 'कवेस्सर' कहि कऽ सम्बोधन कैल करैत छलथिन्ह। 'कवेस्सर'क अर्थ होइत छलैक 'भाट'। हिनकर रचना के 'फकड़ा' कहल जाइत छलन्हि। किन्तु समय सिद्ध कऽ देलक जे ओह फकड़ा-कवि

मैथिलीक महाकवि ओ आधुनिक साहित्यक जनक पदक अधिकारी छलाह। उपहास मे कहल गेल 'कवीश्वर' शब्द हुनक श्रद्धेय आस्पद भऽ गेल आ' आब त ई पद चन्दा झाक नामान्तर मे सहजहि रूढ़ भऽ गेल अछि। एहन सौभाग्य साहित्य जगत मे बड़ कम्मे व्यक्ति केँ उपलब्ध भऽ सकलन्हि अछि।

महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह ओ महाराज रमेश्वर सिंह, दुनू भाइक राजत्वकाल मे ओ राजकवि बनल रहलाह। रमेश्वर सिंह केँ त कविक प्रति अत्यन्त श्रद्धाभाव छलन्हि। कवीश्वरक अन्तिम काशी प्रयाणक समय महाराज स्वयं हुनका स्टेशन धरि अरियाति अपन गुणग्राहकता एवं कविक प्रतिष्ठा केँ प्रकट कैलन्हि।

कवीश्वरक एकटा वैमात्रेय भाइ छलथिन्ह भिखारी झा। अपना चारि गोट पुत्र तथा एक गोट कन्या छलन्हि किन्तु पाँचो सन्तान क्रमशः असमये काल कवलित भऽ गेलन्हि। केवल ज्येष्ठपुत्र विश्वनाथक पत्नी कालिका ओझाइन, विधवा पुत्रवधूक रूपमे बहुत दिन धरि जीवित रहलथिन्ह।

अपन जीवनक प्रसंग मे चन्दा झा कोनो विशेष बात नहि लिखलन्हि अछि परन्तु सामान्य संकेत सँ बुझि पड़ैत अछि जेना हुनका हृदय मे असीम वेदना एवं अकथ पीड़ा संचित छल। इयह कारण थीक जे अपन पद सभ मे जतय कतहु कवीश्वर अपना विषय मे कहने छथि ताहि मे परिचय कम ओ परिताप विशेष भेटैछ।

चन्द्रपद्यावली मे दू-एकटा एहन पद अछि जाहि सँ हुनक जीवनक विषय मे महत्त्वपूर्ण घटना पर प्रकाश पड़ैत अछि। सुनल जाइछ जे

अपन ग्रामवासी किछु दुष्ट लोकनिक उकठ सँ सीदित भय कविवर पिण्डारुछ त्यागि देलन्हि। जन्मभूमि छोड़बाक क्लेश हुनका अवश्य भेलन्हि संगहि दुष्टक सहवास सँ मुक्तिक लेल प्रसन्नतो छलन्हि। निम्नपद मे ओ कहैत छथि—

भल भेल भल भेल त्यागल वास
छुटि गेल मोर मन दुरजन त्रास
भल-भल लोकक बौसब पास
सपनहु सुनब न खल उपहास॥

पुनः दोसर ठाम कहैत छथिन्ह—

बहुत दिवस पापी संग बसलहु
लिखल तेहेन छल वाम।

पिण्डारुछ के त्यागि कवि अपन सासुर ठाढ़ी मे जा कऽ नव निवासस्थान बनबौलन्हि। पिण्डारुछ मे जे कवीश्वर के उपद्रव कैल गेल छलन्हि तकर केओ-केओ खण्डनो करत छथि। किन्तु एहि सम्बन्ध मे हुनक एकटा फकड़ा बेश प्रचलित अछि, जाहि सँ एहि घटना पर प्रकाश पड़ैत अछि। ओहि फकड़ाक पहिल दूगोट पांती एहि प्रकारें अछि—

आब न उचित पिण्डारुछ बास
उपटि चलिअ जबदी केर पास

एहि प्रसंग मे ज्योतिषाचार्य बलदेव मिश्र कवीश्वरक लिखल

एकगोट आवेदन पत्र प्रकाशित करौलन्हि अछि[1] । आ आवेदन पत्र महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक सेवा मे उपस्थित कैल गेल छल । मैथिली गद्य मे लिखित एहि प्रार्थना पत्र मे कवीश्वर पिण्डारुछ मे भेल उपद्रव दिश संकेत करैत ठाढ़ी मे बसबाक इच्छा व्यक्त कैने छलथिन्ह तथा एहि लेल राज सँ वास योग्य भूमिक बन्दोबस्तीक याचना कैने छलथिन्ह । एहि पर महाराज, झंझारपुरक अपन सर्कल मैनेजर कें आदेश देने छलथिन्ह जे कवीश्वर कें विहित मालगुजारी पर भूमि बन्दोबस्त कैल जाइन्ह ।

ठाढ़ी गाम कवि कोन रूपें जीवन यापन कैलन्हि से नहि कहल जा सकैछ । परन्तु दुर्जन त सदिखन नीक लोकक उपहास करितहि छैक । आ' कवि कें सेहो जीवन मे डेग-डेग पर एकर अनुभव होइत रहलन्हि—तैं हिनक रचना मे दुर्जन व्यक्ति दिश बेशी संकेत भेटैत अछि । एहि विषय मे हुनक अपन एकटा निश्चित धारणा छलन्हि—

खल उपहास त्रास जनु मानू
पामर निन्दा वचन सहू ।

राजपण्डित बलदेव मिश्र कवीश्वरक व्यक्तित्वक विवेचन करत 'हुनक भव्य आकृति, प्रसन्न मुखमण्डल, प्रतिभोद्दीप्त नेत्र एवं विनोदशील स्वभाव'क उल्लेख कैलन्हि अछि । ताही तरहें सहनशीलता ओ धैर्य हुनक चरित्रक विशिष्ट गुण छल । हुनक जीवन-इतिहास सँ एहि विषयक अनेको उदाहरण देल जा सकैछ । तथापि

१. मिथिला-मिहिर, अप्रिल ११, १९६५, पृ० ४

एतय एकगोट घटनाक चर्चा कैल जाइछ जाहि सँ हुनक धर्यक चरम रूप पर प्रकाश पड़ छ। सुनल जाइछ जे एक बेर हुनक सम-सामयिक कोनो सन्त हुनका सँ भेंट करय अयलथिन्ह। ताहिकाल मे ओ स्वनिर्मित नचारीक कोनो पद गुनगुना रहल छलाह। आगन्तुक कें देखि स्वागत कैलथिन्ह आ' हुनका संगे बड़ी काल धरि अध्यात्म चर्चा मे लीन रहलाह। मुदा एही मध्य ओ ककरो शोर कय 'आगि, पानि, लोह, पाथर, सोहराइ' आदि वस्तु कें जुगुता कऽ राखि देमय कहलथिन्ह। आगत सज्जन कें ई विषय बड़ रहस्यमय बुझि पड़लन्हि। पश्चात् कवीश्वर सहज भावें कहलथिन्ह—"बाउ स्वर्गगत भऽ गेलाह आइ।" कवीश्वरक एकमात्र जीवित पुत्रव देहावसान भऽ गेल गेल छलन्हि तथा ओ कनेको उद्विग्न नहि छलाह। ओ उच्चकोटिक भक्त त छलाहे फेर योगाभ्यासी सेहो छलाह। फेर हुनका सदृश स्थिर प्रज्ञक लेल एहि सांसारिक शोक सँ निर्लिप्तता सामान्य विषय छल।

इहो कहल जाइछ एहि घटनाक पश्चात कवीश्वर खाली वैराग्य-मय काव्यक निर्माण ओ चिन्तन करय लगलाह। परन्तु जीवन ओ जगतक निस्सारता पर विचार करब त प्रत्येक मननशील प्राणीक स्वभाव थीक और से कवीश्वरो तद्विषयक रचना कैलन्हि। एकरा हुनक विरागक परिणाम नहि कहब। वस्तुतः कवीश्वर अत्यन्त सहृदय छलाह तथा निरन्तर साहित्यक प्रवर्द्धन मे दत्तचित्त रह-लाह। हुनका दीर्घ जीवन प्राप्त छलन्हि। पद्यावली मे ओ एकठाम लिखने छथि—"वयः प्रमाण सप्तसप्ति वर्ष ई शरीर।" एहि सँ एतेक

धरैत निश्चित भऽ जाइछ जे ओ सतहत्तरि वर्षक आयु धरि अवश्य जीवित छलाह। अन्तकाल मे काशीवासक हुनक एकान्त कामना छलन्हि से इच्छाक अनुकूले ओ काशी जाय देह त्याग कैलन्हि।

चन्दा झाक मृत्यु कोन साल मे भेलन्हि ताहि सम्बन्ध मे अनेक प्रकारक मत अछि। राजपण्डित हुनक मृत्यु १९०७ ई० मे लिखने छथि। डा० जयकान्त मिश्र अपन मैथिली साहित्यक इतिहास मे एकरहि अनुमोदन कैने छथि। मुदा ज्योतिषी बलदेव मिश्रक कथन छन्हि जे कवीश्वरक मृत्यु १९०९ ई० मे भेलन्हि। ओ लिखैत छथि जे "सन् १९०८ ई० मे कविवर चन्दा झाक प्रथम दर्शन हमरा रमेश्वरलता विद्यालय ने भेल छल जाहि समय मे ओ वृद्ध सत्तरि वर्षक उपरहि छलाह।"

परन्तु एहि प्रसंग मे अनेक नव तथ्य प्रकाश मे आयल अछि जकर अनुशीलन कैला उत्तर कवीश्वरक मृत्यु १९०७ ई० मे स्थिर होइत छन्हि।[१] एहि सम्बन्धक कतिपय प्रमाणक उल्लेख सँ वस्तु-स्थितिक स्पष्टीकरण मे सहायता पहुँचत।

प्रथम ई श्रुति अछि जे जाहि वर्ष रमेश्वरलता संस्कृत महा-विद्यालयक स्थापना भेल ओही वर्ष महाराज कामेश्वर सिंहक जन्म भेल छलन्हि। कवीश्वरक मृत्यु काशी मे एहि शुभ समाचार कें सुनलाक बादे भेल छलन्हि। विद्यालयक स्थापना १९०७ ई० मे आषाढ़ शुक्ल द्वितीया कऽ भेल छल एवं मिथिलेशक जन्म २८ नवम्बर

१. द्रष्टव्य, डा० ललितेश्वर झा रचित कवीश्वर चन्दा झा नामक ग्रन्थ मे पं० चन्दनाथ मिश्र 'अमर' लिखित 'आमुख' पृ० ठ-ड।

मार्ग कृष्ण अष्ठमी १९०७ ई० कऽ मेल छलन्हि। कवीश्वरक मृत्यु-समाचार जे मिथिला मोद मे प्रकाशित भेल छल, ताहू मँ एकर समर्थन होइछ,

"...सबहिक परमपूज्य मिथिलेशहु सँ गुणिगणाग्रगण्य तथा परम सत्कृत तथा अनेकानेक ग्रन्थ, रचना, टीका इत्यादि सँ भूमण्डल मे अति प्रथित वार्द्धक्य मे परम पवित्र वाराणसी क्षेत्राधिष्ठित सपुत्र अन्नपूर्णा विशेश्वरक शरणापन्न भय केवल मिथिलेश पुत्रजन्म श्रवणाभीष्ट पूर्त्तिमात्र सँ रहित परमशरणागत वत्सल परम दयाल विशेश्वर आजन्म एतावन्मात्र अभीष्ट पूर्त्ति रहित देखि पाँचहि चारि दिन मे चिरजीवि महाराज कुमार जन्मोत्सव सुनाय कृतकृत्य कय देल। तदुत्तर दिन संवत् १९६४ मार्गशुक्ल नवमी शुक्र अहर्निश आनन्द सुखानुभव कय रात्रिशेष मे अपना शरीर कें कृतकृत्य जानि विषय संसार कें असारमानि गङ्गातटस्थ दुर्लभ मणिकर्णिका क्षेत्र जाय श्वशरीरात्यय कय विशेश्वर लीन।"

मिथिला-मोद मे ई समाचार 'शोकापनोदे विनोद'क शीर्षक सँ प्रकाशित भेल छल। एकर लेखक श्रीश्री देव चौधरी (चनौर) छलाह। मोदक जाहि अंक मे ई समाचार छपल छैक तकर उपलब्ध प्रति मे मासक उल्लेख करैत पृष्ठ फाटल छैक। परन्तु जाहि पृष्ठ पर ई प्रकाशित छैक तकर संख्या ४३ देल छैक। पुनः मोदक दोसर अंक मे, जे पहिले अंक सँ सम्बद्ध अछि जाहि पर ११ फरवरी १९०८ ई० छपल छैक, राजदरभंगाक आफिसर इन्चार्ज द्वारा प्रेषित एक गोट विज्ञापन देल छैक जाहि सँ पुत्र जन्मोत्सव पर आयोजित

श्रौत परीक्षाक परिवर्त्तित तिथिक सूचना प्राप्त होइछ। अतः उपर्युक्त समाचारबला अंक सम्भवतः जनवरीक थिकैक। तथापि फरवीक अंक सँ एतेक त अवश्य स्पष्ट होइछ जे कवीश्वरक मृत्यु एहि सँ पूर्वहि भऽ गेल छलन्हि। कवीश्वरक मृत्यु-समाचार मे जे संवत् १९६४ क उल्लेख अछि ताहू सँ ई सन् १९०७ क बोध होइत अछि।

पुनः एकर समर्थन मे ९ मार्च १९०८ ई० क इंगलैंड सँ लिखल गेल डा० ग्रीयर्सन महोदयक एक गोट पत्रक उत्तर मे योगियारा सँ बाबू श्री नारायण सिंह द्वारा प्रेषित पत्र कें राखल जा सकैछ। एहि पत्रक प्रतिलिपि, उक्त सिंह महोदय पौत्रक दौहित्र लग सुरक्षित छन्हि। डा० ग्रीयर्सन अपन पत्र मे अन्य विषयक संग-संग हुनका सँ चन्दा झाक विषय मे जिज्ञासा कैने छलथिन्ह, जकर उत्तर मे हुनका चन्दा झाक मृत्युक सूचना देल गेल छलन्हि। एतय ई ज्ञातव्य विषय थीक जे डा० ग्रीयर्सन कें मैथिली साहित्य विषयक अपन गवेषणा मे कवीश्वर सँ पर्याप्त साहाय्य प्राप्त भेल छलन्हि।

एहि प्रमाण-पुञ्जक अनुशीलन कैने एतेक त स्पष्ट अछि जे कवीश्वरक मृत्यु-तिथि विवादास्पद विषय नहि थीक। हुनकर मृत्यु १९०७ ई० मे भेल छलन्हि तथा एहि प्रसंग मे राजपंडित जीक जे कथ्य अछि सेहो समीचीन अछि।

प्राचीन भारतीय वाङ्मय मे कवि ओ ऋषि कें पर्यायवाची मानल गेल अछि। कवीश्वरक प्रसंग मे विचार कला उत्तर ई सर्वथा सत्य सिद्ध होइत अछि। ओ प्रकृति सँ कवि छलाह तथा ऋषितुल्य

छलाह। हुनकर समस्त साहित्य श्रद्धा ओ साधनाक परिणाम थीक। ओ भक्त छलाह तथा भक्ति हुनकर काव्य सर्जनक अन्तःप्रेरणा छलन्हि। परन्तु हुनक साहित्यक पारायणक पश्चात ई जिज्ञासा सहजहि होइछ जे आ कोन देवताक भक्त छलाह-रामक अथवा शिवक वा शक्तिक। तीनू प्रसंग मे, हुनक रचना मे यथेष्ट सामग्री उपलब्ध हैत। ठाम-ठाम कृष्णोक उल्लेख भेटत। अनेक ठाम साहेबरामदास एवं लक्ष्मीनाथ गोसाईक रहस्यवादोक दर्शन हैत। ई सभटा विषय एक गोट विषम स्थितिक सृष्टि करैत अछि। मुदा सूक्ष्म अध्ययन कैला उत्तर ई स्पष्टतः बोधगम्य हैत जे एकमात्र शिवभक्ति हुनक काव्य सागर मे तरंगायित अछि। एही लेल शिव नगरी काशी हुनका अतिशय प्रिय छलन्हि—

मन अटकत शिव चरण समाज
कतहु कदापि न गड़बड़ काज
तनसुख मनसुख धनसुख ढेरि
रहथि सदा कमला गृह घेरि
आयुक अन्त शिवकपुर वास
बिचरब मुदित सहित कैलास
मन हो चन्द्रचूड़ बनि जाउ
अकथ अगोचर धाम सुनाउ।

शिवक चरण मे अटल प्रतीति कैं कवि लोक-परलोक दुनुक सुख मानैत छलाह। शिवक जे वस्तु प्रिय छलन्हि से सभ किछु कवि कें

प्रिय लगलन्हि तथा ओ सभटा हुनका लेल श्रद्धेय ओ पूज्य भऽ गेलन्हि । शिवक आराध्य राम, तें कविवर शिवप्रोक्त अध्यात्म रामायण कें आधार बनाय अपन रामायणक रचना कैलन्हि । नवल कलाधर शिव एवं कृष्ण दुनू धारण करैत छथि अतः कृष्णो कविक प्रिय छलथिन्ह । एहि तरहें शिवक अर्द्धांगिनी पार्वती शक्ति स्वरूपा छथि तें शक्तियो कविक पूज्य एवं सुरसरि कें शिव अपन जटाजूट मे धारण कैने छथि तें गंगा सेहो वन्दनीय भेलथिन्ह । मुदा शिव कें समर्पित भक्ति सर्वोपरि अछि । ओ शिवभक्त छलाह तथा हुनक लिखल नचारी, महेशवाणी आदि असंख्य पद समस्त मिथिला मे प्रचलित अछि । सुनल जाइछ जे जखन ओ स्वरचित नचारीक गान करय लगैत छलाह त आत्मविभोर भऽ जाइत छलाह । वस्तुतः हुनक पदो सभ कें पढ़ला सं अपूर्व तन्मयताक बोध होइछ । हुनक यावन्तो शैव पद छन्हि, ताहि मे जे आत्मसमर्पणक भावना व्यक्त अछि, भक्ति सं ओतप्रोत हृदयक जे झलक भेटछ, अन्तरक जे करुण द्रं निवेदन अनुगुंजित अछि ओ सभटा कवीश्वरक महानता कें ख्यापित करैत अछि ।

कविक इयह भक्तिभावना हुनक साहित्यिक कृतिक विधायिका थीक । मातृभूमि एवं मातृभाषा प्रेमक पुष्पाञ्जलि दय ओ अपन काव्यदेवताक अर्चना कैलन्हि । एहि दृष्टियें 'मिथिला-भाषा-रामायण' हुनक सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय कृति थीक । चन्दा झाक नामोल्लेख मात्र मँ हिनक रामायणक उद्घोष होइछ । ग्रन्थक नाम-करणहि सं मिथिला-मैथिलीक प्रति कविक सहज अनुरागक परिचय

भेटैत अछि। रामचरितक महत्त्व, जनक नृपति पुत्रीक मातृभाषा द्वारा व्यापक हो, तकर हुनका एकान्त कामना छलन्हि—

भवति भवतु लोके सत्कथायाः प्रचारो
जनक-नृपति-पुत्री-मातृभाषाञ्चितायाः।

मिथिलाक संगीतप्रोत काव्य परम्परा मे 'मिथिला-भाषा-रामायण'क प्रबन्धात्मक स्वरूप शैलीगत विशिष्टताक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। चन्दा झा सँ पूर्व महाकवि मनबोध, शृंगार सँ विरत, रागताल प्रभृति संगीतक विषय सँ वियुक्त भक्तिरसक प्रधानता दय, पाठ्य छन्द युक्त प्रबन्धकाव्यक रचना दिश प्रवृत्त भेल छलाह। पश्चात् चन्दा झा अपन रामायणक रचना कय जेना मनबोधक कैल कार्य कें आगाँ बढ़ौलन्हि। यद्यपि ओ स्वयं प्रधानतः गीतकारे रहलाह तथापि रामायण मे प्रयुक्त छन्दक विविधता सँ संगीत प्रधान काव्य परम्परा पर चोटगर आघात भेल तथा कविक ई ज्ञात अथवा अज्ञात चेष्टा मैथिली साहित्य कें नव आलोक देलक, प्रगतिक नव प्रेरणा देलक ताहि मे सन्देह नहि।

रामायणक अन्त मे ओकर रचनाकालक जे उल्लेख अछि ताहि सँ स्पष्ट अछि जे शाके १८०८ आश्विन कृष्ण एकादशी, शुक्र दिन कऽ ई ग्रन्थ पूर्ण भेल छल। जेना कहल जाइछ एहि ग्रन्थक रचनाक पाछाँ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक शुभकामना छलन्हि तथा एकर प्रत्येक पंक्तिक समीक्षा दरबारक विद्वान लोकनि कैने छलाह। प्रायः ई सौभाग्य कोनो आन ग्रन्थ कें नहि भेटल हैत जकर प्रत्येक शब्द

पर विद्वत् मण्डली विचार कैने हो तथा जे पाण्डित्यक कसौटी पर परिशुद्ध प्रमाणित भेल हो ।

रामायण, भारतीय वाङ्मय केर आदर्श कृति थीक । चरित्रवान व्यक्तिक अन्वेषणार्थं आदिकाव्य रामायणक रचना कैल गेल छल । बाल्मीकिक लेल चरित ओ धर्म पर्यायवाची छल तथा हुनक दृष्टि मे राम धर्मक प्रकटमूर्त्ति छथि[1] । कवि बाल्मीकिक इयह आदर्श चरित चन्दा झाक प्रेरणाक आधार थीक । चन्दा झा सँ पूर्व मैथिली मे कृष्णकाव्यक प्रधानता छल । रसबोध एवं सुकुमार भावनाक दृष्टियेँ कृष्णकाव्यक महत्त्व अक्षुण्ण रहत । परन्तु देशक चारित्रिक आदर्श केँ अनुप्राणित करबाक लेल, समाज केँ कर्त्तव्य मार्ग दिश आरूढ़ करेबाक लेल रामचरितक अवतारणा मैथिली मे आवश्यक छल । वस्तुतः जाहि सांस्कृतिक संघर्षक युग मे चन्दा झाक आविर्भाव भेल छल तकर ई अनिवार्य प्रतिक्रिया छल । एतेक अवश्य जे चन्द्रकवि, बाल्मीकि सदृश रामक वर्णन सर्वोत्तम मानवक रूपमे नहि कय मानव वेषधारी परमात्माक मर्त्यलोकवासक कथा लिखलन्हि । 'मिथिला-भाषा-रामायण' मे रामक जन्म नहि होइत छन्हि अपितु चतुर्भुज विष्णुक रूप मे हुनक अवतरण होइत छन्हि । माय जखन स्तुति करैत छथिन्ह तखन ओ हुनकर आग्रह सँ साधारण बालकक रूप धारण करैत छथि । यद्यपि भगवान अपन मानुषाकृति धारण कऽ लैत छथि तथापि कवि हुनकदिव्य रूपक वर्णन करब नहि बिसरैत छथि—

---

१. रामो विग्रहवान धर्मः । अरण्य ० ३८-१३ ।

ई कहि बनला सुन्दर बाल
इन्द्रनील छवि नयन विशाल
बाल अरुण तन दिव्य प्रकाश
जनिकर माया विश्व विशाल।

पुनः दोसर स्थल पर गुरु वशिष्ठ रामक ईश्वरावतारक वर्णन करैत छथि जाहि सँ ई सुस्पष्ट भऽ जाइछ जे राम, नारायण छथि तथा सीता हुनकर विश्वमोहिनी माया थिकथिन्ह। रामायणक नीक-अधलाह प्रत्येक पात्र कें एहि विषयक ज्ञान छन्हि। मारीच-मन्दोदरी सँ लऽ कऽ रावण पर्यन्त समकेओ राम-सीताक एहि दिव्य-रूप सँ परिचय रखैत छथि। एहि प्रकारक वर्णनक मूल कारण थीक चन्दा झाक भक्ति। चन्दा झा भक्त छलाह तथा कवि कल्पना कें भक्तक भाषा मे दोहरा कऽ अपन भक्ति कें चरितार्थ कलन्हि। रामायणक प्रारम्भहि मे ओ कलियुगक दुराचरणक वर्णन कैने छथि तथा पापनाशक एकमात्र हेतु रामनामक संकीर्त्तन कें कहलन्हि अछि। समस्त ग्रन्थ मे कविक दार्शनिक दृष्टिकोणक अभिव्यक्ति भेटत। अपन छप्पन वर्षक परिणत वयश मे कवि एकर रचना कैने छलाह अतः एहि मे वेदान्तक परिपक्व विचारक दर्शन स्वाभाविके अछि। वस्तुतः जाहि रामकथाक गान बाल्मीकि कैलन्हि, कालिदास ओ भवभूति कैलन्हि, जकरा तुलसीदास ओ कृत्तिवास दोहरौलन्हि, ताही मर्यादा पुरुषोत्तमक अर्चा-चर्चा कय मिथिलाक महान कवि पुण्य अर्जित कैलन्हि।

ई सत्य जे रामकथाक समादर एक गोट भक्तिकाव्यक रूप मे

अछि परन्तु कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ जेना लिखि गेलाह अछि,[१] "रामायणक कथा सँ भारतवर्षक जन साधारण, आबालवृद्धवनिता केवल शिक्षा टा नहि प्राप्त करैछ, आनन्दो पबैत अछि; केवल एकरा शिरोधार्य नहि करैछ, हृदयो मे रखैत अछि एवं ई खाली ओकर धर्मशास्त्रोटा नहि अछि, काव्यो थीक[१] ।" मिथिला-भाषा-रामायण'क काव्यत्व स्वतः सिद्ध अछि। कवीश्वरक एहि कृति कें मैथिलीक सर्वप्रथम महाकाव्यो हैबाक सौभाग्य प्राप्त छैक। महाकाव्य केवल कतिपय बाह्य लक्षणक पूर्त्तिमात्र नहि थीक अपितु ओहि मे एक गोट आन्तरिक महत्ताक अपेक्षा होइछ जकरा 'अनुभूतिक गरिमा' कहब। महाकाव्यक 'महत्' शब्द ओकर एही अन्तरिक महत्ताक द्योतक थीक। वस्तुतः इयह 'अनुभूतिक गरिमा' ओकर भाव ऐश्वर्य थीक, जाहि सँ ओहि मे महाप्राणता अबैछ। से साहित्यशास्त्र मे वर्णित किछु बाह्य लक्षणक अभावहु सँ 'मिथिला-भाषा-रामायण' मे महाकाव्यत्व पूण मात्र मे अछि। वर्णन वैशद्य, संवादक रोचकता, भावाभिव्यंजनक मनोरमता आदि जाहि विशिष्ट गुणक प्रयोजन काव्यत्वक उत्कर्षक लेल होइछ, से एहि मे पर्याप्त अछि। वस्तु-विन्यास मे जतय मानवीय प्रसंग अछि अथवा अन्यकोनो मर्मस्पर्शी स्थल अछि, ओकरा कवि नीक जकाँ चिन्हि, अपन भावुकताक परिचय देलन्हि अछि। ओना त 'मिथिला-भाषा-रामायण'क मूलाधार थीक अध्यात्म रामायण तथा अपन रचना मे कवीश्वर एकरहि अनुसरण कैलन्हि अछि मुदा अटूट श्रद्धाक अवस्थितियो मे

१. प्राचीन साहित्य, पृ० ७।

कवि मौलिकताक सम्पादन करबा मे समर्थ भेलाह अछि। विशेष कय मिथिला वर्णन, लक्ष्मण-परशुराम-संवाद, लंका-दाह-वर्णन, राम-अंगद संवाद आदि कतिपय एहन स्थल अछि जतय कवीश्वरक मौलिक-प्रतिभा स्फुट भेल अछि तथा काव्यत्वक दृष्टि सँ ई सभ स्थल मनोरम सिद्ध भेल अछि। विभिन्न रसक परिपाकक लेल रामकथाक महत्त्व सर्वोपरि अछि एवं एहि क्षेत्र मे कवीश्वरोक सफलता असंदिग्ध अछि। तहिना भाव प्रकाशनक क्रम मे विविध अलंकार-प्रयोग सँ ओ एकर कलापक्ष कें समृद्ध बनौने छथि। मुदा एतेक सुस्पष्ट अछि जे रामायण मूलतः भक्तिकाव्य थीक से एहि मे काव्यत्वक कोनो प्रकारक अपकर्षक परिष्कार एकर भक्ति सँ प्राप्त आनन्द सँ सहजहि भऽ जाइछ।

'मिथिला-भाषा-रामायण'क प्रणयन जेना एक गोट महत् चरित्रक चित्रण एवं परम्परागत सामाजिक संस्कारक व्यापक अभिव्यक्तिक लेल महदनुष्ठान छल। रामचरित त महत् अछिये मुदा कवीश्वर प्रायः एहू प्रेरणा सँ रामायण-रचना मे प्रवृत्त भेलाह जे मैथिली मे रामकथाक एकहुटा कृति नहि छल। मैथिली-प्रेम हुनक कृतिक प्रेरणाभूमि छलन्हि ओ मिथिलादेशक गौरव हुनकर प्रतिभाक दिशा निर्देशक। 'जनक नृपति पुत्री'क मातृभाषा मे रामक सत्कथा प्रचारित हो तकर अभिलाषा कवीश्वर ग्रन्थक आदिये मे व्यक्त कैने छथि। पुनः अपन मिथिला वर्णन मे ओ जाहि मनोयोग सँ अतीतक स्वर्णिम पृष्ठक अवलोकन करैत छथि ओ मिथिलाक प्रति कवीश्वर

सहज अनुरागक अभिव्यक्ति थीक। पुनः सीता चरितक प्रसंग मे ओ एहि विषय कें नहि बिसरत छथि जे सीता मिथिलाक कन्या छलीह। जानकी स्वयं, रामायणक अनेक स्थल पर अपन जनक ओ जन्मभूमिक उल्लेख कैलन्हि अछि—

सर्वसहा जननी धरणी थिकि
जनक नृपति थिका बाप।

× × ×

जनक-जनक मिथिला नहि नैहर
ज्ञानभूमि सभलोक सृजन मे।

× × ×

जनक - जनक जननी अवनि
रघुनन्दन प्राणेश।
देवर लक्ष्मण हमर छथि
नैहर मिथिला देश॥

सीताक प्रति कविक श्रद्धाभाव तकरहि अनुरूप अछि। हुनक चारित्र्य-स्मरणक लेल, ओकर श्रेष्ठताक प्रतिपादनक लेल कवि अपन वस्तुविन्यास मे अनेक स्थल पर नव प्रसंगक उद्भावना कलन्हि अछि। एहि क्रम मे देखब जे अशोक वाटिकाक बन्दिनी सीता कें अपन विपन्न जीवन सँ विशेष लक्ष्मण कें कठोर वचन कहबाक मनस्ताप छन्हि। हुनकर ई मनोवेदना गीतक स्वर मे विगलित भय विशेष करुणार्द्र भऽ उठल अछि,

हा रघुनाथ अनाथ जकाँ दशकण्ठपुरी हम आइलि छी ।
सिंहक त्रास महावन मे हरिणीक समान डेराइलि छी ॥
चन्द्र चकोरि अहैंक सदा हम शोक समुद्र समाइलि छी ।
देवर दोष कहू हम की अपना अपराध सँ काइलि छी ॥

पुनः हनुमानक माध्यमे प्रेषित संवाद मे ओ लक्ष्मण सँ क्षमा-याचना पर्यन्त करैत छथिन्ह । राम केँ कहबाक लेल संवाद कहि ओ लक्ष्मणक प्रसंग कहैत छथिन्ह,

देवर कँ हम वचन कठोर ।
कहल तकर फल भेल न थोर ।
अनुचित क्षमा करत के आन ।
कहब दयामय देवर कान ।
संकट सँ लय जाथि छोड़ाय ।
प्रभुक अनुज से करथु उपाय ।

अग्नि परीक्षा उत्तीर्ण भेनहु राम, जानकी केँ निर्वासनक कठोर दण्ड दऽ दैत छथिन्ह मुदा ओ कोनो प्रतिवाद नहि कय निष्ठापूर्वक स्वीकार कऽ लैत छथि । एकरा ओ अपन कर्मक दोष बुझि एकमात्र विधाता टा केँ एहि लेल दोषी कहैत छथिन्ह । हुनका हृदय मे रामक प्रति जे स्नेह ओ विश्वास छलन्हि तकर आभास, लक्ष्मणक प्रति हुनक निम्न उक्ति मे परिलक्षित होइछ,

सिरिस सुमन बरु होए असनि सम,
तेहेन कहहु भए जाय रे ।

से बर होए होथि नहि अकरुण,
अहकां बड़का भाय रे ॥

अतः अपन अकारण निर्वासनक दण्ड भोगियोकऽ सीता मिथिला, अपन नैहर नहि जाय चाहैत छथि। नारीक समादर तावतहि नैहर मे होइछ यावत धरि सासुर मे ओ अपन सम्मानीय स्थान बनौने रहैछ। ई स्वतः सिद्ध अछि। पतिगृह मे तिरस्कृत नारी कें पितोक गृह मे अपमान ओ उपहास सहय पड़ैत छैक। सीता कें एहि रहस्यक बोध छन्हि। अपन एहि भावना कें लक्ष्मण सँ व्यक्त करैत ओ कहैत छथिन्ह,

करुणागार उदार प्राणपति
वन देल दोष लगाय रे।
देवर दोष विधिक हम की कहु
जनि घर धर्म न न्याय रे।
हमरहि हेतु दशाशन मारल
कपिगण संग लगाय रे।
तखन पतिव्रत देखल हमर सभ
अनल मे गेलहुँ समाय रे।
नैहर जँ मिथिला चलि जायब
कहृत बाप -की माय रे।
पुरुष परसमणि कर हम सौंपल
अयली की नाम हँसाय रे।

से कवीश्वर सीताक शालीनता कें बिसरलाह नहि। ओकर उत्कर्ष

कें ओ धर्मबुभि व्यक्त कैलन्हि। सीताक चरितक ई उच्चादर्श मिथिला-भाषा-रामायणक काव्यपक्षक मार्मिक वैशिष्ट्य थीक।

कवीश्वर द्वारा वस्तु विन्यास मे ठाम-ठाम जे नूतन उद्भावना कैल गेल अछि ताहि सँ हुनक भावुकता एवं विचार स्वातन्त्र्यक परिचय भेटैत अछि। उदाहरणक लेल अहल्याक चरित्रक प्रसग मे कविक भावना पर विचार कैल जा सकैछ। बाल्मीकि, अपन रामायण मे अहल्या कें दोषी सिद्ध कैने छथि। गोस्वामी तुलसीदास त एहि स्थल पर मौन रहि गेलाह अछि। परन्तु एतय चन्द्रकवि अहल्या कें दोष मुक्त कय ओकर निर्दोषिताक वर्णन ओकरहि मुँहें बड़ चमत्कार-पूर्ण ढंग सँ करौने छथि। अहल्या, राम सँ निवेदन करत अछि,

हमर गति अपने सौं के आन।
करुणागार दीन प्रतिपालक रामचन्द्र भगवान।

× × ×

सुरपति कुमति विदित भेल कतय न हम अवला की ज्ञान।
जन्तुमात्र सँ वर्जित आश्रम नहि भोजन जलपान॥

एहि तरहें अहल्याक आत्मपरिताप द्वारा कवि एहि कुकाण्डक समस्त दोष इन्द्र कें दय, ओकर कलक प्रक्षालन करैत छथि। वस्तुतः एतय रूढ़ि पालनक स्थान मे मानववादक प्रतिष्ठाक प्रयास देखब। एहि घटना कें कवीश्वरक नारीभावना सँ सेहो संयोजित कः सकैत छी। मिथिला-भाषा-रामायणक ई स्थल निश्चय मौलिक विशिष्टता सँ युक्त अछि।

मिथिला-भाषा-रामायण, कवीश्वरक भक्ति-भाग्यक प्रतिमूर्त्ति थीक। ई खाली कवीश्वरेक सर्वोत्तम कृति नहि अछि अपितु मैथिलीक महत्वपूर्ण ग्रन्थ थीक।

चन्द्रकवि काव्यात्मकता मे जहिना बाल्मीकि छलाह तहिना रचना करबा मे व्यास। जीवन पर्यन्त ओ साहित्य सेवा मे संलग्न रहला। संस्कृतक अतिरिक्त चन्दा झा प्राकृत एवं अपभ्रंशक मर्मज्ञ छलाह संगहि ब्रजभाषा, अवधी एवं खड़ीबोलीक विशेषज्ञ। हिनक साहित्यिक कृतिक अवलोकन सँ एहि बहुभाषा ज्ञानक परिचय प्राप्त हैत। पद्य ओ गद्य, मौलिक ओ अनूदित, प्रबन्ध ओ मुक्तक, काव्य ओ नाटक, साहित्यक समस्त रूपविधान हिनक लेखनीक स्पर्श सँ अनुप्राणित भेल। ताहि दृष्टि हिनक सभटा रचना केँ तीन वर्ग मे बाँटि सकैत छी। प्रथम वर्ग मे मिथिला-भाषा-रामायण आओत तथा दोसर वर्ग मे कविक मुक्तक रचनाक संग्रह ग्रन्थ सभ। एहि मे गीतिसुधा, महेशवाणी संग्रह, गीत सप्तशती, लक्ष्मीश्वर विलास एव चन्द्रपद्यावलीक गणना हैत एहि सँ गीतिसुधा एवं लक्ष्मीश्वर-विलासक प्रकाशन कविक जीवनेकाल मे भेल छल। शाके १८१० मे लक्ष्मीश्वर विलास छपल। एकर रचना कवीश्वर अपन संरक्षक महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक तोषार्थ कैने छलाह। एहि मे चौंतीश टा विभिन्न-विषयक पद संगृहीत अछि। गीतिसुधाक दू गोट भाग प्रकाशित भेल छल। इहो कविक स्वरचित विविध गीतक संग्रह थीक जे सम्भवतः कविक जीवनकालक अन्तिम प्रकाशित पोथी थीक। एकटा पद सँ स्पष्ट होइछ जे कवि एकर रचना सतहत्तरि

वर्षक आयु मे कैने छलाह । पश्चात हिनक महेशवाणी संग्रह, म० म० डा० सर गंगानाथ झा, प्रयाग सँ प्रकाशित करौलथिन्ह तथा हिनक विभिन्न स्फुट पदक एक गोट वृहद् संग्रह राजपण्डित बलदेव मिश्र द्वारा सम्पादित भय १९३१ ई० मे दरभंगा सँ प्रकाशित भेल ।

तेसर कोटि मे चन्दा झाक अनुवादित, सम्पादित, अप्रकाशित, अनुपलब्ध, अपूर्ण एवं अन्य प्रकारक रचना अछैछ । एहि मे पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद १८८९ ई० मे प्रकाशित भेल छल । मिथिलाक प्रसिद्ध सन्त साहेबरामदासक पदक संकलन कवीश्वरे कने छलथिन्ह । कहल जाइछ जे ओ रसकौमुदी नामक एकगोट अलंकार ग्रन्थ तथा मूलग्राम नामक विचार-ग्रन्थक प्रणयन कैने छलाह जे आब अनुपलब्ध अछि । तहिना चन्दा झाक लिखल एकगोट छन्द ग्रन्थकं सेहो उल्लेख कैल जाइछ । हिनक अहल्या चरित नाटकक एक गोट अंक मात्र दरभंगाक राज पुस्तकालय मे अछि तथा एकर किछु अंश १९१२ ई०क मिथिलामिहिरक फरवरीक अंक मे छपल छल । ई सम्पूर्ण ग्रन्थ कतय अछि तकर कोनो सूचना नहि अछि । हिनक वाताह्वान काव्य प्रकाशित अछि जाहि मे हिनक लिखल खड़ीबोलीक पद सेहो अछि । वस्तुतः एहि सँ चन्द्रकवि, खड़ीबोलीक कविक रूप मे भारतेन्दु हरिश्चन्द्रो सँ पूर्वक सिद्ध होइत छथि । एकर अतिरिक्त विद्यापति ओ गोविन्द दासक पदक संकलन, अन्य कतिपय प्राचीन ग्रन्थक अनुसन्धान, पाठोद्धार एवं मिथिला-मैथिली विषयक प्रत्येक उपादेय सामग्रीक संचयन कविक व्यसन भऽ गेल छल जाहि मे ओ जीवन भरि निबद्ध-चित्त रहलाह ।

चन्दा झाक साहित्यिक कृतिक विशद अंश हुनक भक्तिभावनाक परिणाम अवश्य थीक तथापि हुनक व्यक्तित्व निरपेक्ष भक्तक नहि छलन्हि। कवीश्वर वस्तुतः युगजागरणक प्रतीक छलाह। विदेशी शक्ति सँ पराभूत राष्ट्र कें अपन सांस्कृतिक गरिमाक स्मरण सँ निस्सन्देह प्रेरणा ओ प्रोत्साहनक उपलब्धि होइछ; आत्मविस्मरणक क्षण मे इतिहासक ओज ओ शौर्य जागरणक सन्देश प्रदान करैछ। एहि विषय कें कवीश्वर नीक जेकाँ बुझैत छलाह आ' तेँ एक दिस जँ पौराणिक पदार्थपाठ सँ जीवनक आदर्श कें उपस्थित कैलन्हि त दोसर दिश पुरातत्वक प्रसंग अन्वेषण-अनुशीलन सं लुप्त विभव कें पुनः प्रकाशित कय अपन समृद्ध परम्पराक बोध करौलन्हि। अपन एहि गवेषणात्मक प्रवृत्ति कें काव मिथिला पर केन्द्रित कैलन्हि। ओना त मिथिलाक प्रति कविक सहज स्नेह छलन्हिये संगहि जे मिथिला कहियो साहित्य ओ दर्शन क्षेत्र मे देशक नेतृत्व करैत छल से कोना आत्मविस्मृत भऽ रहल छल तकरो परिताप छलन्हि। मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदाक उद्घाटन करब, मिथिलावासी कें विस्मृत साहित्य ओ संस्कृति सँ परिचय करायब तथा ओकर हृदय मे गौरवक भावनाक संचार करब कविक अभीष्ट छलन्हि। फलतः मिथिला, मैथिल ओ मैथिलीक प्रसंग अनुसन्धान करब, तकरहि चर्चा करब तथा ताही भावना मे संलग्न रहब जेना कविक जीवनक चरम साधना भऽ गेल छलन्हि।

अतः कवीश्वरक एहि पुरातत्व विषयक अनुसन्धानक तीन गोट दिशा रहल—मिथिलाक इतिहास, मैथिली साहित्य एवं मैथिल

विद्वान। मिथिलाक इतिहासक अनुसन्धान करबाक ओ कत गोट व्यसनी छलाह जे गामक नाम, डीह, जलाशय, ध्वंशावशेष, मूर्त्ति, मन्दिर, शिलालेख एवं तादृश ऐतिहासिक वस्तुक अन्वेषण एवं ओकर मूल्यांकन मे दत्तचित्त रहैत छलाह। हिनकर किछु हस्तलेखक आधार पर ज्ञात होइछ जे ओ मिथिलाक इतिहास पर ग्रन्थक प्रणयन कैने छलाह[1]। उपलब्ध हस्तलेख मे मंगलाचरणक बाद जे श्लोक अछि ताहि सँ एकर समर्थन होइछ,

सकल गुण निवासं तीरभुक्तिहासं
लिखति सुकृत कर्मा मैथिलश्चन्द्रशर्मा॥

तत्पश्चात् चौपाइ सँ प्रारंभ कय महाराज जनकक पदवी एवं जनक शब्दार्थक विवेचना गद्य मे कैल गेल अछि। आगूक अंश अप्राप्य अछि। सामान्य धारणा ईयह अछि जे चन्दा झाक एहि कृति कें आधार बनाय पश्चात् म० म० परमेश्वर झा अपन मिथिलातत्व विमर्शक रचना कैलन्हि। एहि प्रसंग मे म० म० डा० सर गंगानाथ झाक कथन द्रष्टव्य अछि। चन्दा झा रचित महेशवाणी संग्रहक प्राक्कथन मे ओ लिखने छथि- "...हमरा भाइक पत्रोत्तर आएल जे चन्दा झाक लिखल जे किछु छलन्हि से सब पोथा श्री मिथिलेशक आज्ञानुसार म० म० परमेश्वर झाक 'जिम्मा' कएल गेलैन्हि अछि ओ छपएबाक प्रबन्ध करएबाक आज्ञा भेटलैन्हि अछि।...मिथिला पुरातत्व विषयक कदाचित् मिथिलातत्व विमर्श रूपें प्रकाशित भेल हो ई सम्भव ...।" पश्चात् डा० अमरनाथ झा सेहो एहि तथ्य पर

१. प्रबन्ध संग्रह, पृ० १८४।

प्रकाश देलन्हि । ज्योतिषी बलदेव मिश्र रचित कविवर पं० चन्दा झाक भूमिका मे ओ लिखलन्हि जे "कवीश्वर स्वतन्त्र कविता तँ उच्चकोटिक करितहि छलाह संगहि शास्त्रीय अन्वेषण ओ ऐतिहासिक वृत्तान्तक संकलनो मे दत्त छलाह । म० म० परमेश्वर झाक मिथिलातत्व विमर्शक बहुत अंश चन्दा झाक एकत्र सामग्री पर लिखल गेल ।" यदि मिथिलातत्वविमर्श केँ ग्रन्थकारक स्वतंत्र ओ मौलिक कृति मानियो लेल जाय तथापि एतेक त अवश्य स्वीकार करय पड़त जे परमेश्वर झा अपन ग्रन्थ रचना मे चन्दा झाक संकलित सामग्रीक उपयोग कैलन्हि ताही सँ ओ ठाम-ठाम चन्दा झाक मतक उल्लेख करैत छथि एवं ओकरा प्रमाणक रूप मे उद्धृत करैत छथि ।

चन्दा झाक अनुसन्धान विषयक संलग्नताक उदाहरण मे पं० रमानाथ झाजी हुनक डायरी सँ एक गोट उद्धरण देलन्हि अछि[1] । २८ जनवरी १८९२ ई० माघ वृहस्पतिक अपन दैनिन्दनी मे कवीश्वर लिखने छथि—

"सोन बरिसा सौं श्रीमन्महाराजाज्ञा सौं सवारी भेटल । गाजी पथ्रा आबी, श्री चण्डीमाताक दर्शन करी, प्रस्तरक एक चौकठि जे पुरान बड़क गाछ मठ बनैक समय काटल गेल छल ताहि तर उखड़ल जाहि खम्भा मे लेख तिरहुता अक्षरमे—

श्री मन्माहेश्वरोवरलब्ध-समस्त प्रक्रिया विराजमान-युद्धेश वंश कुमुदानन्द चन्द्र-राजश्रीमत् सर्वसिंह देवारि विजयी ।

ल० सं० २०० कतेक छल ।"

---

१ प्रबन्ध संग्रह, पृ० १८२ ।

वस्तुतः अनुसन्धानक ई प्रवृत्ति कविक लेल जेना व्यसन भऽ गेल छल। पुरान पोथी, शिलालेख प्राचीन मूर्त्ति आदि जाहि कथुक विषय मे हुनका सूचना भेटन्हि ओतय जा कऽ पर्यवेक्षण करथि ओकर इतिहास, ओकर महत्त्व एवं अन्य विशेषत्व पर विचार कैल करथि। हुनकर उपलब्ध हस्तलेख सभ एहि विषयक टिप्पणी सभ सँ भरल अछि। हस्तलिखित ग्रन्थ ओ गीतादिक संकलन मे ओ मिथिलाक अद्वितीय व्यक्ति छलाह। स्व० शारदाचरण मित्र एवं स्व० नगेन्द्र-नाथ गुप्त कें विद्यापतिक पद कें एकत्र करबा मे कवि सँ पर्याप्त सहायता भेटल छलन्हि। प्राचीन साहित्यक प्रति कविक अभिज्ञता ओ हुनक अनुन्धान करबाक प्रवृत्तिक भूरि-भूरि प्रशंसा करैत नगेन्द्र बाबू अपन विद्यापति पदावलीक भूमिका मे लिखने छथि जे "स्वर्गीय कवीश्वर चन्दा झा (चन्द्रकवि) विद्यापतिक पदावलीक अद्वितीय तत्त्वविद् एवं अर्थ पारदर्शी तथा मिथिलाभाषाक स्वयं सुकवि छलाह। जखन हम पदावलीक सम्पादन आरम्भ कैल तखन हुनक वयश पचहत्तरि वर्षक छलन्हि तथापि ओ असीम उत्साहक संग एहि कार्य मे योगदान कैलन्हि। पदावलीक संग्रह करेबा सँ लऽ कऽ कठिन शब्दक अर्थ प्रभृति सभटा ओयह कैलन्हि। विद्यापतिक भाषा विषयक, ओ हमर शिक्षा गुरु छलाह।"

विद्यापतिक मैथिलत्व कें प्रमाणित करबा मे कवीश्वरक योगदान बड़ महत्त्वपूर्ण अछि। हिनके अनुसन्धानक फलस्वरूप विद्यापतिक हस्तलिखित श्रीमद्भागवतक पोथी प्रकाश मे आयल जकरा ओ स्व० शारदाचरण मित्र कें देखाय विद्यापतिक अधिवासक प्रसंग मे हुनक

भ्रमक निवारण कैलन्हि। पुरुष-परीक्षाक अनुवाद मे ओ विद्यापतिक वंशवृक्ष पर्यन्त प्रकाशित करौलन्हि। हुनकहि अथक प्रयासें विद्यापतिक बहुतराश पदक अन्वेषण भऽ सकल। विद्यापतिक पदे टा नहि अपितु हुनक समस्त रचना कवीश्वर कें उपलब्ध भऽ गेल छलन्हि। स्व० गंगानाथ झा द्वारा जे लिखनावलीक प्रकाशन कराओल गेल तकर प्रतिलिपि कवीश्वरे कैने छलाह। समस्त कीर्त्तिलता कें अपनहि हाथें उतारि ओ, ७ फरवरी १९०५ ई० क ग्रीयर्सन साहेब कें देने छलथिन्ह जे सम्प्रति इण्डिया आफिस लाइब्रेरी मे दाखल अछि। म० म० डा० हरप्रसाद शास्त्री जे नेपाल सँ आनि कीर्त्तिलताक प्रकाशन करौलन्हि, ताहि सँ बीस वर्ष पूर्वक ई घटना थीक। लोचनकृत रागतरंगिणी कें ताकि सौंसे ग्रन्थ कें अपनहि हाथें लिखि गेल छलाह तथा गोविन्ददासक पदावलीक संकलयिता इयह थिकाह। अपन रामायणक अन्त मे पं० महेश ठाकुरक तीन गोट गीत एवं सैंतालिस गोट कविक नामवली हुनक कृति समेत दय ओ मैथिलीक समृद्धिक परिचय देलन्हि। पुनः पुरुष-परीक्षाक अनुवादक परिशिष्ट मे जे थोड़-बहुत ऐतिहासिक वृतान्तक सकलन कऽ गेल छथि, तकर सूचना अन्यथा नहि उपलब्ध होइत अछि। कवीश्वर अनेक प्राचीन पोथीक पाठोद्धार कय ओकरा प्रकाशित करौलन्हि। १८९३ ई० मे उमापतिक पारिजातहरणक एक गोट संस्करण हिनक सम्पादकत्व मे प्रकाशित भेल। ओ पचाढ़ी स्थानक संस्थापक महन्थ साहेब रामदासक गीतक संकलन, ओहि स्थानक इतिहास समेत प्रकाशित करौलन्हि।

कवीश्वर मिथिलाक प्राचीन प्रसिद्ध विद्वान लोकनिक परिचय नभ एकत्र करैत छलाह। धर्म, दर्शन ओ साहित्यक क्षेत्र मे प्रसिद्धि प्राप्त कैनिहार मनीषिक संख्या बड़ बेशी अछि जनिक कृतित्व ओ व्यक्तित्वक प्रसंग ज्ञातव्य विषयक संकलन मे चन्दा झा संलग्न रहलाह। बराहमिहिर, हलायुध, कुमारिल, मंडन, वाचस्पति मुरारी, वर्द्धमान, पक्षधर आदि विद्वानलोकनिक प्रामाणिक परिचय संगृहीत करबाक प्रयास सर्वप्रथम कवीश्वरे कैलन्हि। 'एहि दिशा मे पजी साहित्यक गम्भीर अध्ययन सँ हुनका अपेक्षित सहायता प्राप्त भेलन्हि। ओ 'सुकवि चरितामृत'[१] क नाम सँ मैथिल कविलोकनिक परिचय ग्रन्थ लिखय लागल छलाह जे सम्पूर्ण त नहि, आंशिक रूप मे उपलब्ध भेल अछि। एहि सँ मैथिलीक अनेक प्राचीन कविक प्रामाणिक परिचय भेटैत अछि।

चन्द्रकवि मिथिलाक पुरातत्व विषयक दुर्द्धर्ष पंडित छलाह। एहि प्रसंग मे हुनकर लिखल समस्त वस्तु जखन प्राप्त होयत, ओकर प्रकाशन कैल जायत तखनहि एहि क्षेत्र मे कैल गेल हुनक सेवाक मूल्यांकन सम्भव भऽ सकत।

कवीश्वरक अध्ययन-अनुशीलनक एहि प्रवृत्ति-विश्लेषणक क्रममे हुनक छन्दविषयक परिज्ञान ओ संगीतशास्त्रक अभिज्ञताक उल्लेख अपेक्षित हैत। छन्दशास्त्रक ओ मर्मज्ञ विद्वान छलाह तथा केवल अपन रामायणहिटा मे ओ जे छन्दक विन्यास देखौने छथि

१. प्रबन्ध संग्रह, पृ० १६६।

ताहि सँ एहि विषय मे हुनक पारदर्शिताक परिचय भेटैत अछि। कवीश्वर द्वारा लिखित जे एक गोट छन्दविषयक ग्रन्थक चर्चा कैल जाइछ तकरहु सम्भावना एहि सँ सिद्ध होइछ। तहिना कवीश्वर संगीतशास्त्रक मर्मवेत्ता छलाह। रामायण मे वा अन्यत्र, ओ जे राग-रागिणीक निर्देश कैने छथिन्ह से तकरहि परिणाम थीक। एतेक धरि जे अपन रामायण मे त ओ चौपाइ समेत कें अनेक रागक नाम दय परिचित करौने छथि तथा ठाम-ठाम 'मिथिला संगीता-नुसारेसारेण', 'लोचनशर्मानुसारेण' आदिक संकेत दय मिथि-लाक संगीत परम्पराक प्रति अपन आस्था प्रकट कैने छथि। गीतक छन्दक नाम त ओ रागहिक नाम पर देलन्हि अछि। एहि रूपें हिनक काव्य मे छन्द ओ संगीतक अद्भुत सामञ्जस्य भेटत। ई स्वाभाविके छल। छन्दशास्त्र सँ संगीतशास्त्रक सम्बन्ध प्रत्यक्ष अछि। छन्दक छन्दात्मकता लयाश्रित अछि। वस्तुतः छन्द ओ संगीतक जे वैविध्य ओ वैलक्षण्य कवीश्वरक काव्य मे उपलब्ध अछि ओ स्वतः अध्ययनक वस्तु थीक और ताहि प्रसंग मे सन्नद्ध भेने मैथिली छन्द ओ मिथिलाक संगीत विषयक महत्त्वपूर्ण तत्त्वालोचन सम्भव अछि।

विद्यापतिक पश्चात मैथिली साहित्य कें जे नवीन पथ पर अग्रसारित कैलन्हि ताहि मे कवीश्वर चन्दा झा अग्रगण्य छथि। जाहि समय मे हुनक आविर्भाव भेल छल ओ भारतीय भाषाक जागरणकाल छल। हिनक समकाल मे माइकेल मधुसूदन दत्त (१८२४ ई०—१८७३ ई०) एवं बंकिमचन्द्र (१८३८ ई०—१८९४ ई०) सदृश बंगाली

विद्वान अपन मातृभाषाक उन्नयनक लेल सचेष्ट छलाह त दोसर दिश हिनक अल्पवयस्क समकालीन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (१८५० ई०— १८८५ ई०) खड़ी बोली मे साहित्यिक प्रयोग कऽ रहल छलाह। अपन निकटवर्त्ती भाषा-साहित्यक एहि विकास सँ कवीश्वर असम्पृक्त नहि छलाह। फेर अपन पुरातत्व विषयक गवेषणा द्वारा मिथिलाक प्राचीन इतिहास पृष्ठ फाँलि ओ एकर समवर्द्धित परम्पराक दर्शन करौलन्हि तथा एकर नव विकासक दिशा संकेत देलथिन्ह। कवीश्वर नवीन सामाजिक चेतना सँ अनुप्राणित छलाह। फलतः जतय पहिने खाली शृङ्गार ओ भक्ति विषयक रचनाक शृङ्खला छल ओतय ओ सामाजिक तथा राजनीतिक विषयक समावेश मैथिली काव्य मध्य पहिल बेर कैलन्हि। १८८० ई० सँ लऽ कऽ १९०७ ई० धरिक मैथिली-साहित्यक इतिहास त एकमात्र हुनकहि रचनाकाल थीक। मिथिला-भाषा-रामायण एवं शतशः महेशवाणी ओ नाना विषयक गीत-कवित्त प्रभृति विभिन्न छन्द मे रचित अपन रचना सँ ओ मैथिलीक खाली आँचर कैं भरि देलन्हि। वस्तुतः मैथिलीक रूप-विन्यास मे, ओकर भाव समृद्धि मे तथा ओकर बहुविध उन्नयन मे चन्दा झाक सेवा स्तुत्य एवं प्रेरणादायक अछि।

मुदा मैथिलीक विकास-दिशा मे चन्दा झा जे बड़का काज कैलन्हि ओ थीक गद्य रचनाक शुभारम्भ। ओ एहि वस्तुक अनुभव कैलन्हि जे मैथिली कैं सब तरहें आधुनिक बनेबा लेल गद्यक प्रयोजन अछि। कवीश्वर आधुनिक युगक प्रथम गद्यकार छथि तथा विद्यापति-कृत पुरुष परीक्षाक हुनक अनुवाद (१८८६ ई०) प्रथम गद्य कृति थीक।

चन्दा झाक युगान्तकारी व्यक्तित्व मौलिक गद्य रचना मे सर्वथा सक्षम छल परन्तु से प्रयोग कतेक दूर धरि सफल होइत, एकटा विचारणीय विषय छल अतएव चन्दा झा विद्यापतिक यश एवं लोकप्रियता केँ ध्यान मे राखि हुनकहि संस्कृत गद्यकृति केँ रूपान्तरित कय मैथिली मे गद्य रचनाक आदर्श उपस्थित कैलन्हि। एकर अतिरिक्त अपन मौलिको गद्यक रचना कय ओ एहि निर्माण कार्य केँ गतिशील रखलन्हि। चन्दा झाक ई प्रयास मैथिलीक क्षेत्र मे नव प्रवृत्ति जगा देलक और साहित्य मे जखन कोनो नव प्रवृत्ति प्रवेश कऽ जाइत अछि त ओ उत्तरोत्तर अपना केँ व्यापक बनबैछ। से मैथिलीक लेखक समुदाय एहि विषयक अनुभव कैलन्हि जे आधुनिक साहित्यक समुचित विकासक लेल, ओकर क्षेत्र-विस्तारक लेल, ओकरा जनसामान्य धरि पहुँचेबाक लेल गद्यक विकास अनिवार्य अछि। फेर चन्दा झाक आदर्श ग्रहण कय गद्य ग्रन्थक रचना होमय लागल तथा पत्रकारिताक उदय भेल। एहि क्रम मे मैथिली गद्य जनजीवनक प्रतीक बनि प्रशस्त होइत गेल।

मैथिलीक एहि विकास-आन्दोलनक संग चन्दा झा जीवन पर्यन्त सम्बद्ध रहलाह। अपन वृद्धावस्था मे १९०५ ई० मे मैथिलीक प्रथम पत्र 'मैथिल हित साधन'क प्रकाशनक सूचना पाबि ओ अपन शुभकामना सन्देश जे पठौने छलथिन्ह ताहि सँ हुनक एहि विषयक संलग्नताक परिचय भेटैत अछि। पत्रक किछु अंश एतय द्रष्टव्य अछि.

पत्र बहुत जन हर्षित भेल,
नियमित मूल्य पूर्व दय देत।
मासिक मिथिला पत्र प्रचार,
मैथिल भाषें विहित विचार।
सभ तकइत अछि पत्रक बाट,
पौषक दिवस रहल अछि खाँट।
नमस्कार लिखइत छथि चन्द,
सत्वर लिखब कुशल आनन्द।...

पुनः १९०६ ई० मे 'मिथिला मोद'क प्रकाशनक सुसंवाद सूनि कवीश्वर अपन हृदयोद्गार व्यक्त करैत जे पद्यात्मक पत्र पठौने छल थिन्ह तकर परिमित अंश निम्न प्रकारें अछि,

मिथिला-मोद गोद लै बसलि,
काशी भेली नमस्या।
मुरलीधर जीवन शुभचिन्तक,
पत्रक परम तपस्या॥

चन्दाझाक रचनात्मक साहित्य, काव्यशास्त्रक आदर्श सँ अनुप्राणित अवश्य अछि मुदा ओहि मे जे लोक संग्रह एवं समाज कल्याणक भावना निहित अछि, मानवीय संवेदना एवं स्वानुभूतिक अभिव्यक्ति अछि, से ओकरा नवीनता सँ मंडित करैत अछि। पूर्वक काव्य मे जे शृंगारक प्रधानता छल से कवीश्वरक काव्य मे नहि भेटत। जतय कतहु शृंगारिक प्रसंग अछियो त ओ बड़ संयत अछि। उत्कट शृंगार वर्णन कें त ई सर्वथा त्याज्य बुझलन्हि। एहू दृष्टियें

प्राचीन काव्य सँ एकर पार्थक्यक स्पष्ट बोध होइत अछि। 'मिथिला-भाषा-रामायण' निस्सन्देह कविक महान कृति थीक। मैथिली मे रामकथाक सर्वप्रथम अवतारणा कय, ओ एक गोट नव कीर्त्तिमान स्थापित कैलन्हि। परन्तु 'मिथिला-भाषा रामायण' जँ रामचरित 'मानस' अछि त चन्दा झाक मानस हुनक असंख्य गीति ओ मुक्तक पद सभमे प्रतिविम्बित अछि। वस्तुतः भक्तकविक मानसदर्पणक रूप मे हुनक काव्यक एहि बहुल अंशक उपेक्षा नहि कैल जा सकैछ। कविक जीवनरसक निषेक सँ ई समस्त काव्य अत्यधिक तरल ओ हृदयग्राही बनि गेल अछि। एकर आत्मानुभूति मूलक हैबे नवीनता थीक। वस्तुतः अपन रचनामे अपन मनोगत भाव कें, स्वानुभूत सुख अथवा दुख कें हृदयक आह्लाद अथवा विषाद कें व्यक्त करब एक प्रकारक नवीनता छल जकर प्रवर्त्तन कवीश्वरक काव्यमे होइत अछि। एहि आत्माभिव्यंजनक लेल, हुनक मुक्त भावोद्गारक लेल भक्तिपद एवं अन्य मुक्तक रचना समान रूपेँ उर्वर सिद्ध भेल।

परन्तु कवीश्वर केवल अपन मनोगत भावेटा कें व्यक्त नहि कैलन्हि अपितु समसामयिक जीवन कें साहित्य मे रूपायित कय व्यापक मानवीय संवेदना कें व्यापकत्व प्रदान कैलन्हि। विदेशी दासताक ओहि युग मे जखन प्रत्येक व्यक्ति, प्रतिपल राजनीतिक उत्पीड़नक असह्य दंशनक अनुभव कऽ रहल छल कविक वाणी आत्मकेन्द्रिकता सँ ऊपर उठि कठोर वास्तविकता कें अभिव्यक्ति देबामे कनेको कुंठित नहि भेल। निस्सन्देह चन्दाझाक व्यक्तित्वक ई क्रान्तिकारी रूप थीक। एहि सँ साहित्य ओ समाजक सम्बन्ध-

परम्पराक स्थापना होइछ जकर दर्शन हुनका सँ पूर्वक काव्यमे सामान्यतः नहि होइछ। चन्दाझा १८५७ ई० क परीक्षित पुरुष छलाह। क्रान्तिक पश्चात जाहि सामाजिक चेतनाक उदय भेल ओ अपन समस्त प्रतिक्रियाक संग कवीश्वरक काव्य मे प्रतिफलित भेल। वस्तुतः चन्दा झा मैथिली साहित्य मे नवयुग आनबा मे समर्थ भेलाह। १८८५ ई० कांग्रेसक स्थापना सँ लऽ कऽ १९०५ क बंगभंग आन्दोलन धरिक समस्त राजनीतिक गतिविधि हिनक जीवनकालक महत्त्वपूर्ण घटना चक्र छल। एक दिश राष्ट्रीय उद्बोधनक ई व्यापक आन्दोलन चलि रहल छल आ' दोसर दिश शोषण, अकाल, महगी, अशिक्षा, नाना प्रकारक सामाजिक विषमता, कुरीति ओ अनाचार सँ जन जीवन आक्रान्त छल। चन्द्रकवि अपन काव्यमे विविध रूपेँ एकर वर्णन कय जेना जातीय जागरणक महान यज्ञ मे अपन योगदान देलथिन्ह। अंग्रेजी शासन मे न्याय-व्यवस्थाक नाम पर जाहि कचहरीक स्थापना भेल छल तकर वास्तविक स्वरूप पर निर्ममता-पूर्वक व्यंग्य करैत कवि लिखलन्हि —

न्यायक भवन कचहरी नाम।
सभ अन्याय भरल तेहि ठाम।
सत्य वचन बिरले जन भाष।
सभ मन धनक हरन अभिलाष।
कपट भरल कत कोटिक कोटि।
ककर न कर मर्यादा छोटि।
कवि भन चन्द्र कचहरी घूस।
सभ सहमत ककरा कै दूस

शासन व्यवस्थाक एतेक कठोर उपहास, कवीश्वरे सदृश निर्भीक व्यक्ति द्वारा सम्भव छल। अस्त्र-शस्त्र पर भनहि प्रतिबन्ध लगा देल गेल मुदा ई कचहरी जेना सघर्षक नवद्वार खोलि देने छल। एहि 'मामिला' क मारि मे पारस्परिक सद्भाव ओ सामञ्जस्य कतेक काल धरि सम्भव होइत ?

अस्त्र-क्षस्त्र रोक आब मामिलाक मारि।
भाइ-भाइ कें पढ़ैछ नित्य-नित्य गारि।
ठक्क लोक हक्क पाब साधु कें उजारि।
दैब जे ललाट लेख के सकैछ टारि।

कवीश्वर अपन अनेक पद मे तत्कालीन देश-दशाक वर्णन कैने छथि। १८७३—'७४ ई० क अकाल हुनक जीवनकालक घटना छलन्हि। एहि ईश्वरीय प्रकोप सँ दुर्दशाग्रस्त जीवनक अनेक चित्र कविक लेखनी सँ लिपिबद्ध भेल अछि। एक दिश अतिवृष्टि त दोसर दिश अनावृष्टि,

भेल अन्न ढेर बाढ़ि पानि सौं दहाय।
फेरि अन्न आशु सूर्यदेव सौं सुखाय।
आम ग्राम ग्राम मे बिहाड़ि तोड़ि जाय।
धर्म्म हानि सँ अनन्त कष्ट भेल हाय।

देशक एहि विपद्ग्रस्त स्थिति कें कवि धर्म-कर्मक ह्रासक परिणाम कहैत छथि। भक्त कविक एहि सहज भावना कें केओ अस्वीकार नहि कऽ सकैछ। फेर महगीक वर्णन करैत ओ लिखने छथि,

महार्घ सँ महार्घ अन्न धर्महीक फेर।
अनेक अन्न भाव से विकाय भाव सेर।
मालभोग भोग्य मे अभाग्य सँ जनेर।
कहैक योग्य बात की अन्धेर सँ अन्धेर।

एहि दारुण दशाक प्रभाव समाज पर एतेक दूर धरि पड़ल जे—

सुखो देखैछि दुइ गोल चोर ओ भिखारि।
बहुत खर्च बाढ़ि बन्धु-बन्धु बीच मारि।
नवीन व्याधि आधि सौ समस्त स्वास्थ टारि।
अनर्थ दैव सृष्टि देखु दृष्टि कै उघारि।

सामाजिक जीवनक विविध पक्षक एहि व्यक्तिगत अनुभव सँ कविक रचना मे एक गोट अद्भुत प्रभावोत्पादकताक समावेश होइत अछि। काव्यक ई नव स्वर हमर ध्यान शास्त्रीय पद्धति सँ जीवन दिश भोकि रहल छल।

कवीश्वर मैथिली मे नवोत्थानक प्रेरक शक्ति छलाह। विषय, भाव, शिल्प, भाषा आदि प्रत्येक दृष्टि सँ विचार कैने देखब जे हिनक काव्य मे परम्परागत मैथिली काव्य सँ अन्तर अछि। अपन रामायणक रचना कय ओ प्रबन्धकाव्यक आदर्श उपस्थित कैलन्हि। पाठ्यछन्दक विविधता देखाय ओहि मे नव स्वारस्यक संचार कैलन्हि। प्राचीन गीतिपद्धति सँ हुनका रुचि छलन्हि तथापि ओकरा स्वानुभूतिमूलक बनाय, संगहि समसामयिक जीवनक विभिन्न चित्र सँ युक्त कय ओहि मे नव आस्वाद उत्पन्न कलन्हि। गद्य-रचनाक सूत्रपात कय मैथिली कें आधुनिकताक प्रवेश द्वार पर आनि

ठाढ़ कैलन्हि। जनजीवन सँ जे साहित्यक सम्बन्ध विच्छिन्न भऽ गेल छल तकरा पुनर्स्थापित कैलन्हि। हुनक भाषा-प्रयोग ध्यान देबाक विषय थीक। संस्कृत बहुल भाषाक उपेक्षा कय ओ सर्व-साधारणक बुझबाक योग्य भाषा मे अपन समग्र ग्रन्थक रचना कैलन्हि। ताहि दृष्टियें हर्षनाथ झाक संग तुलना कैने हुनक महत्त्व परिलक्षित हैत। दुनू कवि समसामयिक रहितहुँ रचना-शैली मे शताब्दीक अन्तर रखैत छथि। हर्षनाथ झा अपन समस्त साहित्यक रचना संस्कृत साहित्य सरणिक अनुसरण कय कैलन्हि। पण्डित वर्ग एवं रसिक समुदाय द्वारा समादृत होइतहुँ हिनक रचना लोक साहित्य सँ दूर पड़ि गेल छल। विषयोक दृष्टि सँ ओ प्राचीन कविलोकनिक छाया लऽ कऽ लिखलन्हि। अतः देखब जे भाषा सौष्ठव, अलंकार बहुलता, प्रौढ़कल्पना आदि सद्काव्यक गुण सँ अपन काव्य कैं अलंकृत करितहुँ हर्षनाथ १९म शताब्दीक अपरान्ह मे भोरक तरेगन जेकाँ 'गगन पयोनिधि पार' अस्तंगत भऽ जाइत छथि मुदा चन्दा झा प्रभातकालीन सूर्य जेकाँ साहित्य क्षितिज पर भासमान भय नव आलोक बिखेरि दैत छथिन्ह। वस्तुतः हर्षनाथ, विद्यापति-उमापति परम्पराक अन्तिम दीपशिखा छथि तथा चन्दा झा, मनबोध परम्पराक नव उत्तराधिकारी। तथापि मनबोध सँ हिनक भाषा मे वैषम्य देखब जे, मनबोध जतय प्रसिद्धो तत्सम शब्द कें तद्भव रूप दय अधिक स्थल पर कृत्रिमताक सृष्टि करैत छथि ओतय कवीश्वर तत्सम ओ तद्भवक अद्भुत समन्वय सँ ओहि मे नैसर्गिक लालित्य आनि देने छथि। कवीश्वरक काव्यक भाषा जन भाषा थीक। ग्रामीण

जीवन मे प्रचलित ओ व्यवहृत शब्द-समूह कें ग्रहण कय ओ अपन काव्य कें सहज बोधगम्य बनौलन्हि, वाग्धारा एवं लोकोक्तिक प्रयोग द्वारा जनजीवनक स्पन्दन भरि देलन्हि। लोकवाणीक प्रति एही अविरल अनुरागक परिणाम भेल जे ओ जनमानित भय एतेक यशस्वी भेलाह। हुनक कविता कें 'फकड़ा' कहि हुनक 'प्रतिद्वन्द्वी' कें तत्काल जे सन्तोष भेल होन्हि मुदा हुनका मे जे असामान्य कवि प्रतिभा, प्रखर पाण्डित्य ओ अविरल मातृभाषा प्रेम छल से निश्चय स्पृहनीय छल।



महाकवि लालदास

आधुनिक-मैथिली-साहित्य मे कविवर लालदास एक उत्कृष्ट एवं यशस्वी कविक रूप मे परिचित छथि। कवीश्वर चन्दा झा यदि आधुनिक मैथिली साहित्यक जन्मदाता छथि त कविवर लालदास कें ओकरा विविध प्रकारें श्री सम्पन्न बनेबाक श्रेय छन्हि। अपन साहित्यिक गाम्भीर्य, बहुमुखी प्रतिभा एवं मातृभाषाक प्रति एकान्त अभिरुचि सँ ओ मैथिली साहित्य कें गद्य ओ पद्य, मौलिक ओ अनूदित प्रत्येक क्षेत्र मे पूर्ण बनौलन्हि।

लालदासक जन्म १८५६ ई०क फालगुन कृष्ण तृतीयां कें कुलीन कर्ण कायस्थ कुल मे भेल छलन्हि। पाँच वर्षक अवस्था मे हिनक अक्षरारम्भ कराओल गेल छल। मैथिली एवं हिन्दीक संगहि फारसीक शिक्षा सेहो देल गेलन्हि। प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त कय ओ देववाणी संस्कृत दिश प्रवृत्त भेलाह। अपन सहजात प्रतिभाक फलस्वरूप ओ शीघ्रे एहि समस्त भाषा मे योग्यता प्राप्त कऽ लेलन्हि; तथापि संस्कृत साहित्यक अध्ययन-मनन मे कविवर अधिक समय लगबैत रहलाह। इयह कारण थीक जे कविवर कें संस्कृत मे सम्भाषण एवं श्लोक रचना करबाक पूर्ण दक्षता प्राप्त छलन्हि।

कविवरक पिता बड़ धार्मिक विचारक छलथिन्ह। हुनका ओतय बरोबरि साधु-सन्तक आबरजात बनले रहैत छलन्हि। एहि

प्राक्तन संसर्गिक फलस्वरूप बाल्यावस्थहि मे कविक हृदय मे तीव्र धार्मिक भावनाक बीज अंकुरित भेल जे उत्तरोत्तर पल्लवित ओ पुष्पित होइत गेल। परम सौभाग्यक विषय छल जे कविवर कें महाराज रमेश्वरसिंह सदृश सहृदय आश्रयदाता भेटलथिन्ह। हुनक संग रहि कविवर देशक विभिन्न तोर्थस्थानक पर्यंटन कैलन्हि। धार्मिक भावना कें तृप्त करबाक संगहि देशक नैसर्गिक सौन्दर्यक अवलोकन करबाक ई अपूर्व संयोग छल। मिथिलेशक दरबार मे रहि हिनका नैघ-नैघ विद्वान लोकनिक एवं काव्यशास्त्रक-पारंगत मनीषीगणक दुर्लभ सत्संग उपलब्ध छलन्हि। ई सभ वस्तु अवश्ये कवि कें प्रभावित कैलकन्हि तथा हिनका हृदय मे निहित भक्तिभावना काव्यसरिताक माध्यम सँ बहि चलल। हिनक कवित्व शक्ति जन्मजात छलन्हि जे हिनक विलक्षण प्रतिभा ओ प्रगाढ़ पाण्डित्य सँ सयुक्त भय विशेष समृद्ध भेल। हिनक विशाल साहित्य तकर उपयुक्त प्रमाण थीक।

कविवर लालदासक सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना अछि हुनक रामायण। चन्दा झा कृत "मिथिला भाषा रामायण'क अनन्तर तत्काले रामकथा पर रचित ई दोसर काव्यकृति प्राप्त होइछ, सेहो एक गोट विलक्षणता सँ समन्वित भऽ कऽ। अपन रामायणक नाम ई 'रमेश्वरचरित मिथिला रामायण, देलन्हि अछि। जेना कहल अछि, कविवर आजीवन महाराज रमेश्वर सिंहक आश्रित रहलाह। प्राक्तन संस्कारक प्रसाद सँ कविक हृदय मे जे श्रद्धाक

बीज छलन्हि ताहि कें महाराजक स्नेह ओ कृपा सं निश्चय अंकुरित ओ पल्लवित हैबाक सुयोग भेटल। अपन रामायण कें रमेश्वर शब्द सँ युक्त करबाक पाछाँ अवश्ये अपन आश्रयदाताक प्रति भक्ति भावक प्रदर्शन छल हैतन्हि। परन्तु कवि बड़ कौशल सँ रमेश्वर शब्द में श्लेष आनि देलन्हि अछि। कवि रामक जाहि चरितक उल्लेख कैने छथि, तकरा महिमान्वित करबा मे सीता चरितक महत्वपूर्ण योगदान रहल। वस्तुतः राम स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम नहि भेलाह। लोकोत्तर महिमाक कारण अछि हुनक रमेश्वरत्व अर्थात लक्ष्मीक स्वामित्व। लक्ष्मी स्वरूपा सीता कें एहि काव्य मे, कविवर जे गरिमा प्रदान कैलन्हि तकर द्योतन रामायणक नामकरण सँ होइछ। प्रारम्भहि मे कविक उक्ति छन्हि—

सीता चरित ललित अनुमानि
रामकथा भल कहब बखानि।

एहि प्रकारें कवि शक्ति स्वरूपा सीता कें प्रधानता दय काव्य रचना कैलन्हि—

शक्तिमान जग शक्तिक योग।
शक्ति विमुख शव सन सभलोग।
मूल प्रकृति लक्ष्मी जनिक सीता रूप प्रधान।
तनिक नाम जपि पाब नर दुहु लोकक कल्याण।

पुनः किष्किन्धाकाण्डक आरम्भ मे सीताक वर्णन करैत कविक कथन अछि—

जे लक्ष्मी नित सुकृतिक धाम।
श्री रूपें कर सुख विश्राम॥
सज्जन जन मन श्रद्धा देह।
लज्जा रूप कुलीनक गेह॥
दुष्कृत जनक भवन पुनि वास।
दारिद्रया रूपा सुखनाश॥
सयह थिकथि सीता अवतार

कविक विश्वास छन्हि जे विश्व शक्तिमय अछि तथा सम्पूर्ण सृष्टिमण्डलमे शक्तियेक प्रधानता तथा व्यापकता अछि। एहि लेल कविवर शक्तिक प्रार्थना सँ ग्रन्थक आरम्भ कैलन्हि तथा शक्ति चरित्रमय पुष्करकाण्ड लिखि ओकर अन्त कैलन्हि। एहि प्रकारक शक्ति प्रधान रामवतार कीर्त्तन अभिनव वस्तु थीक। कविवर शाक्त छलाह अतः महालक्ष्मी स्वरूपा जगदम्बाक गुणकीर्त्तनक उद्देश्य सँ लक्ष्मीपति रमेश्वर, रामचन्द्रक चरित चर्चा अपन ग्रन्थमे कैलन्हि। तथापि सीताक चरितकेँ प्रधानता दय रामकथाक प्रणयन कोनो नव-कल्पना नहि प्रत्युत मिथिलाक सांस्कृतिक गरिमाक यश कीर्त्तन थीक।

'रमेश्वर चरित मिथिला रामायण' कविक विशिष्ट कृति थिकन्हि जाहि मे हुनक शक्ति भावनाक संगहि काव्यकुशलता ओ पाण्डित्य-प्रकर्षक समन्वित रूप प्राप्त होइछ। ई पुस्तक बाल्मीकि रामायणक अनुसार लिखल गेल अछि। कविक उक्ति अछि—

आदि कवीन्द्रक सुधा समुद्र
कथा हमर कृत सरिता क्षुद्र
तेहि समुद्र सँ भरि भरि नीर
पूरित करब सरित गम्भीर।

मुदा आदिकविक स्रोत सँ जे घटनाक संकलन भेल अछि ताहिमे न्यूनाधिक्य पर्याप्त मात्रामे भेटत। कवि पुराण ओ तंत्र सँ सेहो प्रभावित भेल छथि। कविक कथन अछि—

आदि कविक आशय कतोक, आशय विविध पुराण।
कतहु तंत्रमत सँ करत, लाल राम गुण गान।

वस्तुतः शक्तिक चरित्र वर्णन मे अनेक रूपक कथा अनेक ठाम सँ लेल गेल अछि जकर चयन मे कविक स्वतंत्र दृष्टि परिलक्षित हैत। अनेक स्थल पर त घटनाक्रम कें नव रूप दय कवि अपन मौलिकताक परिचय देने छथि।

लालदास भक्त छलाह एवं अपन भक्तिक उन्मेषक अनुरूप रामकथाक अवतारणा कैलन्हि। मुदा रामक चरित मे जे सहज काव्यत्व अछि से एहि काव्यमे सर्वत्र परिलक्षित हैत। वस्तुतः लालदासक सहजात कवित्व हुनक कृतिकें रोचकता सँ संयुक्त कैलक अछि। समस्त काव्यक विधान वर्णनात्मक शैली मे भेल अछि। एहि दृष्टि सँ किष्किन्धा काण्डक ऋतुवर्णन बड़ मनोहारी अछि। आनो स्थल पर हुनक वर्णन कौशलक उत्कृष्टताक परिचय भेटैत उदाहरणार्थ, पंचवटीक रम्य वातावरणमे रामक रूप पर आसक्त सूर्पनखा द्वारा गान्धर्व विवाहक प्रस्ताव द्रष्टव्य अछि—

सूर्पनखा मन अति उल्लास। कहल राम कौं वचन प्रकाश॥
अविवाहित तैं मानल खेद। कए मन थीर कहै छी भेद॥
प्रकट विवाह बुझब अधलाह। भेल मनहि मन दुहुक विवाह॥
नयन-नयन जेहिखन मिलि गेल। रीति विवाहहु सौं बड़ भेल॥
की विवाह जौं प्रीति न रहय। प्रीति प्रबल परिणय सौं कहय॥
हम कन्या हमही सरियात। अपने वर छी व-हि बरियात॥
कति आभरणें अंग बिराज। किङ्किणि कङ्कण बाजन बाज॥
नक बेसरि नर्तक बुझि लेब। नूपुर गायक बड़ सुख देब॥
नयन अधर कर जँघा चरण। करता सौजन भोजन भरण॥
से सब थिकथि कुटुम्ब विशेष। सुख सन्मान करक थींक बेश॥
एहि प्रकार पच्छन्न बिहार। करब अहाँ हम विविध प्रकार॥

सूर्पनखाक एहि आतुरतामे जे हास्य-धारा अन्तर्निहित अछि ओ सहजहि आस्वादनक वस्तु थीक।

भक्ति रसक प्रधानता रहितहु लालदासक रामायणमे सभ रसक परिपाक भेल अछि। मैथिल रमणीक शोभा वर्णन, सीताक वयः सन्धिक वर्णन, अहल्याचरित, सीतारामक प्रथम परस्पर अवलोकन आदि अनेक स्थल अछि जतय संस्कृत काव्य सरणिक अनुसरण कय कवि रसक धारा बहा देने छथि। से जेना प्रस्तुत रामायण भक्ति-भाव सँ ओतप्रोत अछि तहिना शृंगार प्रधान काव्यक चमत्कारिता सं सेहो परिपूरित अछि।

लालदासक कृति केवल रामायणहिटा नहि अछि। रामायणक अतिरिक्त ओ साङ्ग सप्तशती दुर्गाक टीका, चण्डी चरित्र, स्त्री धर्म

शिक्षा, सत्यनारायणकथाक टीका, गणेश खण्ड, महेश्वर विनोद, हरितालीव्रत कथा, वैधव्य भजनी, सावित्री-सत्यवान नाटक आदि अठारह गोट ग्रन्थ रत्नक निर्माण कैलन्हि। एहि तरहें परिमाणहुक दृष्टि सँ ओ साहित्यक क्षेत्र मे महत्त्वपूर्ण कार्य्य कैलन्हि।

लालदासक कृति सभक अनुशीलन कैने देखब जे ओहि सभक आधार पौराणिक छैक। एहि पौराणिक पुनरावर्त्तनक पाछाँ मानवीय आदर्श उपस्थित करबाक भावना काज कऽ रहल छल। कोनो कवि युगक प्रति निरपेक्ष नहि रहि सकैछ; से लालदासक ई सभटा रचना जेना युगक प्रति हुनक सहज प्रतिक्रिया सँ अनुप्रेरित छल। पाश्चात्य प्रभाव सँ मोहान्ध एवं पथभ्रान्त होइत युवक समाज कें अपन समुज्ज्वल अतीत सँ परिचय करायब, ओकरा हृदयमे प्राचीन संस्कृतिक प्रति निष्ठा ओ इतिहासक प्रति आस्था उत्पन्न करब परमावश्यक छल। ई साहित्ये द्वारा सम्भव होइछ। कवि लालदास एहि सामाजिक दायित्व कें बुझि, व्यापक राष्ट्रीय हितक लेल रचना कैलन्हि। फेर ओ अपन साहित्यमे पौराणिक आख्यान कें ग्रहण कय, सांस्कृतिक गौरव-निधि सँ पदार्थ पाठ प्रदान कैलन्हि। चण्डी चरित हो अथवा साङ्ग दुर्गा; वैधव्य भजनी हो अथवा सावित्री-सत्यवान नाटक, सर्वत्र पुनीत इतिहासक पृष्ठ उद्भासित भऽ उठल अछि।

कविवर लालदासक भक्ति भावनाक एक गोट रूप मातृभाषाक प्रति हुनक श्रद्धाभाव छल। अपन रामायण कें सीता प्रधान बनेबाक पाछाँ जे भावना काज कऽ रहल छल सैह भावना ओकरा लेल मैथिली कें ग्रहण करबामे छल। वस्तुतः हुनक मातृभाषा प्रेम हुनक

भक्ति भावनेक दोसर रूप थीक। मैथिलीक लेल अपन अनुराग प्रकट करैत कवि रामायणमे लिखलन्हि--

निज भाषा जननी निज देश
स्वर्गो सँ जानथि जन वेश
तेँ हम कथा कहब तेहि रीति
नहि विद्या कविता-गुण-गीति
मिथिला भाषा मधु-माधुर्य्य
शेष शारदा कह प्राचुर्य्य
देश विदेशक कयल विचार
लक्ष्मी जतय लेल अवतार
नाम जानकी पड़ल जनीकि
बजली मिथिला भाषा नीकि
कोमलवाणी अमृत समान
तकर भावरस केओ जान
पुण्यदेश मे भाषा नीकि
मिथिला सभक शिरोमणि थीकि
तेहि भाषा मे करब सुवन्ध
सीतारामक चरित प्रबन्ध।

से कविवर रामायणेटा नहि अपितु कतिपय अन्य ग्रन्थक रचना कय मातृभाषा भक्तिक परिचय देलन्हि। रामायणक संग कतिपय पौराणिक कृतिक अनुवाद द्वारा अथवा ओकरा नव रूपें लिखि हुनका आत्म परितोष त भेले हैतन्हि परन्तु एहि धार्मिक कृति सभ कें

मातृभाषाक माध्यम सँ सर्वसाधारणक लेल सुलभ बना कय कम सन्तोष नहि भेल हैतन्हि।

अपन जन्मभूमिक प्रति कोन तरहें गौरवक भावना कविक हृदय मे व्याप्त छल तकर परिचय त एतबहि सँ भेटत जे हुनकर साहित्यिक रचनाक श्री गणेश 'मिथिला माहात्म्य' नामक पुस्तकक रचना स होइत अछि। कविवर कें जतय कतहुँ मिथिलाक महिमा गानक अवसर भेटलन्हि ओ ओकर समुचित उपयोग कैलन्हि। एहन अवसर पर हुनक मातृभाषा प्रेम पर सेहो पूर्ण प्रकाश पड़ैत अछि। तत्कालीन मैथिली साहित्यक इतिहासक कें देखला उत्तर ई ज्ञात होयत जे ओ भाषाक लेल केहेन संकट काल छल। मैथिली खाली अपन प्राण शक्तिक बल पर जीवित छल। सौभाग्यवश ओकरा चन्दा झा सदृश नवजीवन दाता भेटलथिन्ह। हिनका हाथे मैथिली आभिजात्य रूप प्राप्त कैलक। तथापि मैथिली विद्वेषीक एक गोट एहन दल छल जे एहि भाषाक अस्तित्व कें हिन्दीक विकास मार्ग मे बाधक बुझि सतत् एकर विरोध कऽ रहल छल। एहि विषम परिस्थिति मे लालदास मातृभाषाक सजग प्रहरी छलाह। अपन मैथिली रचना द्वारा मातृभाषाक साहित्य कें श्रीसम्पन्न बनेबाक संगहि ओ मिथिला माहात्म्यक रचना कय मैथिली विरोधी कें ई बुझा देलन्हि जे मैथिली जाहि भूभागक मातृभाषाक थीक तकर इतिहास अत्यन्त गौरव पूर्ण छैक, ओकर अपन समृद्ध परम्परा छैक तथा अपन भाषा एवं संस्कृति छैक। मिथिला माहात्म्य कें खड़ीबोली मे लिखबाक पाछाँ प्रायः कविक

इयह दृष्टिकोण छलन्हि जे मैथिली विद्वेषी लोकनि धरि हुनक बात पहुँचि सकलन्हि।

कविवर लालदासक साहित्य-साधना पद्ये धरि सीमित नहि छल। हुनक स्त्रीधर्मशिक्षा, चण्डी चरित ओ साङ्ग सप्तशती दुर्गाक टीकाक रचना गद्यक माध्ममे भेल अछि। ई गद्य रचना सभ एहि विषयक प्रमाण थीक जे कविवर कें युगक अभिमतक कतेक ज्ञान छलन्हि। मैथिलीमे आधुनिक गद्यक सूत्रपात चन्दा झा सँ भेल। परन्तु पुरुष-परीक्षाक अनुवाद सँ जाहि गद्य धाराक प्रवर्त्तन भेल ताहिमे गति संचार करबाक श्रेय प्रस्तुत कवि कें छन्हि। हिनक गद्य रचनामे अनूदित गद्यक शिथिलता जाइत रहल ओ जाहि रूपक दर्शन भेल तकरा निश्चय गद्यक व्यावहारिक रूप कहबैक। एही तरहक गद्यक प्रयोजनो छलैक। एहि ठाम हुनक गद्यक एकटा उद्धरण द्रष्टव्य अछि—

"शकुन्तला स्वामीक विरह सौं व्याकुल भेलि, एकान्त कुटीमे बैसलि हुनके ध्यानमे एकाग्र भेलि निमग्न छलीह। प्रियंवदा ओ अनसूया ताही ठाम बाहरमे फूल लोढ़ै छलीह। दैवयोगें ताहीकाल क्रोधावतार महर्षि दुर्वाशा ताहि आश्रममे समुपस्थित भै गेलाह। किन्तु शकुन्तला स्वामीक ध्यानमे निमग्ना छलीह। महर्षिक आगमन नहि बूझि अतिथि सत्कार नहि कय सकलीह। दुर्वाशा अपन अनादर बूझि बड़े क्रुद्ध भै श्राप दैत भेलथिन्ह।"

चन्दा झाक पुरुष-परीक्षाक गद्यक संग तुलना कैने हमरा लोकनि लालदासक गद्यक क्षमता ओ शक्तिक उचित विवेचना कय सकबन्हि। वस्तुतः लालदासक गद्य सं मैथिली गद्यक जातीय शैलीक सूत्रपात

होइत अछि। हिनक गद्यक परिष्कृत रूपक उदाहरणक लेल हिनक सावित्री-सत्यवान नाटकक अवलोकन कयल जा सकैछ।

कविवर लालदासक रचना मे भाषाक सरलता सर्वत्र दृष्टिगत हैत। भाषाकेँ सर्वसाधारणक लेल बोधगम्य बनेबाक हेतु ई आवश्यको छल। उदाहरणक लेल हुनक हरिताली व्रत कथा सँ निम्न पंक्ति देखल जा सकैछ—

चलला हरषित नारद मूनि
हरिकेँ कहल जाय हित गूनि
भेल सिद्ध प्रभु अपनेक काज
कन्या अपन देता गिरिराज
युक्ति कयल हम घटकइ जाय
मानल हमर वचन गिरिराय
अपने कय लेल जाय विवाह
एहिमे कयो नहि कहत अधलाह।

जाहि तरहक पौराणिक रचना ई कैलन्हि तथा जाहि समाजक लेल लिखलन्हि ताहि लेल एहि तरहक सरल भाषा आवश्यक छल।

मैथिलीक ई भक्त कवि १९२१ ई० मे अग्रहण कृष्ण तृतीया रविकेँ ६५ वर्षक वयशमे अपन जीवन लीला समाप्त कैलन्हि। ओ अपन सम्पूर्ण जीवन मैथिलीक सेवामे उत्सर्ग क' गेल छथि। गद्य-पद्य काव्य-नाटक आदिक रूपमे अनेकानेक भाव पुष्प द्वारा ओ जे मातृभाषाक अर्चना कऽ गेल छथि से निश्चय हिनक यशःशरीरमे जरा-मरणक भय नहि आबय देत।

—:❀:—